अखिल भारतीय
मैथिल महासभाक
संक्षिप्त इतिहास

श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

प्रकाशक
अखिल भारतीय मैथिल महासभा
दरभंगा

अखिल भारतीय
मैथिल महासभाक
संक्षिप्त इतिहास

लेखक
श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

प्रकाशक
अखिल भारतीय मैथिल महासभा
दरभंगा

प्रथम संस्करण १९९९ ई.

प्राप्ति स्थान :

मैथिल महासभा भवन

बलभद्रपुर, लहेरियासराय,

दरभंगा

सहयोग राशि—पाँच टाका मात्र

मुद्रक :— ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय प्रेस, दरभंगा।

अखिल भारतीय मैथिल महासभाक

सभापति ओ महासचिव

सभापति

महाराजाधिराज रमेश्वरसिंह
महाराजाधिराज कामेश्वरसिंह
राजकुमार जीवेश्वरसिंह
राजकुमार शुभेश्वरसिंह
श्रीभक्तिनाथसिंह ठाकुर

महासचिव

पण्डित कपिलेश्वर मिश्र
पण्डित गंगाधर मिश्र
पण्डित शिवशंकर झा
प्रो० श्रीपुरुषोत्तम झा
पण्डित श्रीचतुरानन मिश्र

विषयानुक्रम



प्राक्कथन

कोनो जातीय संगठनक इतिहास प्रस्तुत करबाक सम्भवतः ई पहिल छोट-छीन प्रयास थिक। इतिहास, सुदीर्घ जीवनक उत्थान-पतनक साक्षी वा वक्ता होइछ। लगभग नब्बे वर्षक अपन दीर्घायुमे कतेको उत्कर्ष-अपकर्षकेँ देखैत एहि संगठन– मैथिल महासभाकेँ मारक-हिचकी त' कैक बेर उठलैक अछि मुदा दम नहि तोड़लक। एहि बीच कतेक संघ, महासंघ, सभा, आएल-गेल, उगल-डूबल, मुदा ई एखनहुँ जेना-तेना जीवित अछि। आरंभहिसँ मिथिलेशक संरक्षणमे महासभाक गति कखनहुँ द्रुत तँ कखनहुँ शिथिल रहल, किन्तु १९६२मे महाराज कामेश्वरसिंहक देहावसानक पश्चात् ई निराश्रय भए गेल। दू-अढ़ाइ वर्ष धरि राजकुमार जीवेश्वरसिंह सभापति रहलाह, किन्तु मिथिलेशकालीन रौनक कहाँ? राजपण्डित बलदेवमिश्रक सहानुभूतिक अछैतो महामन्त्री रायबहादुर शिवशंकरझा सेहो निष्प्रभ बनल रहलाह।

१९६५मे महासभाक सभापति राजकुमार शुभेश्वरसिंह भेलाह।

महासभा जातीय सभा रहल अवश्य, किन्तु एकर दृष्टि सदैव व्यापक रहलैक। एक दिस-जाति ओ समाजमे पसरल अशिक्षा, गरीबी, वैवाहिक कुरीति आदि पर सभा प्रहार कयलक तेँ दोसर दिस साहित्य-संगीत-एक शब्दमे संस्कृतिक अभ्युत्थान दिस सेहो अग्रसर भेल। महासभाकेँ एकर गर्व छैक जे मैथिली-साहित्यक अग्रणी संस्था 'अ. भा. मैथिली साहित्य परिषद्' महासभेक अंगरूपमे जन्म लए पुष्पित-पल्लवित भेल आ' कालान्तरमे पंजीकृत स्वतंत्र संस्था बनि गेल।

मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटैक ताहि लेल गोष्ठी, सभा, प्रदर्शन तँ बहुत भेल, मुदा पुस्तकाकार सबविधि-विवेचन कतहुसँ नहि भेल। ताहि अभावक पूर्त्ति डा. श्रीजयधारीसिंह लिखित 'संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक स्थान किएक?' पोथीकेँ महासभा छपओलक जे एखनो धरि एसकरे अछि। अहिना, मैथिलीकेँ द्वितीय राजभाषाक दर्जा दिअएबाक हेतु कार्यकारिणी समितिमे प्रस्ताव पारित कए महासभा यथाशक्ति प्रयत्नशील रहल, परंच, दुःखक विषय ई जे राजतंत्रक उदासीनतासँ सफलता हाथ नहि लागल।

महासभाक अंगरूपे विद्वत् सम्मेलन, कवि-सम्मेलन, गायक-सम्मेलन आदि वृहत् रूपमे होइत छल। एखनहुँ विद्वत्सम्मेलनक एक अंग पण्डितसभा-मिथिलामे प्रचलित पञ्चाङ्ग सभमे विसंगति दूर कए पर्व तथा शुद्धाशुद्ध समयक निरूपण कतेको वर्षसँ कए रहल अछि। पंडित-सभामे पूर्णियासँ पटना धरिक विद्वान्‌के आमंत्रित कएल जाइत छैन्हि।

गायक-सम्मेलनमे शास्त्रीय ओ मैथिल परम्पराक गायकीक उत्कृष्टता रहैत छल, जाहिमे कतोक गायक पुरस्कृत होइत छलाह आ' अति विशिष्ट गायक 'गायक-चूड़ामणि' उपाधिसँ विभूषित भेल छथि।

कवि-सम्मेलन मध्य समस्यापूर्तिसँ काव्य-पाठ हएवे करैक, संगहि यशस्वी कविके 'कवि-चूड़ामणि'क उपाधिसँ अलंकृत कएल जाइन्ह।

सांस्कृतिक परिवेशक पोषण करैत महासभा अपन मूल उद्देश्यके नहि बिसरल। हरिसिंहदेवी व्यवस्थाके अक्षुण्ण रखैत आधुनिक शिक्षाक प्रसारक हेतु स्कूल, कालेजक स्थापना- संवर्धनाक परिकल्पना चलिते रहल। निर्धन विद्यार्थीसभके आर्थिक सहायता सेहो देल जाइन्हि, जाहिसँ व्यावसायिक ओ इतर शिक्षा पाबि बहुतो छात्र लाभान्वित भेलाह ओ उच्चपदस्थ रहि समाजक शोभा बढ़ौलैन्हि। मुदा एहिठाम ई कहब अप्रासंगिक नहि होएत जे-जे सहायता राशि छात्रलोकनिके भेटलैन्हि तकर जीवनमे सफलता प्राप्त भेला पर आपस करबाक सेहो निदेश रहैन्हि, से भरिसक बहुतो गोटे आपस नहि कएलैन्हि। वर्त्तमान सभापतिक कार्यकालमे सेहो छात्रसभके ई सहायता देल गेलैन्हि जे छिटफुटरूपे एक-दू वर्ष पहिने धरि जारी रहल।

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद राज्य पुनर्गठन आयोग (States Reorganisation Commission) भाषा एवं संस्कृतिक आधार पर जखन राज्य सबहिक पुनर्गठनक प्रक्रिया प्रारम्भ कएलक तँ राजनीतिसँ असम्पृक्त रहितहुँ मैथिल महासभा भाषा-संस्कृतिक आधार पर मिथिलाक विशेष स्थान देखैत आयोगक समक्ष पृथक् मिथिला राज्यक स्थापना हेतु प्रमाण पुरस्सर ज्ञापन देलक जे समुचित राजनीतिक समर्थन ओ इच्छाशक्तिक अभावमे क्रियान्वित नहि भऽ सकल।

अपन भूमि ओ कार्यालयीय भवनमे स्थित मालदहसँ गुजरात ओ अजमेरके जोड़ैत महासभा अपन जातीय हितके आगाँ बढ़एबामे प्रयत्न-शील रहैत मिथिलाक सर्वाङ्गीण विकास आ ओकर सांस्कृतिक धरोहरके

सुरक्षित रखैत व्यापक जन-चेतनाकेँ जागृत करबाक-रखबाक दायित्वक निर्वाह कएलक। सम्यक् दृष्टि रखने जातीय चेतनाकेँ महाजातिक चेतनामे परिणत होएबामे कतेक समय लगैत छैक ? एही दृष्टिसँ मैथिल महासभा अपन अखिल भारतीय स्वरूप, विचारक स्वच्छता, विवादसँ दूर रखबाक क्षमता, समाजक विविध अंग-संग मैत्री ओ सद्-भावक स्थापनाक सन्देश लए अपन परिचयात्मक कथा-इतिहास उज्ज्वल भविष्यक आशामे प्रस्तुत कए रहल अछि।

एकर लेखक मैथिली साहित्यक ख्यातनामा कवि ओ लेखक प. श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क हम आभारी छिऐन्हि, जे सम्बन्धित अभिलेख अनुपलब्ध रहितो हमर आग्रह ओ सदिच्छाकेँ आकार दय कृतार्थ कएलैन्हि। इत्यलम्।

गंगादशहरा
दिनांक २३.६.९९ ई.

श्रीपुरुषोत्तमझा
महामंत्री
अ० भा० मैथिल महासभा

अ० भा० मैथिल महासभाक संक्षिप्त इतिहास

—श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

लेखकीय

विगत किछु वर्षसँ आदरणीय श्री पुरुषोत्तमझाजी हमरा मैथिल महासभाक संक्षिप्त इतिहास लिखि देबाक आग्रह करैत रहलाह। एहि हेतु हुनका हम किएक उपयुक्त व्यक्ति बुझना गेलिऐनि से ओ जानथि, किन्तु हम एहि हेतु अपनाकेँ सर्वथा अनुपयुक्त मानैत छी।

ताहि समय हम 'सुमन साहित्य सौरभ' (आचार्य श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन' अभिनन्दन ग्रन्थ)क सम्पादनमे व्यस्त छलहुँ। ओ सम्पन्न भेल तँ पुनः स्मरण करौलनि। ताहू समय साहित्य अकादेमीक अनुबन्ध पर 'परशुरामक बीछल-बेरायल कथा'क अनुवादमे बाझल रही। ओहो सम्पन्न भेल तँ एहि वार्द्धक्योमे श्री पुरुषोत्तम बाबू एक दिन हमर आवासपर पहुँचि गेलाह। तखन हुनक आग्रहकेँ टारब अशिष्टता प्रतीत भेल। महासभा सम्बन्धी कागत-पत्रक पुछारि कयलापर कहलनि—'राय बहादुर शिवशंकर झा मात्र एकटा स्लिप पर लिखि चार्ज देने छलाह, तथापि तकबैक। तकला पर भेटलनि महासभाक एक प्रति जर्जर संविधान, सेहो पहिल नहि, १९३१मे एक उपसमिति द्वारा संशोधित, जाहिसँ एकर उद्देश्य मात्र बूझल जा सकैछ। एतेक पुरान संस्था जकर विविध क्रिया-कलाप आ इतिहास लिखबाक कोनो आधार नहि।

इतिहास कथा, उपन्यास वा नाटक तँ थीक नहि जे कल्पनाक पाँखिपर उड़ैत लिखि लेल जाय। एहि हेतु तँ संस्थाक समस्त क्रिया-कलापक तथ्यात्मक विवरण चाही जाहिसँ उद्देश्यक पूर्त्तिमे संस्था कहिया की कयलक, कोन क्षेत्रमे कतेक सफलता वा विफलता भेटलैक, कोन-कोन साधक-तत्त्व अग्रसर करबामे सहायक तथा कोन-कोन तत्त्व बाधक भेलैक, से सब विवरण अपेक्षित होइत छैक। ई निश्चित जे

आदिसँ अन्त धरि यदि 'मिथिला मिहिर'क अंक उपलब्ध हो तँ १९५४ ई० धरिक इतिहास ओहिमे सुरक्षित भेटि सकैछ। परन्तु सेहो कोनो संस्था वा व्यक्ति लग दुर्लभ। तखन प्रयास कयला पर विभिन्न पत्र-पत्रिकामे यथोपलब्ध तथ्यकेँ एकत्र करबाक श्रम अवश्य कयलहुँ अछि। तेँ एकरा इतिहास नहि केवल इतिहासक एक 'खाका' मात्र बूझल जाय। एहि आधार पर यदि क्यो अनुसन्धित्सु सचेष्ट होथि तँ सम्पूर्ण इतिहासो लिखा जाय से सम्भव।

एतय जे किछु लिपिवद्ध कयल गेल अछि से निराधार नहि। पत्रकारितोक इतिहासमे हम लिखने छी नामूलं लिख्यते किंचित्। उद्धरण सब जे देल गेल अछि ताहिमे विन्दु-विसर्ग, अल्प विराम पर्यन्त यथावत् उद्धृत कयल गेल अछि। तेँ एकर प्रकाशनमे एहि पर विशेष ध्यान राखल जाय से अनुरोध।

एतय हम स्पष्ट कय देबऽ चाहैत छी जे इतिहासमे सत्यक अपलाप नहि होयबाक चाही तेँ कोनो अप्रिय वा कटुसत्य उद्धृत भेल हो तँ ताहिसँ क्यो क्षुब्ध वा क्रुद्ध नहि होथि से विनम्र निवेदन। सामग्री संकलनमे सहयोगक हेतु डा० श्रीरामदेवझा तथा दौहित्र श्री शंकरदेव झाकेँ हृदयसँ आशीर्वाद दैत विराम लैत छी।

पृष्ठ भूमि

कोनो संस्थाक संघटन किछु विशेष उद्देश्यकें दृष्टिमे राखि प्रयोजनीय बूझल जाइत छैक। मैथिल महासभाक स्थापना सन् १३१७ साल अर्थात् १९१० खीष्टाब्दमे कयल गेल छलैक। ताहिसँ पूर्व देशक स्थितिपर विहंगम दृष्टि देलासँ प्रतीत होइछ जे १८५७ ई० मे बृटिश शासनक विरुद्ध भारतीय सेनामे भयंकर असन्तोष व्याप्त भऽ गेल छलैक जाहि कारणें सेना विद्रोह कऽ देलकैक। बृटिश शासक तकरा सिपाही विद्रोहक संज्ञा देलक, किन्तु आधुनिक भारतीय इतिहासकार ओकरा भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलनक सूत्रपात कहैत छथि।

ताहि समयमे दरभंगाक राजगद्दीपर महाराज महेश्वर सिंह विद्यमान रहथि। विद्रोहीक प्रति सहानुभूति रखलाक कारणे अंग्रेज शासक हुनका सन्देहक दृष्टिसँ देखैत छलनि। दुर्योगवश १९६० ई०में हुनक आकस्मिक देहावसान भऽ गेलनि। राज्यक उत्तराधिकारी महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह मात्र दू वर्षक छलाह तथा हुनक अनुज ओ मैथिल महासभाक संस्थापक महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह किछु मासक रहथि। बृटिश शासककें उपयुक्त अवसर हाथ लागि गेलैक, अवयस्क उत्तराधिकारीक लाथ लगा दरभंगा 'राज कोट ऑफ वाड्'स'क अधीन कऽ लेल गेल। एहि दूनू राजकुमारक शिक्षा अंग्रेजे अभिभावकक देखरेखमे सम्पन्न भेलनि।

ध्यातव्य जे मिथिलामे, विशेषतः ब्राह्मण समाजमे, आचारभ्रष्ट होयबाक भयसँ पाश्चात्य शिक्षा अग्राह्य मानल जाइत छलैक, तथापि अंग्रेज शासक एहि दूनू राजकुमारकें अंग्रेजी शासनक अनुकूल संस्कारित करबाक उद्देश्यसँ पाश्चात्ये शिक्षा देलकनि। तें ब्राह्मण-समाजमे सर्वप्रथम यैह दूनू भाय अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण कयलनि। १८७८ ई०मे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह जखन बीस वर्षक भऽ गेलाह तँ राज्यसिंहासनासीन कयल गेलाह तथा दू वर्ष धरि राज-काज संचालनमे पटुता प्राप्त करबाक हेतु अंग्रेजे पदाधिकारी द्वारा प्रशिक्षित कयल गेलाह।

तथापि महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह भीतरसँ राष्ट्रवादी विचारधाराक प्रबल पोषक ओ बाहरसँ मुगलकालीन ठाठ-बाटक अनुयायी भेलाह। ओ राष्ट्रिय कांग्रेसक कतेक प्रच्छन्न सहायता करैत रहलथिन से आब हुनक जीवनवृत्तान्त प्रकाशित भऽ गेलाक बाद गुप्त नहि रहि गेल अछि।

एमहर सम्पूर्ण भारतवर्षमे अंग्रेजी शासनक विरुद्ध असन्तोषक आगि वोरसिक आगिजकाँ तरेतर सुनगि रहल छल। कहल जाइछ जे ओही आगिकेँ शमित करबाक उद्देश्यसँ अंग्रेजे द्वारा १८८५ ई० मे एहि राष्ट्रिय कांग्रेसक स्थापना कराओल गेल छल। परन्तु ब्रिटिश शासककेँ झोराझपटा समेटि भारतसँ चल जयबामे यैह कांग्रेस मुख्य कारक तत्त्व सिद्ध भेल। ई भिन्न बात जे एहि हेतु अन्यान्यो संगठन, विशेषतः क्रान्तिकारी लोकनिक आत्म-बलिदान परम सहायक भेल छल। एमहर सम्पूर्ण समाजमे एक प्रकारक चेतना जागि रहल छल तथा समाज ओहि नवीन चेतनाकेँ जनजन धरि पहुँचयबाक हेतु जातीय संगठनमे लागि गेल छल। राजपूत सभा, गोपसभा, वैश्य महासभा आदि-आदि स्थापित भऽ रहल छल जाहि माध्यमसँ जागरूक जाति अपन-अपन समाजमे प्रवेश कयने अन्धविश्वास, रूढ़ विचार आदि दुर्गुणक निवारण तथा आधुनिक दृष्टिकोणक प्रचार ओ प्रसार करबाक प्रयासमे लागि चुकल छल।

१८९८ई० मे महाराज लक्ष्मीश्वरसिंहक आकस्मिक देहान्त भऽगेलनि। ओ निःसन्तान छलाह तेँ महाराजाधिराज रमेश्वरसिंह दरभंगाक उत्तराधिकारी भेलाह आ राजसिंहासन पर अभिषिक्त कयल गेलाह। यद्यपि अंगरेज अभिभावकक संरक्षणमे आधुनिक शिक्षा सम्पन्न रहलाक कारणेँ हिनक दृष्टिकोण तथा विचार सेहो आधुनिक छलनिहे तथापि अंग्रेजी साम्राज्यक प्रति हिनकामे किछु दुर्बलता सेहो छलनि। तकर एक विशेष कारण ई छलैक जे वयस्क भेलापर महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह राज्यभार अपना हाथमे लेलनि तँ केवल १८ वर्षक अवस्थामे रमेश्वर सिंह अंग्रेज प्रशासक द्वारा असिस्टेंट मजिस्ट्रेट नियुक्त कयल गेल छलाह। १९२९ ई०मे हिनक देहावसान भेला पर बाबू भोलालाल दास अपना द्वारा सम्पादित 'मिथिला' नामक मासिक पत्रिकाक तेसर अंकमे लिखने छथि—"हिन्दुस्तानी आदमीमे ई सर्वप्रथम सरकार द्वारा एहि प्रकारक पद पर नियुक्त भेल छलाह जाहि पदक निर्वाह अत्यन्त

योग्यतापूर्वक दरभंगा, छपरा तथा भागलपुरमे करैत रहलाह जकर फलस्वरूप १८८६ई० मे सरकार हुनका 'राजा बहादुर' उपाधिसँ विभूषित कैलथिन्ह।" एहि प्रकारेँ अंग्रेजी शासन द्वारा उपकृत रहलाक कारणेँ ओहि शासनक प्रति सद्‌भावना राखब ततेक अस्वाभाविको नहि मानल जा सकैछ। किन्तु आधुनिक दृष्टि रखितहु आचारमे पूर्ण ब्राह्मणत्वक पालनमे सदा तत्पर रहलाह तथा ब्राह्मणोमे श्रोत्रिय होयबाक गौरवकेँ कखनहु विस्मृत नहि होमय देलनि।

एहि प्रसंग खड़रख ग्राम निवासी तथा राज दरभंगाक एक पदाधिकारी प० फणिनाथ झाक मुहेँ सुनल एक कथा मन पड़ैत अछि। ओ कहने छलाह जे महाराजाधिराज कामेश्वरसिंह जखन युवराज भेलाह तँ पिता अनुशासनक क्रममे एक पत्र लिखलथिन जाहिमे लिखल छनि—'अहाँ एक राजकुमार थिकहुँ अवश्य, किन्तु सतत ई स्मरण रखबाक थिक जे पहिने अहाँ एक श्रोत्रिय ब्राह्मणक बेटा थिकहुँ तकर बाद राजकुमार।' फणिनाथ बाबूक कथनानुसार ओ पत्र हुनके लग सुरक्षित छलनि जे देखबाक उत्सुकता हमरो भेल आ आदरणीय श्रीसुमनजो अनुरोधो कयने छलथिन, परन्तु आइ-कालिह होइत से सुयोग नहि लागि सकल।

एहि प्रसंग सामवैदिक प० महेन्द्रनाथझाक मुहेँ कहल आ अपना कानेँ सुनल एक दोसरो कथा प्रसंगात् स्मरण भऽ गेल अछि।

महाराज कुमार कामेश्वरसिंह दूनू भाँइक उपनयन जखन भेलनि तँ सन्ध्यावन्दन सिखयबाक हेतु उक्त सामवैदिक गुरुजीकेँ प्रातः मध्याह्न ओ सायं सन्ध्यावन्दन करयबाक हेतु महाराजाधिराज नियुक्त कऽ देलथिन। सामवैदिक गुरुजी जेहने सामगानमे निष्णात छलाह तेहने क्रोधीमे दुर्वासावतार। एकदिन खेलयबामे मग्न रहलाक कारणेँ सायं सन्ध्या करबाक हेतु विलम्बसँ अयलथिन। सामवैदिकजी अबितहि कान ऐँठि लेलथिन। कान लाल भऽ गेलनि, आँखि नोरा गेलनि। सन्ध्यावन्दन कऽ सोझे दौड़ैत पिता लग जा कहलथिन— हम हिनकासँ सन्ध्यावन्दन नहि सीखब, हमर कान देखू, भक-भकाइत अछि। पिता कहलथिन— हमरालग ने राजकुमार छी! हुनका लग तँ अहाँ यदि रामभद्र छी तँ ओ वसिष्ठ। अहाँकेँ नहि बूझल अछि, अपना विद्यालयमे एक दाक्षिणात्य सामवैदिककेँ पर्याप्त वेतन दऽ राखि, हिनका छात्रवृत्ति

दऽ सामवेद पढ़बौलहुँ अहीं सभक हेतु। हिनका छोड़ि एखन कोनो दोसर सामवेदी नहि छथि।

ई उद्धृत करबाक तात्पर्य जे महाराजाधिराज रमेश्वरसिंहमे ब्राह्मणत्व ताहूमे श्रोत्रियत्वक रक्षा करबाक केहन दृढ़ता ओ तत्परता छलनि से एहिसँ बूझल जा सकैछ। ओ सनातन धर्मक कट्टर समर्थक तथा प्रबल संरक्षक रहथि। यैह कारण छल जे हुनका सनातनधर्म महामण्डलक सभापति पद पर आजीवन प्रतिष्ठापित राखल गेलनि।

जखन महामना मदनमोहन मालवीय काशीमे हिन्दू विश्वविद्यालयक स्थापनाक हेतु उद्यत भेलाह तँ सर्वप्रथम दरभंगा आबि हिनकासँ भेंट कयलथिन। ओना ई हाथक सक्कत लोक मानल जाइत छलाह, परन्तु ओहि कार्यमे स्वयं उदारतापूर्वक पाँच लाख टाका सर्वप्रथम दऽ हुनका संग सम्पूर्ण भारतक देशी नरेश सभक ओहिठाम चन्दा लै बिदा भेलाह, आ करोड़ो टाका एकत्र करबामे सफल भेलाह।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसरमे जे अपर विश्वनाथ मन्दिर निर्मित भेल अछि ताहिमे विश्वविद्यालयक हेतु चन्दा देनिहार लोकनिक नाम अंकित छनि। ताहिमे सर्बप्रथम अंकित हिनक नाम सैह एहि कथनक प्रमाण थिक। ध्यातव्य जे जखन हरिद्वारमे गंगाक धाराकेँ मोड़ि पंजाब दिस लऽ जयबाक योजना बनल तँ सर्वप्रथम यैह जन-आन्दोलनक नेतृत्व कऽ किछु अंश मुख्यधारामे प्रवाहित रखबाक हेतु अंग्रेजी शासनकेँ बाध्य कयने छलाह जाहि कारणेँ 'अपर भगीरथ' उपाधिसँ विभूषित कयल गेल छलनि। सनातनधर्म तथा हिन्दुत्वक प्रति एहन दृढ़ आस्था रखनिहार छलाह।

एमहर बीसम शताब्दीक आरम्भ होइत-होइत मिथिलामे विशेषत: ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ समाजमे सेहो पाश्चात्य शिक्षाक प्रति आकर्षण ओ प्रसार क्रमश: बढ़िए रहल छल, जाहि कारणेँ रहन-सहन खान-पान वेष-भुषा, आचार-विचार, प्रत्येक विषयमे शास्त्रीय मर्यादाक उल्लंघन परम्पराक अवहेलना तथा संस्कृतिक प्रति विकर्षण होयब आरम्भ भऽ चुकल छल। सामाजिक बन्धन शिथिल भेल जा रहल छल। जाति-पाँजिक मिथ्या अभिमान बढ़ल जा रहल छल। समाजमे राजनीतिक चेतना जागि रहल छल। शोषक ओ शोषित रूपमे समाज विभाजित भऽ रहल छल। तथाकथित प्रजा ओ राजाक बीच अविश्वास तथा

मनोमालिन्यकें अंकुरित कयल जा रहल छल। एमहर हरिसिंहदेवीय पंजीव्यवस्थाक अन्तर्गत रहनिहार तथा सीराभाठाकें बेसी महत्त्व देनिहार ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ लोकनिमे बाल-विवाह, वृद्ध विवाह, बहुविवाह, कन्या विक्रय, फाटर-प्रथा, भार-दोरमे अपव्यय, सोति, योग, पंजिबद्ध, जयवार आदि रूपमे ऊँच-नीचक भाव आदि वर्द्धिष्णुए भेल जा रहल छल, किन्तु जाहि सदाचारक पालनसँ लोक समाजमे श्रेष्ठ बूझल जाइत छल ताहिमे प्रमादे बढ़ि रहल छल। पाँजि-पाटिक मिथ्याभिमानमे डूबल समाज विद्या-व्यवसायसँ पराङमुखे भेल जा रहल छल। याता-यातक सुविधा क्रमशः बढ़िए रहल छलैक। १९०६ ई० धरि रेलगाड़ी सकरी बाटें निर्मली सुपौल दिस पहुँचि गेल छल, ताहि सबसँ जन-सम्पर्क सुलभ भऽ रहल छल।

एहने पृष्ठभूमिमे शिथिल होइत शास्त्रीय मर्यादा ओ सामाजिक बन्धनकें सुदृढ़ रखबाक तथा पारस्परिक विरोधभावकें शमित करबाक प्रयास आवश्यक बूझि एक सार्वजनिक मंच बनयबाक प्रेरणा भेल होइनि से सम्भव प्रतीत होइछ।

मैथिल महासभाक स्थापना

सम्पूर्ण देशमे समाजसुधारक जागल चेतना आ तकर कार्यान्वयन-हेतु जातीय सभा सभक संगठनसँ प्रभावित भऽ महाराजाधिराज रमेश्वरसिंह सन् १३१७ साल, तदनुसार १९१० ई० मे मैथिल कान्फरेन्स नामसँ एक जातीय महासभा स्थापित कयलनि जकर क्रिया-कलाप देखला उत्तर एकरा सांस्कृतिक संगठन कहल जाय तँ अनुपयुक्त नहि होयत। हँऽ भारतीय राजनीतिसँ असम्पृक्त रहितहु दरभंगा राज्यक आन्तरिक राजनीतिसँ अस्पृष्ट नहि छल से एकर गति-विधिसँ स्पष्ट आभासित होइत अछि।

महासभाक स्थापनाक समय जे एकर प्रथम संविधान बनल, तकर प्रति हमरा उपलब्ध नहि भेल। महाराजाधिराज रमेश्वरसिंहक देहान्तक बाद एकर सभापति महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह भेलाह आ तखन एकर संविधान (नियमावली)क संशोधन करब अपेक्षित मानल गेल, जे १९३१ ई० मे कयल गेल। एहि नियमावलीमे महासभाक उद्देश्य निम्नांकित रूपेँ निर्धारित अछि: १–राजभक्ति, २–सदाचार पालन, –३ विद्याप्रचार, ४–कृषि वाणिज्य उन्नति, ५–बृथा विरोध परिहार, ६–विवाहादि सामाजिक विषयालोचना, ७–मितव्यय, ८–शारीरिक उन्नति, ९–मैथिलक स्वत्व रक्षा, १०–मिथिला, मैथिल, मैथिलीक हित साधन।

महाराजाधिराज कामेश्वरसिंहक देहावसान भेला पर एहि नियमावलीकेँ पुनः १९६७ ई० मे संशोधित कयल गेल। एहि नवीन संशोधित नियमावलीमे उद्देश्य सर्वथा परिवर्त्तित कऽ देल गेल अछि, किन्तु एकरा स्वीकृत भेलाक बाद अद्यावधि कोनो अधिवेशन होयबाक कोनो सूचना प्राप्त नहि अछि। यद्यपि एहि द्वितीय संशोधनमे नामक संग 'अखिल भारतीय' विशेषण जोड़ल गेल, परन्तु एकर स्वरूप पूर्वहुसँ अखिल भारतीय छले। एकर पुष्टि दू प्रकारेँ होइत अछि। प्रथम, १९३१ ई० मे संशोधित नियमावलीक कण्डिका संख्या १२ मे कहल गेल अछि—

'महासभाक कार्य संचालनार्थ मैथिल जनसंख्याक विचारसँ निम्नलिखित केन्द्रमे एकर प्रान्तीय सभा रहत।' एहन २२ गोट केन्द्रक नामक उल्लेख अछि तथा कण्डिका संख्या १७ मे कहल गेल अछि—

'एहि महासभाक कार्य सम्पादन एक कार्यकारिणी सभा करत जाहिमे महासभाक पदाधिकारीक अतिरिक्त २५० सदस्य (मेम्बर) रहताह। सदस्यक निर्वाचन भिन्न-भिन्न प्रान्तसँ निम्नलिखित रीतिएँ होएत—।' एतय ओहि बाइसो केन्द्रक नाम तथा कार्यकारिणीमे कतयसँ कतेक सदस्य निर्वाचित भऽ औताह तकर उल्लेख कयल जाइत अछि—

	केन्द्र	भौगोलिक सीमा	सदस्य संख्या
१.	दरभंगा	दरभंगाक सदर सब डिवीजन	५०
२.	मधुबनी	(क) मधुबनी (ख) नेपाल तराई	३५
३.	समस्तीपुर	समस्तीपुर सबडिवीजन	१५
४.	मधेपुरा	उत्तर भागलपुर	१०
५.	भागलपुर	मध्य भागलपुर	१०
६.	सुलतानगंज	दक्षिण भागलपुर	१०
७.	गोण्डा (गोड्डा)	सन्थाल प्रगन्ना	१०
८.	पूर्णिया	अररिया भिन्न सम्पूर्ण जिला	१०
९.	अररिया	पूर्णियाक अररिया सबडिवीजन	१०
१०.	मुंगेर	बेगूसराय भिन्न सम्पूर्ण जिला	१०
११.	बेगूसराय	मुंगेरक बेगूसराय सबडिवीजन	१०
१२.	मुजफ्फरपुर	सीतामढ़ी भिन्न सम्पूर्ण जिला	१०
१३.	सीतामढ़ी	मुजफ्फरपुरक सीतामढ़ी सबडिवीजन	१०
१४.	बेतिया	(क) चम्पारन जिलाक बेतिया सबडिवीजन (ख) सारन जिला	१२
१५.	बैरगनिया	चम्पारण जिलाक मोतिहारी सबडिवीजन	८
१६.	पटना	पटना जिला	१०
१७.	डाल्टनगंज	छोटानागपुर विभाग	५
१८.	मालदह	बंगाल	३
१९.	बनारस	युक्त प्रदेश	५
२०.	मण्डला	मध्यप्रदेशक मण्डला जिला	२
२१.	रायपुर	मण्डला भिन्न मध्य प्रदेश	३
२२.	जयपुर	राजपुताना	२

पुष्टिक दोसर प्रमाण थिक जे महासभाक कतोक अधिवेशन मिथिला क्षेत्रसँ बाहरो भेल अछि; यथा–अड़ाइडांगा (मालदह), आगरा (उत्तर प्रदेश), अजमेर (राजस्थान) आदि अधिवेशनमे भाग लेबाक सुयोग व्यक्तिगतरूपेँ हमरो लागल अछि।

दोसर बेर भेल संशोधनक प्रसंग नियमावलीक प्राक्कथनमे वर्त्तमान प्रधान मंत्री श्री पुरुषोत्तमझाजो लिखने छथि—

प्रस्तुत नियमावली ९ अप्रैल १९६७ ई०, १५ चैत सन् १३७४ सालकेँ स्वीकृत भेल। नियमावलीक संशोधन संस्थाक जीवन थिकैक। एहिमे संशोधनक गुंजाइश सतत रहैत छैक, से यदि नहि रहैक तऽ ओ संस्था गतिशील नहि अछि, सएह कहल जाएत : एम्हर बहुत दिनसँ एहिमे संशोधनक विचार चल अबैत छल। विगत विशेषाधिवेशन मध्य एक उपसमितिक निर्माण भेल जकर तीन टा बैसक मध्य एक प्रारूप तैयार कएल गेल। से प्रारूप कार्यकारिणी द्वारा दुइ दिनक वाद-विवादक पश्चात् स्वीकृत भेल आ कार्यरूपमे आएल।

एहि [संशोधनमे महासभाक मात्र चारि गोट उद्देश्य कहल गेल अछि :—

(क) परम्पराक रक्षा पूर्वक सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास ओ उत्थान।

(ख) मिथिलाक संस्कृतिक संरक्षणार्थ—

(i) संस्कृतक प्रचार ओ प्रसार।

(ii) मिथिला भाषा, साहित्य एवं लिपिक संरक्षण-संवर्धन ;

(iii) कर्मकाण्ड एवं पंजी-व्यवस्थाक दृढ़ीकरण तथा पंजी-व्यवस्थाक वैज्ञानिक अनुशीलन।

(ग) समस्त देशक मैथिल समाज मध्य सांस्कृतिक एकसूत्रताक स्थापना।

(घ) राष्ट्रिय हितक अविरोधेन मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित-साधन।

एहि महासभाक साधारण सदस्यता-शुल्क चारि आना वार्षिक, पाँच टाका एकमुष्टि आजीवन, पाँच हजार एकमुष्टि दाता आजीवन प्रधान संरक्षक आ अढ़ाय सय वार्षिक देनिहार अस्थायी प्रधान संरक्षक मानल जाइत छलाह। एहि नवका नियमावलीमे वार्षिक सदस्यताशुल्क

१) रु०, सक्रिय सदस्यताक ६) रु०, आजीवन सदस्यताक २५) रु० राखल गेल, संरक्षक हेतु एहूमे एकमुष्टि न्यूनतम ५०००) रु० अथवा दस वर्ष धरि ५००) रु० देबाक नियम बनल।

एहिमे क्रान्तिकारी परिवर्त्तन ई भेल जे पहिने महाराजाधिराज मात्र एकर आजीवन सभापति होइत छलाह ताहि स्थान पर नियम बनल जे—

(क) सभापतिक निर्वाचन वार्षिक अधिवेशन मध्य तीन वर्ष पर भेल करत।

(ख) संरक्षकमेसँ सभापति निर्वाचित होएताह अथवा समाजक कोनो लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान् वा समाज सेवी कार्यकारिणी द्वारा अनुमोदित भेला पर निर्वाचित भए सकैत छथि।

ई नियम एकरा जनतान्त्रिक रूप प्रदान करैत अछि, परन्तु निर्वाचन के करत तकर उल्लेख कतहु नहि अछि।

पूर्वहु प्रान्तीय सभा तथा तकर अन्तर्गत ग्राम सभा संगठित करबाक प्रावधान छल आ एहूमे कयल गेल अछि।

महासभाक भवन

सर्व प्रथम २८-७-१९१७ ई०क मिथिला मिहिरमे प्रकाशित विवरणसँ ज्ञात होइत अछि जे बाबू के.सी. मिश्र B.A क सभापतित्वमे रमेश्वर लता विद्यालयमे महासभाक कार्यकारिणीक बैसक भेल रहय जाहिमे महासभाक कार्यालयक हेतु एक निजी भवनक आवश्यकता अनुभव कयल जाइत छल ताहि दिशामे प्रगतिक सूचना निम्नांकितरूपेँ उपलब्ध अछि :—

"पश्चात् महासभाक आफिसक हेतु एक मकान बनयबाक प्रस्ताव उठल जे सहर्ष सर्वसम्मतिसँ स्वीकृत भेल। मकानक हेतु बाबू शिवदत्त झा मुक्तार बेताबाला प्रधान सड़कक कातहिमे तीन कट्ठा भूमि देब स्वीकार कयलन्हि। ताहि पर समस्त सभा गदगद भए हुनका धन्यवाद देलकन्हि। मुक्तार साहेब दानपत्र रजिष्टरी शीघ्र कए देबाक इच्छा प्रकट कयलन्हि : मकानक हेतु श्रीमान लोकनिक ओतए अपील कयल जयतन्हि। कतोक मेम्बरक इहो विचार भेलन्हि जे सौराठ मध्य धर्मशाला बनयबाक निमित्त जे द्रव्य भेल रहय से एहिकार्यमे लगाओल जाय।" (मिथिला मिहिर मण्डल ९' प्रकाश १७)

तकरबाद को भेल से सूचना नहि भेटल। सम्प्रति जे भवन अछि ताहि प्रसंग ५.४.१९५८ ई० कें वैद्यनाथधाममे भेल ४६ म अधिवेशनक अवसर पर तत्कालीन मन्त्री पं० शिवशंकरझा एड्वोकेट द्वारा ४५ म वार्षिक कार्य विवरण जे मुद्रित भऽ वितरित भेल छल ताहिमे भवनक प्रसंग कहल गेल अछि :—

"मैथिल महासभाक भवन श्री दीनानन्द मिश्रजी (लहेरियासराय) क बहुमूल्य समय तथा अथक परिश्रमसँ लहेरियासरायमे महासभाक अपन जमीनमे बनि गेल अछि। केवल पलस्तर बांकी अछि। एकर श्रेय श्री ५ मान् मिथिलेशहिकें छैन्हि, कारण जे एहिमे अधिकांश द्रव्य हुनके लागल अछि। एखन पर्यन्त गत अधिवेशनक बाद करीब साढ़े चारि हजार टाका भवन निर्माणमे खर्च भ चुकल अछि। आब टाका कोषमे बहुत कम रहि गेल अछि। आब त प्रत्येक मैथिल बन्धु एहिमे साहाय्य नहि करताह ताबत ई भवन अपूर्ण रहत।" पृ० ११

यद्यपि ई भूमि बेतारोडसँ कनेके हटल अछि, परन्तु एकर रकबा तीनिए कट्ठा नहि अछि तें शिवदत्तझाक अतिरिक्त कोनो आनो दाता देलथिन, अथवा दोसरे दाता द्वारा सम्पूर्ण भूखण्ड महासभाकें प्राप्त भेल छैक से स्पष्ट नहि अछि। तथापि अपन भूमि ओ भवन छैक जे किरायापर एक पब्लिक स्कूलकें देल गेल छैक। भूमिक रकबा रसीदक आधार पर नौ कट्ठा छैक। एहि भवनक उद्घाटन महाराजाधिराज कामेश्वरसिंह द्वारा ३१.१.५९ कें भेल।

'महासभाक कार्यकलाप ओ उपलब्धि'

मैथिल महासभाक प्रथम अधिवेशनक कोनो विवरण हमरा उपलब्ध नहि भेल, तथापि काशीसँ प्रकाशित 'मिथिलामोद' नामक मासिक पत्रक १९१० ई० मे प्रकाशित उद्गार ५२-५३ मे म० म० डॉ० सर गंगानाथझाक लिखल 'विचारणीय' शीर्षक एक लेख छपल छनि। ताहिमे ओ लिखने छथि—

'गत मैथिल महासभा मध्य तीनि प्रस्ताव स्वीकृत भेल छल—१ *राजभक्ति*, २—*सदाचार*, ३—*शिक्षा*। एहि तीनूक प्रसंग हमरा किंचित् प्रार्थना कर्त्तव्य अछि। सम्भव थिक जे हमर उक्ति बालभाषित हो। मिथिलाक विद्वन्मण्डलीक स्वीकृत प्रस्तावक प्रसंग हमर किछुओ वक्तव्य और की भै सकैछ। परन्तु बालककें जे किछु फुरइक से

अपना पैघक ओतै नहि बाजै तँ बाजै ऐबो ने करतैक एही हेतु क्षमाक प्रार्थी भै किछु लिखबाक साहस करइत छी।

(१) राजभक्ति

राजभक्ति कर्त्तव्य—एतद् विषयक प्रस्ताव मात्र कैने कोनो कार्य सिद्ध नहिँ भै सकैछ। राजभक्ति जाहिसँ लोकक हृदयमे होइक तकरो यत्न ततेक आवश्यक नहि। ई तँ हिन्दू मात्रक चित्तमे जन्म जन्मान्तरक संस्कार रूपेँ खचिते अछि। आवश्यकता आइ कालिह एकर अछि जे जे-जे उद्योग देश-विद्रेषीजन एकर विरुद्ध कै रहल अछि तकर संशोधन कैल जाय। आइ कालिह राजकीय समग्र प्रणालीमे अनुचिते बाहर करब प्रायः बुद्धिमानी ओ देशोपकारिता रूपेण भासित होमै लागल अछि। एकर विरोध करब प्रति शिक्षित व्यक्तिकेँ अपन परम कर्त्तव्य मानइक थिक। केवल थपड़ी बजाय प्रस्ताव-स्वीकार सूचित कैने कोनो फल नहि।

(२) सदाचार

जेहिना 'राज भक्ति करू' ई कहब तेहने व्यर्थ कथन थिक जेहन "सूर्यक स्वरूप उज्ज्वल छन्हि ठीक-ठीक तेहने इहो कहब थिक जे" सदाचार करू सदाचार करू' ई कहबाक कोन काज। ई तँ सब जनितहि अछि।

परन्तु एतत्प्रसंग एकटा विषय चित्तमे राखब आवश्यक। एखनहु-धरि मिथिलामेँ प्रायः ई दशा अछि जे भिनसरे ऊठि बाह्यभूमिसँ आवि चारि घैल पानि ओ एक छिट्टा माटिसँ हाथ धोय ली—ओ एही रूपेँ सब आह्निक करैत-करैत दुइ पहर धरि बिताबी, एहन व्यक्ति 'असल' सदाचारी बूझल-जाइत छथि। दुइ पहरसँ ऊपर कतबो फूसि बाजथि वा पर-द्वेष, पर-निन्दा करथि तेँ कोनो प्रकारक क्षति हुनक सदाचारितामें नहिँ बुझल जाइत छन्हि। एहिसँ देशक कतेक हानि भेल अछि वा होएत से लिखब व्यर्थ। सदाचारक प्रसंग ई विषय हृदयमेँ राखब आवश्यक जे मानसिक सदाचार प्रधान थिक ओ वाह्य गौण। आवश्यक करू, परन्तु भेद एतबै जे बाह्य आचारमेँ हानि भेने केवल ताहि एक व्यक्तिक हानि, परन्तु हुनक मानसिक आचार भ्रष्ट भेने ओ अपने तँ सहजहि नष्ट, ताहि सँग हुनक कुटुम्ब, गौआँ सभक परम अनिष्ट। तेँ सदाचारक प्रसंग ई स्मरण रखबाक थिक जे केवल रुद्राक्ष त्रिपुण्ड धारण कैने आचार सत् नहिँ भेल—मनसा वाचा

कर्मणा तीनू रूपें जखन आचारण शुद्ध होएत तइखन असल सदाचार होएत ।

(३) शिक्षा

शिक्षाहुक प्रसंग ई स्मरण राखब आवश्यक जे दश-पाँच ग्रन्थ पढ़ि लेने वा दुइ-चारि शास्त्रार्थं जितने केओ शिक्षित नहि भै सकैछ। शिक्षाक मुख्य फल थिक चित्तक औदार्यं। यावत् से नहि भेल तावत् सब व्यर्थ। पढ़बासँ मानसिक परिश्रम होइत छैक, तेँ यावत् ओकर परिणाम मन पर नहिँ भेल तावत् ओकर परिश्रम व्यर्थे बुझैक थिक। जेना बाँहि मोटैबाक कसरति जे करइत अछि तकर यावत् बाँहि नहिँ मोटाइक तावत् ओकर परिश्रम व्यर्थे बुझल जाइत छैक।

श्रीगङ्गानाथझा"

मननीय तथ्य थिक जे १९०५ ई०क बंगभंग आन्दोलनसँ उत्पन्न क्रान्तिक बीज सम्पूर्ण देशमे पसरि गेल छल। अंग्रेजी शासनक विरुद्ध क्रान्तिकारीक दल चारूदिस सक्रिय भऽ गेल छल। १९०८ ई०मे मिथिलाक अन्तर्गतेक क्षेत्र मुजफ्फरपुरमे एक बमकाण्ड भऽ चुकल छल जे अंग्रेजी राज्यक विरुद्ध सशस्त्र युद्धक संकेत करैत छल।

पण्डित गिरीन्द्रमोहनमिश्र अपन संस्मरणात्मक ग्रन्थ "किछु देखल किछु सुनलमे" लिखने छथि— "महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक एक प्रधान पृष्ठपोषक छलाह। १८९७ ई०मे पूनामे हृदयक पीड़ासँ अधिक पीड़ित भए गेल छलाह तेँ हुनका जीवनक विषयमे पूर्ण संदेह भए गेल छलैन्हि तँए ओ अपन उत्तराधिकारी राजा रमेश्वरसिंहकेँ राजक सिंहासन पर बैसबाक बाद हुनक कर्त्तव्य निर्देश हुनकहि लिखाय देने छलथिन्ह, ताहिमे एक ईहो आदेश छलैन्हि जे ओ कांग्रेसकेँ प्रतिवर्ष दश हजार टाकाक सहायता देब जारी राखथि।"

ओ कांग्रेस अंग्रेजीराजकेँ देशसँ उखाड़ि फेकि देबाक हेतु कटिबद्ध छल। ताहि स्थितिमे मैथिल महासभाक प्रथमे अधिवेशनमे प्रथमे प्रस्ताव 'राजभक्ति' उपस्थित ओ सर्वसम्मतिसँ स्वीकृत हो। एहिसँ की संकेत भेटैत अछि? दोसर साक्षात् मिथिलेशक अध्यक्षता तथा ताहि समयक बुद्धिजीवीवर्गमे अग्रगण्य विधिवेत्ता लोकनिक उपस्थितिमे स्वीकृत प्रस्ताव सभक डॉ० गङ्गानाथझा सदृश मान्य विद्वान द्वारा आलोचना सेहो किछु संकेत दैत अछि। ध्यातव्य जे महासभाक

आदिकालसँ १९६५ ई० धरि श्रेष्ठ विधिवेत्ता प० कपिलेश्वरमिश्र, प० गंगाधरमिश्र ओ रायबहादुर, प० शिवशंकरझा ई तीनू महाशय लोकनि एकर महामन्त्रीक पदकेँ सुशोभित करैत रहलाह।

महासभाक दोसर अधिवेशन सुपौलमे भेल छल जकर विज्ञापन 'मोद'क ओही अंकक आवरण पृष्ठ पर छपल अछि जाहि अंकमे म० म० डॉ० गंगानाथझाक उपरिलिखित प्रतिक्रिया छपल छनि। विज्ञापनक स्वरूप निम्नांकित अछि :—

मैथिल जातीय महासभा (कान्फ्रेन्स)क विज्ञापन

प्रिय मैथिल बन्धुगण !

(१) एहि वर्ष आगामि वैशाख वदि १,२ ओ ३ सन् १३३८ साल, १४/१५ ओ १६ अप्रैल सन् १९११ ई० मेँ सुपौल, जिला भागलपुर मध्य मैथिल महासभाक द्वितीय अधिवेशन १२ बजे दिनसँ होयत। तेँ विनती प्रार्थनाजे एहि सुअवसर पर देशस्थ तथा सकल मैथिलवर्ग (मैथिल ब्राह्मण ओ कायस्थ) कृपापूर्वक अपन-अपन शुभागमनसँ उक्त महासभाकेँ सुशोभित करथि।

(२) श्री ५ मान् मिथिलेश सभापतित्व स्वीकार कैने छथि तथा श्रीमान् वबुआन राज दरभंगाक, श्री ५ मान् चम्पानगराधीश, श्री ५ मान् श्रीनगराधीश तथा श्री ५ मान् रजौराधीश उक्त महासभामेँ उपस्थित होएबाक हेतु प्रार्थित कैल गेल छथि।

(३) एहि वर्ष मैथिल ब्राह्मण तथा कायस्थभिन्न अन्यान्य महाशयगण अर्थात् श्रीमान् राजा बरुआरी प्रभृति आमन्त्रित होएताह।

(४) जाहि महानुभावकेँ उक्त सभामेँ ऐबाक इच्छा होइन्ह से ऐबाक सूचना २-३ दिन पूर्व 'मैथिल कान्फ्रेन्स औफिस' सुपौल डाकघर सुपौल; स्टेशन सुपौल (B.N.W.R.) बी० एन० डबलु० रेलवे जिला भागलपुरक पतासँ देथि ओ ताहिसँ पूर्व सेक्रेटरीक नामसँ लहेरियासराय, दरभंगाक पतासँ देथि। सुपौल दरभंगा सकरो दै तथा मनशी स्टेशन दै लोक जा सकैछ।

निवेदक

श्री कपिलेश्वर मिश्र

सेक्रेटरी मैथिल कान्फ्रेन्स लहेरियासराय

ई तँ केन्द्रीय महासभा छल, एहि संग प्रान्तीय मैथिल सभा सब सेहो आयोजित होइत छल जकर विवरण पत्र-पत्रिकामे यत्र-तत्र प्रकाशित उपलब्ध होइत अछि। उदाहरणार्थ निम्नांकित विवरण देल जाइछ :—

प्रान्तीय मैथिल सभा

विगत ७ ओ ८ ज्येष्ठकेँ मालदह जिलान्तर्गत अड़ाइडाङ्गा ग्राम मध्य मालदह प्रान्तीय सभाक प्रथम अधिवेशन भेल छल जाहिमेँ खानपुर, धरमपुर, चौकी, वांगी टोला, एकवर्णा, नओघरिया, सोमानगर, हाड़ियागड़, बहराल, नाजिरपुर प्रभृति गामक मैथिल ब्राह्मण लोकनि उपस्थित भेल छलाह। प्रान्तीय सभाक सभापति श्रीयुक्त बाबू अक्षय कुमार कुमर 'वकील' सभापतिक कार्य कयने छलाह ओ सम्पादक श्रीयुक्त बाबू हृषीकेश कुमर बी० ए० उपस्थित भेल छलाह। ७ ज्येष्ठ रवि दिन प्रातःकालमेँ सब्जेक्ट कमीटीक अधिवेशन भेल। १२ सँ ५ बजे धरि सभाक अधिवेशनमेँ स्तोत्र ओ कवितापाठकै अन्तमे सभाक कार्य आरम्भ भेल। तदन्तर ८ वजेसँ रात्रिसँ १२ बजे धरि सभाभेल। सम्पादक श्रीप्रमथनाथ मिश्र सुपौलमैथिल महासभाक विषय विवृत कैलन्हि। तत्पर प्रान्तीय सभाक नियमावली निर्धारित भेल। तत्पश्चात् कार्यकारिणी सभा संगठित भेल। ततपर राजभक्तिक उपर सहकारी सम्पादक श्रीयुक्त हृषीकेश कुमर बी, ए., सदाचारक उपर पं० श्रीविश्वनाथ ओझा, उचितब्ययमेँ नओघरिया निवासी श्रीयुक्त अभयचन्द्रमिश्र ओ विवाह प्रसङ्गमे अड़ाइडाङ्गा निवासी श्रीयुक्त हरिश्चन्द्र कुमर वक्तृता देलन्हि। उक्त महोदय विवाहक मन्त्रादि भाषामे अनुवादितकै पात्रादिक विवाहक प्रकृत तात्पर्य बोधगम्य करैबाक प्रबन्ध कैलन्हि। एहि विषयमे सम्पादक श्रीप्रमथनाथमिश्र समर्थन कैलन्हि ओ योग्य मैथिलक पुरस्कारक विषयमे अड़ाइडाङ्गाग्राम निवासी श्रीयुक्त राधिकाप्रसन्न कुमर अपन अभिमत देखाय स्त्री शिक्षाक विषयमे एक अतिसारगर्भवक्तृता देलन्हि। विद्याप्रचार ओ मिथिलाक इतिहास संकलनक विषयमे सम्पादक श्रीप्रमथनाथमिश्र वक्तृता दै शेषोक्त विषयमे ई बजलाह जे मालदहवासी मैथिल लोकनिक तिरहुतिसँ मालदह ऐबाक काल, हेतु ओ मालदह प्रान्तक मैथिल समाजक इतिहास, जनश्रुति, वृद्धवचन, प्राचीन ग्रन्थादि प्रभृतिसँ संग्रह करथि, एहि विषयमेँ प्रत्येक ग्राम-ग्रामसँ प्रयत्न कैल जाय।

कृषि ओ वाणिज्य विषयमें सहकारी सम्पादक श्रीयुक्त बाबू श्रीहृषीकेश कुमर बी. ए. वक्तृता देलन्हि। मनीगाछी'क चीनीक कारखानाक विषय उल्लेख कैलासँ सभामध्य श्रीयुक्त बाबू शीलनाथ कुमर उक्त कारखानाक एक अंश 'खरीद' करबाक इच्छा प्रकाश कैलन्हि। अन्तमें सम्पादक महाशय महासभाक प्रथम वर्षक २ नं० रिपोर्ट पाठ कैलन्हि। प्रातःकाल सोमदिन ७ बजेसँ ८ बजे धरि कार्यकारिणी सभाक अधिवेशन भेल। एहि सभाक शेषकालमें सभापति महाशयक अनवकाश निबन्धनार्थ सहकारी सभापति खानपुर निवासी श्रीयुक्त बाबू लक्ष्मीनारायणमिश्र सभापति भेलाह। कार्यकारिणीसभामे सभाक आयक हेतु ओ सभाक प्रत्येक उद्देश्यानुयायि कार्य करबाक हेतु कैएकटा उपाय निर्धारित भेल।

विद्या प्रसार बिषयमें एक वर्णाग्राम मध्य (जाहिठाम कोनो स्कूल नहिं छैक) एक पाठशाला स्थापित करबाक हेतु कार्यकारिणी सभाक दू व्यक्तिक उपर भार अर्पित कैल गेल। मालदह प्रान्तमें संस्कृत विद्या प्रचारार्थ एक टोल स्थापित करबाक हेतु एक 'कमिटी' नियुक्त भेल। अन्तमें कोषाध्यक्ष चौकी ग्राम निवासी श्रीयुक्त बाबू गयानाथझा 'जमोदार' महाशयक आमन्त्रणसँ निर्धारित भेल जे आगामिनी कार्यकारिणी सभा चौकी ग्राममें आगामी २० श्रावणसँ होएत। अतः पर धन्यवादादि कए सभा विर्सजित भेल।

अड़ाइडाङ्गा ग्राम निवासी महोदयगण समागत व्यक्तिगणक स्वागत करबाक हेतु अति उत्तम प्रबन्ध कैने छलाह। स्नानाहार ओ विश्रामार्थ प्रबन्ध एहन उत्तम छल जे अति निकट कुटुम्बक ओतै नहिं भै सकैछ। स्वेच्छा-सेवक बालक ओ युवक लोकनि दिवारात्रि समागत व्यक्ति समूहक सेवाक हेतु तत्पर छलाह। सम्पादक श्रीयुक्त बाबू हृषीकेश कुमर ओ श्रीयुक्त बाबू योगेन्द्रनाथ कुमर उक्त आयोजनक सुचारु प्रकारें प्रबन्ध कैलन्हि तदर्थ उक्त महोदय युगल धन्यवादार्ह थिकाह।

श्रीप्रमथनाथमिश्र

मन्त्री, मालदह प्रान्तीय मैथिल सभा।

(मि० मोद, उद्गार ५८, श्रावण सन् १३१९ साल १९१२ ई०)

अक्षरशः एहि विवरणकें उद्धृत करबाक तीनटा प्रयोजन, प्रथम ई जे मिथिला क्षेत्रसँ बाहरो महासभाक प्रभाव किछुए दिनमे कतेक

पसरि गेल छल, दोसर ओहि प्रान्तक कतेक गाममे मैथिल ब्राह्मण निवास करैत छथि, तेसर केहन व्यवस्था कयल जाइत छल, एहि सब विषयक सांगोपांग बोध एहि विवरणसँ भऽ जाइत अछि। ओहिठामक लोक क्रियाशील अवश्य छलाह जे ई विवरण १९१२ ई.क थिक आ ४२ वर्षक बाद १९५४ ई.क फरवरीमे महासभाक अधिवेशन अड़ाइ-डाङ्गामे भेल छल जाहिमे महाराजाधिराज कामेश्वरसिंह स्वयं उपस्थित भेल छलाह। एहि पंक्तिक लेखकके सेहो उपस्थित होयबाक सुयोग भेटल छलनि। स्वागत-सत्कारक वर्णन जाहि रूपक उक्त विवरणमे अछि ताहिसँ कतेको न्यून ओहू महाअधिवेशनमे नहि छल।

किछु एहने प्रान्तीय सभा सभक संक्षिप्त विवरण भेटैत अछि जाहिसँ एहि महासभाक विस्तृत होइत क्षेत्र ओ क्रियाशीलताक परिचय प्राप्त होइत अछि।

उदाहरणार्थ यथा—

प्रान्तिक सभा

चैत्रकृष्ण ३० रवि, तारीख ६-४-१३ई० सागर पोखरिक शिवालयमे बेतिया प्रान्तिक सभाक वार्षिक अधिवेशन भेल। पं० श्रीरामदत्तमिश्र सभापति नवो उद्देश्य पर सुललित व्याख्यान देलन्हि। सेक्रेटरी पं० श्रीत्रिलोचनझा वार्षिक रिपोर्ट पढ़लनि ताहिसँ ज्ञात भेल जे एहिवर्ष महासभाक कोषमे ४०) टाका गेल अछि, विद्यमान बेतियाक कोषमें ३) टाका। सभासद लोकनिक ओतै अवशिष्ट १९०) टाका रहल। पं० श्रीत्रिलोचनझाक मन्त्रित्वक ३ वर्ष पूर्ण भै गेलन्हि तें तिरहुतिया टोलक पं० श्रीश्यामानन्दझा नवीन सेक्रेटरी निर्वाचित भेलाह ओ स्वीकारो कैलन्हि।

अण्डरसँ

श्रीधूर्जटीझा (मि० मोद उद्० ७८, पृ० १८)

दोसर समाचार अछि—

विदित हो जे गत वैशाख शुक्लके लालपुरग्राममे श्रीयोगधरमिश्रक उद्योगसँ प्रान्तीय सभाक अधिवेशन भेल छल जाहिसँ ज्यौ० श्रीबूचनमिश्र, प० श्रीराजधरझा, प० श्रीवाबूदत्तझा, प० श्रीरासकारी ठाकुर ओ प० श्रीत्रिलोकनाथमिश्र लोकनि अत्यन्त प्रभावशाली व्याख्यान दै सभासद लोकनिकैं कृतार्थ कैलन्हि। तत्पश्चात् प० श्रीत्रिलोकनाथमिश्र प्रस्ताव कैलन्हि जे एहि ग्रामक चन्दा आइ एकट्ठा हो जे स्वीकृत भै तत्काल

२४) टाका वसूल भेल। तखन श्रीरविनन्दनमिश्र बजलाह जे चन्दा वसूल करबाक निमित्त डेपुटेशन ((Deputation)) कैल जाय, इहो स्वीकृत भेल। उक्त कार्यमे निम्नलिखित व्यक्ति रहव स्वीकार कैलन्हि, बाबू श्रीरीतिनारायण ठाकुर, बाबू श्रीरविनन्दनमिश्र, बाबू श्रीकृष्णदेव झा, प० श्रीत्रिलोकनाथमिश्र, प० श्रीसत्यदेव ठाकुर, महन्थ श्रीसिंहेश्वर दास, ज्यौ० श्रीबूचनमिश्र तत्पश्चात् सभा विसर्जित भेल ओ उपरोक्त सातो गोटै सम्मिलित भै चन्दा हेतु मोतीपुर गेलाह।

—श्रीसत्यधरमिश्र, बसानपट्टी।
(मि० मोद, उद्० ८०, पृ० २०)

एहि अंकमे एक तेसर समाचार अछि—

ज्येष्ठ शुक्ल ४ रविदिन 'रनगाम'मे खड्गपुर प्रान्तीय सभाक वार्षिकोत्सव भेल। प० श्रीलक्ष्मीकान्तझा नवो उद्देश्य पर सदृष्टान्त सुललित व्याख्यान दै एहि वर्षक गत मैथिल 'महासभा'क श्रीमन्-मिथिलेशक व्याख्यान श्रवण कराए अत्यानन्द कैलन्हि। अनन्तर वार्षिक रिपोर्ट पढ़ल गेल जाहिसँ सबकाँ ज्ञात भेल जे गत वर्षक उक्त प्रान्तीय सभार्थ गृहीत चन्दाक अवशिष्ट ५५) टाका उक्त सभाक कोष-मध्य अछि। दरभङ्गाक तारसँ ज्ञात भेल जे पं० श्रीकपिलेश्वरमिश्र मन्त्री सम्प्रति दुःखित छथि तेँ ओ नहि ऐलाह। हर्षक कथा जे ५-६-१३सँ एक सप्ताह पर्यन्त वैवाहिक सभा 'रनगाम' मध्य भेल छल जकर प्रबन्धकर्त्ता उक्त सभापति महाशय छलाह ओ उक्त प्रान्तीय सभासँ भोजनादिक प्रबन्धो उत्तम छल।

(श्रीगोवर्धनझा, स० पा० तिलडीहा)
मि० मोद, उद्० ८०, पृ० २४

एहिना वर्त्तमान महामन्त्री प्रो० श्रीपुरुषोत्तमझाक कथनानुसार महा-सभाक अन्तिम अधिवेशनमे गुजरात प्रान्तीय सभाक संगठन भेल छल। दोहद (गुजरात) निवासी प० वेदमित्रमिश्र महासभा तथा मैथिली भाषाक प्रति समर्पित लोक छलाह, श्रीयुत् सुमनजीक सम्पादकत्वमे प्रकाशित मिथिला मिहिरमे उपनिषद् आदिक मैथिली अनुवाद प्रकाशित होइत रहैत छलनि।

दाम्पत्य सौरभक रचयिता नैयायिक श्यामसुन्दरझा सूरत (गुजरात) मे अध्यापन करैत छलाह। एहि व्यक्तिक उत्साहसँ महासभाक शाखा स्थापित भेल, परन्तु प० वेदमित्रमिश्र वृद्ध भऽ गेल छलाह आ नैया-

यिकजी सूरत छाड़ि दरभंगा रमेश्वरलता विद्यालय चल अयलाह, तैं उक्त प्रान्तीय सभा शिथिल पड़ि गेल ।

उपरिलिखित समाचार सबकेँ उद्धृत करबाक उद्देश्य जे महासभा द्वारा सम्पूर्ण मिथिलांचले नहि, अपितु मिथिलासँ बाहरो समस्त मैथिल ब्राह्मण समुदायकेँ एकसूत्रमे बान्हि, आचरणच्युत होइत समाजकेँ उचित मार्ग पर अनबाक प्रक्रिया जे आरम्भ कयल गेल छल, ताहि दिस समाजक रुचि कोन प्रकारेँ जागि रहल छलैक से बुझबाक योग्य हो।

एतबे नहि, प्रत्युत महासभा द्वारा घोषित उद्देश्य सभक पूर्तिक हेतु समाजमे अनेक संस्था संगठित भऽ रहल छल। एकर देखा-देखी दोसर-दोसर जागरूक लोक सेहो सभा-समिति स्थापित कऽ महासभाक उद्देश्यकेँ प्रचारित-प्रसारित करबामे सहायक बनि रहल छलाह। एहि उक्तिक पुष्टिमे निम्नांकित दून समाचार द्रष्टव्य—

"ज्येष्ठशुक्ल १२ रविदिन कोइलखमे मै० शिशु कल्याण कारिणी सभाक ४म अधिवेशनमें शताधिक नेना एकत्रित भेल छलाह, मैथिल महासभाक सातो उद्देश्य पर हुनका लोकनिक वाक्पटुता प्रशंसनीय भेल छलन्हि, जकर सभापति बाबू श्रीगीतादत्तझा ओ मन्त्री श्रीचन्द्रनाथझा छथि। प० श्रीविष्णुदत्त ठाकुरक शिष्य लोकनिक उत्साह ओ सदाचारादि पर लेख उत्तम भेलन्हि। सभाक आरम्भमें होमीय द्रव्य सहित श्वेतकमल द्वारा 'देबीसूक्त'सँ हवन भेल ।"

(श्रीलक्ष्मीनाथझा) मि० मोद उद्० ८०, पृ० २४

दोसर समाचार—"गत ज्येष्ठ बदि रविदिन ५ बजे बाबू श्री दीनानन्द सिंह झाक उत्साहसँ बाबू श्रीनाथ मिश्रक सभापतित्वमें 'ग्राम हितैषिणी' मै० महासभाक सब उद्देश्यसँ युत चनौर ग्राम मध्य स्थापित भेल। जाहिमें महासभाक उद्देश्यसँ विशेष पुस्तकादि संग्रह ओ मातृभाषोन्नति करबाक निश्चय कैल गेल अछि—उक्त सभाभवनमें पुस्तकादि आवश्यकीय वस्तु सब जे अबैत रहत तकर रक्षाक भार परमोत्साही बाबू श्री यदुनन्दन सिंहझा, बाबू श्री नीलकण्ठ सिंहझा, बाबू श्री दीनबन्धु सिंह झा ओ बाबू श्री रासबिहारी सिंहझा सब गोटै एक मत भै अपना लोकनिक उपर लै लेलन्हि, जाहिसँ उक्त महोदय लोकनि विशेष धन्यवादार्ह भेल छथि। सम्प्रति ३२) टाका चन्दा एकत्रित भेल अछि किन्तु प्रत्येक मास बढ़ले जाएत।"

—बाबू श्री रासबिहारी सिंहझा, चनौर
(मि० मोद, उद्–८० आवरणक-४ म पृष्ठ)

आरम्भमे महासभाक प्रति लोकमे कतेक आदर ओ केहन उत्साह छलैक तकर निदर्शन निम्नांकित वक्तव्यमे होइत अछि। वक्तव्यक स्वरूप द्रष्टव्य :—

'या बेतिया श्री मिथिलेश्वरस्य पादेन पूता न कदापि भूता।
सेयं सभे ! सम्प्रति त्वत्प्रसादात् तेनाति धन्या भविता च पूता ॥
अतः सभे त्वं सकलैः सुवन्द्या यतः पतिस्ते मिथिलेश्वरोऽयम्।
यावद्रसा तावदनेन पत्या सह स्थिरीभूय कृतार्थयास्मान् ॥
श्रीमन्महाराजसमागमेऽत्र प्रावृट् कपाटो विघटिष्यते वै।
कदेलि सर्वे स्पृहयन्ति नित्यं श्री बेतियावासि जनाः प्रहृष्टाः ॥

सवाह्याभ्यन्तर सानन्दपूर्वक उदात्त स्वरसँ 'मैथिल महासभा' केँ धन्यबाद दैत छी जकरा प्रसादेँ बेतिया प्रान्त निवासी मैथिलजनकाँ ई सौभाग्य सम्भावित अछि जे प्राचीदिग्पति समान श्री मन्महाराजाधिराज देवदेव मिथिलेश श्री १०८ रमेश्वर सिंह बहादुर के० सी० आइ० ई० स्वयम् अन्यान्य परम मान्य धराधीश सहित अनेकोत्कृष्ट शिष्टजन पुञ्जमध्यगत अति प्रोज्ज्वलित प्रतापसँ देदीप्यमान होइत बेतिया आबि समस्तजनकैँ कृतार्थ करब स्वीकार कैने छथि। हम मुक्तकण्ठसँ कहैत छी समस्त प्रजागण सर्वथा कोना उन्नतिकैँ प्राप्ति करत एकर उद्योगमेँ सतत निविष्ट रहब ई अलभ्य गुण अन्य कोनो श्रीमान्मेँ प्रायः भेटबो करत तँ एहिसँ न्यूने भेटत। श्रीमान् युगल तनय सहित दीर्घायुष्य पूर्वक प्रजापालन करथु।

श्री बलभद्रझा, सेक्रेटरी, ग्रामसभा धमौरा,

(मि० मोद, उद्-८० पृ०-२१)

उपरि उद्धृत विवरणसँ दू गोट तथ्य स्पष्ट होइत अछि, प्रथम ई जे महासभाक आकर्षणकेन्द्र मिथिलेश रहैत छलाह जनिक गुणगान कयल गेल अछि आ दोसर ई जे प्रान्तीय सभाक अन्तर्गत ग्राम सभा सभक संगठन सेहो होइत छल। दोसर उक्तिक पुष्टि निम्नांकित समाचारसँ सेहो होइछ—

मैथिल महासभाक अवान्तर सभा

ता० २६-२-११ सँ लै ता० २६-३-११ धरि निम्नलिखित स्थान सबहिमेँ अवान्तर सभा भेल—

मधुबनी, सिंहेश्वर स्थान, कुशेश्वर, चडेश्वर, कपिलेश्वर, शीला-नाथ, महिसी, मकरन्दा, बसुआरी, नाथपुर, मधेपुर, तिलाठी, झिल्ला-शाहपुर, वनगाँव, भमरपुर, कृष्णगंज ।

एहि समाचार संग 'मिथिला मोद'क टिप्पणी निम्नांकित रूपें देल गेल अछि—'धन्य-धन्य मन्त्री महाशय, ई अपनेहिक प्रताप ओ प्रभाव थिक। जातिवाला लोकनि टाकाक टकटकीमें टकटक करैत रहथु किन्तु टटका नाम परम पठिहारमें रहनिहारक कोन कथा जे सोति-पुरहुलोककैं दुर्लभ किन्तु निश्चय राखू कोनहु समयमें एकर अहङ्कार नहिँ राखि "अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति" एहि वाक्यकें विचारैत कोनहु समयमें मिथिलाक परम सुकृती आवश्य कहाएब।'

(मि० मोद, उद्–५२-५३, आवरण पृ०–३)

एहि टिप्पणीक व्यंग्यार्थ महासभामे होइत विसंगतिक संकेत करैत अछि।

महासभाक स्थापना ओ एकर कार्यकलापसँ समाजमे विद्या-प्रचारक प्रति कोन प्रकारक उत्साह उत्पन्न भेलैक तकर अनेक उदा-हरण तत्कालीन पत्र-पत्रिकामे मुद्रित समाचार सबसँ भेटैत अछि। १९१० ई० मे महासभा स्थापित भेल आ १९११ ई० में पचाढ़ीक महन्त बंशी दासजी पचाढ़ीमे एक 'माइनर स्कूल'क स्थापना कयलन्हि। उक्त अवसर पर अपन हार्दिक उद्गार व्यक्त करैत महन्तजी बाजल छलाह—

'मुझको यह भी कहना पड़ता है कि 'मैथिल महासभा' यदि कायम नहीं होती तो मुझको भी यह उत्साह कभी नहीं होता। इस महा-सभा ने मेरे ही तरह कैएक लोगों को उत्साहित किया है इसलिये मैं महासभा के कार्यकर्त्ता लोगों को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता।

(मि० मोद उद्–५४, पृ०-२१)

सुपौलमे महासभाक दोसर अधिवेशन सम्पन्न भेलाक पश्चात् मि० मोद अपन विशेष टिप्पणीमे लिखलक—

"सुपौल महासभामें तत्प्रान्तीय उत्साही धनजनसम्पन्न महोदय लोकनिक साहस, उद्योग ओ मनसा, वाचा, कर्मणा एहि तीनूसँ साहाय्य देब, एकर वर्णन हम की करू, वस्तुतः दीन शिक्षा हीन बालक वर्ग तथा

अत्यन्त धैर्यवती बालिका-कुमारिकावर्गक उद्‌गार जँ सत्य थिक तँ देवगण गान करताह तथा (सहृदय श्रीमान् लोकनिक परमोत्साह यदि दृढ़ रहत तँ अवश्य) थोड़बहि दिनमे श्रीमन्मिथिलेश रक्षिता मिथिला कें पूर्ववत् सन्मान करताह।

हम सुपौलक समीपवर्त्ती अनेको मैथिल महासभाक साहाय्यकर्त्ता लोकनिक नामसँ अपरिचित छी तथापि एतबा कहब जे परमपरिश्रमी सुयोग्य प० श्री बदरीनाथ उपाध्यायक प्रोत्साहन, कर्णपुरक बाबू श्री छोटकू पाठक, बाबू श्री हरिहरनाथ पाठक, बाबू श्री फोचाइ झा ओ अन्यान्य ग्रामक धर्मशील सुयोग्य उद्योगीजन-समुदाय द्वारा बहुत साव-धानतासँ 'मैथिल महासभा' आरब्ध भै विसर्जित भेल अतएव ई जनता (जनसमूह) परम धन्यवादास्पद थिकथि।"

एही क्रममे 'महासभा'क प्रभावक प्रसंग मोद लिखने अछि—

"मैथिल महासभा'क प्रभाव कीदृश प्रबल भेल जाइत अछि एकर अनुभव आबहु मैथिल लोकनिकैं होइत छन्हि वा नहिं ? देखू तँ बाल शिक्षार्थ कतेक स्कूल ओ पाठशाला वर्षाभ्यन्तरमे बिनु आयासहि भेल जाइत अछि। जाहिसँ आशा कैल जाइत अछि जे आगामिनी 'मैथिल महासभा' मिथिलाक प्रधान राजधानी दरभंगामे महन्त वंशी दासजी (पचाढ़ी)क सादर आह्वानसँ जे होएत ताहिमे अवश्ये श्रीमान् मिथिलेश महाराज बहादुरक आर्द्र दृष्टि प्रभावसँ 'मैथिल कालेज'क मूल स्थापन (न्यो) होएत तदर्थ हमरा लोकनि अपन-अपन इष्टदेवसँ प्रार्थना करैत छी ओ सबहिक कर्त्तव्य थिक जे श्रीमान् मिथिलेश महा-राज बहादुर प्रभृति श्रीमान् लोकनि सर्वथा प्रसन्नचित्त रहथु। यदि भाविनी महासभासँ पूर्वहि एकर प्रबन्ध कैल गेल तँ हमर मनोरथ शीघ्र सफल भेल। हो नहिँ कियैक ? यदि बाबू तेजनारायणक उद्योगसँ भागलपुरमे, परमोत्साही बाबू श्री लंगट सिंहक उद्योगसँ मोजफ्फरपुरमे तथा एहिना पटनहुमे भेल तखन सर्वथा सर्वदक्ष श्रीमान् मिथिलेश महाराज बहादुरक कनेक इङ्गित मात्रहिसँ ई कोन एहन कठिन कार्य जे नहि हो ?

उक्त सभाक होइतहि श्रीमती गत महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह बहादुरक कनिष्ठा महारानीसाहेबक संस्कृत पाठशाला, श्रीमती जनेश्वरी बहुआसिनि साहेबक संस्कृत पाठशाला, श्रीमान् महन्त वंशी

दासजी (पचाढ़ी) क अंगरेजी स्कूल, श्रीमती उक्त महाराज साहेबक ज्येष्ठा धर्मपत्नी महारानी साहेबक धर्मोत्साहसँ सरिसब ग्राम मध्य अंगरेजी स्कूलक, नेहरा तथा बारीमे स्कूलक न्यों लेल गेल, जे होएते।'' (मि० मोद, उद्-५६, पृ०-१५ ज्येष्ठ १३१८ साल)

ध्यातव्य जे मैथिल कालेजक प्रस्ताव १९११ ई० मे आयल छल ताहिसँ चारि वर्ष पूर्वहि दरभंगामे अर्थात् १९०७ ई० क आषाढ़ शुक्ल द्वितीयाकेँ महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह महारानी रमेश्वर लता संस्कृत महाविद्यालयक स्थापना कऽ चुकल छलाह जाहिमे व्याकरण, न्याय, मीमांसा कर्मकाण्ड, ज्योतिष, सामवेद, यजुर्वेद तथा साहित्य शास्त्रक अध्यापनक व्यवस्था छल, किन्तु अंग्रेजीक माध्यमसँ चलनिहार कालेजक प्रसंग उक्त मिथिलेशक जे धारणा छलनि से १९२९ ई० मे हुनक मृत्यु पर बाबू भोलालाल दास अपन 'मिथिला' मासिकमे हुनका प्रसंग लिखने छलाह ताहिसँ ज्ञात होइत अछि। ओ लिखने छथि—

'विश्वस्तसूत्रसँ ज्ञात भेल अछि जे कालेजक विषयमे मिथिलेशक धारणा छलन्हि जे अहिसँ शिक्षाक यथार्थ प्रचार नहि होइछ। वस्तुतः आर्ट्स कालेजसँ केवल गुलामक सृष्टि होइछ।' ('मिथिला, वर्ष १ अंक ३, पृ०-१२३) तेँ ताहि समयमे 'मैथिल कालेज'क स्थापना नहि भऽ सकल। हँऽ तखन २८ वर्षक बाद ओही वंशक कुलभूषण बाबू चन्द्र धारी सिंह, प्रसिद्ध हेमकर साहेब उदारतासँ 'चन्द्रधारी मिथिला कालेज' दरभंगामे स्थापित भऽ सकल।

तथापि उपरि उद्धृत उद्धरणसँ सिद्ध होइत अछि जे महासभाक स्थापना भेला पर चारू कात संस्कृत शिक्षाक संगहि आधुनिक शिक्षाक प्रचार-प्रसार द्रुत गतिएँ बढ़य लागल।

शिक्षा-प्रचारक हेतु महासभा स्तुत्य प्रयास करैत छल से एहूसँ ज्ञात होइछ जे महासभा प्रतिभाशाली, मेधावी ओ साधनहीन छात्र लोकनिकेँ छात्रबृत्ति दऽ अध्ययनमे सहायता करैत छल। सबटा विवरण यदि उपलब्ध होइत तखन प्रमाणित होइत जे प्रायः महासभा सबसँ अधिक ओ सार्थक व्यय विद्या प्रचारेमे कयलक। हमरा केवल दू वर्षक विवरण उपलब्ध भेल जकर उल्लेख करब उपर्युक्त धारणाक पुष्टि हेतु समुचित होयत। प्रथम विवरण :—

"१८-६-१५ ई० कार्यकारिणी सभामे" निम्नलिखित छात्रगणकेँ छात्रबृत्ति महासभासँ देल गेल अछि।

अङ्ग्रेजी एम्० ए०— १. श्री अवधनारायण दास।

बी० ए०—२. श्री सहदेव मिश्र, ३. श्री शुभ नारायण चौधरि, ४. श्री यदुनन्दन लाल दास, ५. श्री भोलालाल दास, ६. श्री अनन्तलाल दास, ७. श्री रामनारायण लाभ, ८. श्री टेकनाथ झा।

आई० ए०—९. श्री श्याम झा, १०. श्री आद्यानाथ मिश्र, ११. श्री मोहितलाल दास, १२. रामावतार चौधरि १३. श्री गेनालाल झा, १४. श्री दुःखन झा, १५. श्री पुष्पनाथ झा, १६. श्री बलभद्र झा, १७. श्री ब्रजभूषण कुमर, १८. श्री केशव झा, १९. श्री जयदेवलाल दास।

संस्कृतक छात्र—२०. प० श्री महावीर झा, २१. श्री जयकिशोर झा, २२. श्री कुशेश्वर मिश्र, २३. श्री वासुदेव झा, २४. श्री श्यामसुन्दर झा, २५. श्री सदानन्द झा, २६. श्री जयचन्द्र झा, २७. श्री सहदेव झा।

(मि० मोद उद्-१०५ पृ०-२२)

ई अवश्य जे कोन वर्गक छात्रकें कतेक राशि देल जाइत छलनि तकर उल्लेख कतहु नहि अछि जाहि पर सम्पादक ताराचिह्न दऽ टिप्पणीओ कयने छथि। टिप्पणीक स्वरूप निम्नांकित अछि—

"सं-टि—किरानी साहेब! ककरा कतेक छात्रवृत्ति, एकरा कियैक नुका राखल? तथा अन्त्यमे मै० म० सभाक सेक्रेटरीक नाम रहब समुचित ...।"

संगहि छात्रवृत्ति प्राप्त करबाक अर्हता की निर्धारित छल तकर संकेत कतहु नहि भेटल। एहि प्रसंग मि० मोद टिप्पणी कयने छल जे यथास्थान उद्धृत होयत। दोसर विवरण :—

"गत रविदिन श्री रमेश्वरलता विद्यालयमे मैथिल महासभाक कार्यकारिणी कमिटीक अधिवेशन बाबू के० सी० मिश्र B. A. क सभापतित्वमे भेल। सर्वसम्मतिसँ निम्नलिखित विद्यार्थीकें पटनाक हेतु वृत्ति देल गेलन्हि—

इन्जिनियरिंगक हेतु—जयनाथ झा, जयदेवलाल दास, जयमाधव झा, हेमनाथ चौधरी, दिगम्बर झा, बलभद्र कंठ।

डाक्टरी हेतु—गदाधर मिश्र ।

B. A. क हेतु—धरणीधरलाल दास, अशर्फी मिश्र, रमाकान्त झा, रामावतार चौधरि, भोलालाल दास, तेजनारायण झा ।

संस्कृतक हेतु—रामगुलाम झा, आदिनाथ मिश्र, रघुनन्दन ठाकुर, लक्ष्मी कान्त झा, अनन्तलाल झा।

सेक्रेटरी बजलाह जे कृषि शिक्षाक हेतु— दुःखहरणमिश्र नामक एक बिद्यार्थीकें पचाढ़ी महन्तजी ६) टाका मासिक वृत्ति देव स्वीकार कयलथिन अछि ।

(मि० मिहिर, मण्डल ६, प्रकाश १७, २२-७-१७ ई०)

एही बैसकमे अन्यान्य कार्य भेल जे विवरण छपल अछि जाहिसँ महासभाक गतिविधि पर प्रकाश पड़ैत अछि । विवरण द्रष्टव्य :—

"पश्चात् गतवर्षक आय-व्ययक लेखा सुनाओल गेल । जाहिसँ ज्ञात भेल जे गतवर्ष अर्थात् जुलाई १९१६ सँ जून १९१७ धरि समस्त आय १७८९॥≡ (एक हजार सात सय नवासी टाका एगारह आना) भेल और व्यय २१६८)≡ (दू हजार एक सय अठसठि टाका तीन आना) व्ययक हेतु अतिरिक्त रुपैया रिजर्व फंडसँ लेल गेल । उक्त आय-व्ययमे २००) टाका एहन अछि जे भागलपुर जिलाक भंडापुर निवासी पशुपतिझा अपन बालक केशवनाथझाकें हरिद्वार ऋषिकुलमे पढ़यवाक हेतु अमानतक २००) टाका जमा कयने छलाह और महासभा द्वारा ओ रुपैया ऋषिकुलमे पठाय देल गेलैक । आगामी वर्षक हेतु बजट बनल ताहिमे छात्रवृत्तिक व्यय निर्धारित भए सुनाओल नहि गेल । शेष वार्षिक व्यय निम्नलिखित रीतिक सूचित कएल गेल । लेखक (किरानी) १८०) उपदेशक द्व २०४) फुटकर खर्च १२०) चपरासी ६०) ।

तदुत्तर महासभाक शिथिलता पर सदस्य लोकनि खेद प्रकट कयलन्हि । निश्चय भेल जे देशमे स्थान-स्थान पर महासभाक दिससँ सभा कयल जाय । जाहिमे कार्यकारिणी कमीटीक मेम्बर उपस्थित होथि । वर्षाभ्यन्तरमे प्रत्येक मेम्बर नियमावलीक अनुसार कमसँ-कम छः सभामे जाथि । एहि हेतु निम्नलिखित मेम्बर महासभाक बीचसँ यथासमय वार्त्ता पौला पर सभामे जायब उत्साह पूर्वक स्वीकार कयलन्हि । (१) पं० शिवशंकरझा B.A. मधुबनी (२) पं० सिद्धिनाथ

मिश्र B.A. असिस्टेंट हेड मास्टर नार्थब्रुक स्कूल (३) पंडित योगानन्द कुमर (४) पंडित रामेश्वरझा, टीचर मधेपुर हाई स्कूल (५) बाबू हरिवंशझा मुक्तार, मधुबनी (६) पंडित कपिलेश्वरमिश्र (७) बाबू हरिनन्दन दास वकील, लहेरियासराय (८) बाबू शुकदेव दास मुक्तार लहेरियासराय (९) मुंशी रघुनन्दन दास दरभंगा (१०) पं० मुकुन्दझा वक्शी दरभंगा।

तदनन्तर आगामी मैथिल महासभा कतय हो तकर प्रश्न उठल। मन्त्रीजी बजलाह जे पचाढ़ीक महन्तजी महासभा पचाढ़ीमे नहि कए मधुबनीमे करब स्वीकार करै छथि और सभापति महोदय सेहो एहि विषयमे सहमत छथि। अतएव आगामी अधिवेशन मधुबनीमे होएत। मन्त्रीजी बजलाह जे महन्तजी मधुबनी अधिवेशनमे महासभाकेँ १०००) टाका दान करबाक सङ्कल्प कयलन्हि अछि। ई संवाद सुनि सभा अत्यन्त प्रमुदित भेल।

महासभाक कार्यकर्त्ता लोकनिक पुनर्निर्वाचनक विषयमे ई स्थिर भेल जे एहि बातक निर्णय सभापतिक अध्यक्षतामे हो से उत्तम। अतएव ई अग्रिम कमीटी अथवा महासभाक वार्षिक अधिवेशन धरि स्थगित राखल गेल।

मैथिल डाइरेक्टरी मुद्रित देखि सभासद लोकनि बड़े आनन्द ओ सन्तोष प्रकट कयलन्हि। निश्चय भेल जे पाँचप्रति डाइरेक्टरी कीनल जाय और लाट साहेब तथा कलक्टर लोकनिक ओतय पठाओल जाय।

आगामी कमीटी मैट्रिक्युलेशन परीक्षाफल प्रकाशित भेला पर पुनः होयत ई स्थिर कए तथा सभापतिकेँ धन्यवाद दए सभा विसर्जित भेल।

(मि० मिहिर मण्डल ९ प्रकाश १७, २८ जुलाई १७)

एहि उद्धरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे महासभाक कार्यमे शिथिलताक अनुभव कार्यसमितिक सदस्य लोकनि सेहो करय लागल छलाह संगहि कार्यसमितिमे केहन-केहन व्यक्ति रहथि। इहो ज्ञात होइछ जे कोनो मैथिल डाइरेक्टरी छपल छल, परन्तु के छपने छल तथा महासभा ओकर प्रति कीनि लाट साहेबकेँ कोन उद्देश्यसँ पठयबाक इच्छुक छल से प्रश्न अनुत्तरिते रहि जाइत अछि।

एकटा विज्ञापन छपल भेटैत अछि— "मैथिल महासभा कार्य-कारिणी सभाक अधिवेशन रविदिन २ सितंबर १९१७मे ३ बजेसँ

रमेश्वरलता विद्यालयमे होएत कार्यकारिणी सभाक सभ्यगण कृपा कै उपस्थित होथि । श्रीकपिलेश्वरमिश्र, मन्त्री मै० महा०

विषय :—बिहार तथा ओड़ीसाक म्यूनिसिपल बिल तथा अन्यान्य विषय जे उपस्थित होएत ताहि पर विचार ।

(मि० मिहिर २५ अगस्त १९१७ ई० मण्डल ९ प्रकाश २१)

उपर्युक्त सूचतानुसार जे बैसक भेल तकर विवरण निम्नांकित थिक—

उक्त कमीटीक एक अधिवेशन गत रविक दिन स्थानीय रमेश्वरलता विद्यालय मध्य भेल छल । सभापतिक आसन पचाढ़ीक महन्त श्रीयुत् राजेश्वरदासजी ग्रहण कयने छलाह । म्यूनिसिपैलिटीक विषयमे गवर्नमेन्ट प्राचीन आईनक संशोधन चाहैत छथि । तकरा प्रसंग महासभासँ सम्मति पूछल गेल छैक । ताहि विषयमे ई स्थिर भेल जे गवर्नमेंटसँ किछु और समय एहि सम्बन्धमे विचार करक हेतु मांगल जाय, से यदि नहि देथि तँ उचित सम्मति लिखल जाइन्हि । सम्मति करक हेतु निम्नलिखित सज्जनक एक कमीटी नियुक्त भेल । पं० श्रीकपिलेश्वरमिश्र, बाबू कालीप्रसादझा, बाबू रामकृष्णझा बी० एल०, बाबू हरिनन्दनदास तथा बाबू रमानन्दमिश्र । (मि० मि० मण्डल ९ प्र० २३.८. सितं० १७ ई.)

एहि उद्धरणसँ सिद्ध होइत अछि जे ताहि समय धरि महासभाकें ततेक व्यापकता भऽ गेल छलैक जाहि कारणें तत्कालीन वृटिश सरकारक अधिकारी कोनो स्थानीय निकायक कानूनकें संशोधित करबाक हेतु महासभाक सम्मति प्राप्त करब उचित मानैत छलाह ।

समय-समय पर कर्त्तव्य बुद्धिसँ महासभा क्षेत्रक हेतु किछु-किछु काज अवश्य करैत रहल । यथा स्वतन्त्रता भेटलाक पश्चात् देशमे भाषाधार प्रान्त निर्माण प्रक्रिया आरम्भ भेलैक तँ सुनल अछि जे पृथक मिथिला प्रान्त बनयबाक हेतु महासभाक दिससँ एक मेमोरेंडम तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, प्रधान मन्त्री, गृहमन्त्री, आयोगक सदस्य लोकनि आदिकें देल गेलनि, परन्तु जखन पृथक् आन्ध्रप्रान्त बनयबाक हेतु 'रामुलू' अपन प्राणोत्सर्ग कयलन्हि तखन जा कऽ केन्द्र सरकारक ध्यान ओहि दिस आकृष्ट भऽ सकलैक तेहना स्थितिमे एक स्मार-पत्र ढेप जकाँ फेकि देलासँ की परिणाम होयबाक सम्भावना से स्वयं ऊह्य थिक । ओना महासभाक उद्देश्य सर्वथा राजनीति-निरपेक्ष रहलैक आ ई समस्या सब तरहें राजनीति-सापेक्ष थिक ।

एहिना भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीओ भाषाके अपन न्याय्य अधिकार प्राप्त करयबाक हेतु सम्पूर्ण भारत तथा विदेशोमे मैथिलीक विकास कार्यमे लागल शताधिक संस्था प्रस्ताव पारित करैत आबि रहल अछि। मैथिल महासभा सेहो १९६९ ई०में "भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिली किएक ?" नामक ६६ पृष्ठात्मक एक पुस्तक मान्य विद्वान् डॉ० श्रीजयधारीसिंहसँ लिखवाय प्रकाशित कयलक, परन्तु ईहो विशुद्ध राजनीतिक प्रश्न थिक आ जेना उपरे कहल गेल अछि जे महासभाकेँ राजनीतिसँ ने कोनो प्रयोजन रहलैक ने छैक तथापि जे एकर उद्देश्यमे मिथिलाभाषा, साहित्य ओ लिपिक सरक्षण-संबर्धन तथा राष्ट्रिय हितक अविरोधेन मिथिला मैथिल-मैथिलीक हित-साधन उल्लिखित अछि तेँ अपन कर्त्तव्यक पालन कयलक। एहि विदेहक भूमिमे गीताक ई वाक्य— "कर्मण्येवाधिकारस्ते न फलेषु कदाचन"क पालन सर्वथा उचिते थीक। फलप्राप्तिक हेतु चाही उत्साही ओ समर्पित कार्यकर्त्ता जकर सबदिनसँ अभावे रहल अछि। जाहि कोनो राजनीतिक पुरुषकेँ अवसर भेटबो कयलनि तनिका लोक-निक दृष्टिमे ई कोनो महत्त्वपूर्ण विषय वा प्रश्न छलनिहेँ नहि।

सम्पूर्ण मिथिले नहि प्रत्युत मिथिलासँ वाहरो, जतय मिथिलावासी मैथिलीभाषी बसैत वा रहैत छथि तथा मिथिलाक मकरन्दानुसारि पंचांगक आधार पर मुण्डन-उपनयन, विवाह-द्विरागमन, पाबनि-तिहार, व्रत-उपासना करैत रहलाह अछि. तनिका लोकनिकेँ एमहर भिन्न-भिन्न पतड़ामे मतभिन्नता ओ द्वैध विचार दूदिना पावनि छापल देखला पर एहिपरसँ आस्था टूटि रहल छनि। महासभाक वर्त्तमान निष्ठावान मन्त्री प्रो० श्रीपुरुषोत्तमझा विद्यावाचस्पति, प० उपेन्द्रझा, पूर्वप्रधाचार्य महारानी अधिरानी रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय, दरभंगाक सत्परा-मर्शसँ १९७५ ई०सँ अद्यावधि महासभाक दिससँ एक पण्डित सभा प्रतिवर्ष आयोजित कऽ ताहिमे सब पंचाङ्गकारकेँ बजाय एकमतसँ पर्व-निर्णय करबाक हेतु प्रेरित करैत अयलाह अछि। उक्त सभामे उपस्थित पण्डित समुदाय आ ज्यौतिषी लोकनिकेँ महासभाक दिससँ यात्रा-व्ययक भार वहन कयल जाइत अछि।

वर्त्तमान महासभाक महामन्त्री १९६५ ई०मे राबबहादुर शिवशंकर झासँ कार्यभार ग्रहण कयलनि। तहियासँ एहि संक्षिप्त इतिहास लेखनक

समय धरि महासभाक कार्यकलापक जे सूचना उपलब्ध करौलनि से उपर्युक्त कार्यक अतिरिक्त निम्नांकित अछि।

१९६५ ई०मे सौराठ सभाक अवसर पर महासभाक दिससँ श्रीराजेश्वरमिश्र अधिवक्ताक नेतृत्वमे तत्कालीन शिक्षामन्त्रीक समक्ष अबिलम्ब मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना करबाक मांग रखलाक कारणेँ प्रतिक्रियास्वरूप श्रीराजेश्वरमिश्र सहित अनेक व्यक्ति बन्दी बना लेल गेलाह, हुनका लोकनि पर मोकदमा चललनि। महासभा सभक जमानति करौलक क्रमशः सब अभियुक्त ताहिमे मुक्त कराओल गेलाह;

१९६६-६७ ई०मे वर्त्तमान कोशी प्रमण्डलक सब जिलामे महासभाक शाखा गठित कयल गेल, जाहि सब शाखाक स्थान ओ मन्त्री लोकनिक नाम निम्नलिखित अछि—

स्थान	मन्त्रीक नाम	स्थान	मन्त्रीक नाम
१. सहरसा	प्रो. उमेश मिश्र	८. कर्णपुर	श्रीचन्द्र मोहन ठाकुर
२. सुपौल	रामानुग्रह झा	९. सुखपुर	श्रीनीलाम्बर झा
३. मधेपुरा	श्रीचन्द्र मोहन झा	१०. वीरपुर	श्रीबदरीनारायणझा 'विप्र'
४. वनगाँव	श्रीवीरेन्द्र खाँ	११. गोविन्दपुर	श्रीशोभाकान्त मिश्र
५. महिषी	श्रीचन्द्रकान्तमिश्र	१२. फारविसगंज	श्रीनित्यानन्दलाल दास
६. पड़री	श्रीशिवचन्द्र झा	१३. भद्रेश्वर	श्रीप्रेमलाल मिश्र
७. चैनपुर	श्रीहरेकृष्ण मिश्र	१४. बलुआ बाजार	×

तत्कालीन सहरसा जिलाक गाम-गाममे महासभाक सन्देश पहुँचाओल गेल तथा प्रत्येक गामसँ मैथिलीकेँ अष्टम सूचीमे स्थान देबा लेल पोस्टकार्ड अभियान चलाओल गेल जे १९६८ ई० धरि निरन्तर चलैत रहल। एही प्रकारेँ सीतामढ़ी क्षेत्रमे महासभाक कार्यकर्त्ता लोकनि कोइली नानपुर, पकड़ी, ओइनी आदि विभिन्न गाममे जा-जा महासभाक उद्देश्यसँ लोककेँ परिचय करौलनि तथा मातृभाषा मैथिलीक महत्त्व ओ एकर गौरवमय इतिहाससँ अवगत करबैत पोस्टकार्ड अभियानमे सहयोग देबाक हेतु प्रेरित कयलनि। ई कार्यक्रम १९६९ धरि चलैत रहल।

अप्रैल १९६७ ई०मे मैथिलीकेँ द्वितीय राजभाषाक रूपमे मान्यता देबाक आग्रह बिहार सरकारसँ महासभा द्वारा कयल गेल।

१९८१ ई०मे जनगणनाक अवसर पर दरभंगा ओ मधुबनीक सिनेमा हॉल सबमे मैथिली भाषीकेँ जागरूक बनयबाक हेतु स्लाइड पर 'मातृभाषाक कालममे अपन मातृभाषा मैथिली लिखाउ' ई लिखबाय प्रदर्शित कराओल गेल।

१९९४ ई० मे मैथिलीकेँ भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान देबाक हेतु प्रधान मन्त्रीकेँ पुनः स्मारपत्र पठाओल गेलनि जकर ५ प्रति श्रीप्रणव मुखर्जीकें हुनक दरभंगा आगमनक अवसर पर देल गेलनि संगहि मिथिलांचलसँ निर्वाचित केन्द्रीय मन्त्रि मण्डलक सदस्य श्रीमती कृष्णाशाही तथा श्रीरामेश्वर ठाकुरकेँ समर्पित कऽ मैथिलीकेँ अपन न्याय्य अधिकार देअयबाक अनुरोध कयल गेलनि।

ओहीवर्ष विद्यापति सेवा संस्थानक नेतृत्वमे संसदक समक्ष अनेक दिवस व्यापी धरना ओ प्रदर्शनक आयोजन भेल छल, ताहि अवसर पर महासभा द्वारा आर्थिक सहयोगक संग नैतिक समर्थन देल गेल।

महासभाक अधिवेशन

महासभाक नियमावलीमे उल्लिखित अछि जे महासमाक साधारण अधिवेशन चैत-वैशाखमे भेल करत। वार्षिक अधिवेशनार्थ महासभाक आह्वान करबाक अधिकार नियमावलीक अनुसार प्रान्तीय सभा सबकेँ छलैक, परन्तु उपलब्ध विवरण सभक आधार पर निश्चितरूपेँ कहल जा सकैछ जे ई कोनो अनुल्लंघनीय नियम नहि छल। जाहि व्यक्ति वा समाजकेँ ई उत्साह होइत छलैक जे हमरा गाम वा क्षेत्रमे मिथिलेश आबथि से व्यक्ति वा समाज महासभाक अधिवेशनमे जाय अग्रिम अधिवेशन करबाक निमन्त्रण महासभाकेँ दैत छलथिन, महासभा द्वारा निमन्त्रण स्वीकार भेला पर ओ व्यक्ति वा समाज अपना क्षेत्रमे स्वागत समिति संगठित करैत छलाह ओ स्वागत समिति सभामंचक निर्माणसँ लऽ आगत समस्त प्रतिनिधि लोकनिक आवास भोजनादिक सम्पूर्ण व्यवस्था करैत छल।

यद्यपि नियम छल जे प्रतिवर्ष महासभाक अधिवेशन होयत, आरम्भिक किछु वर्ष धरि बड़े उत्साहसँ होइतो रहल, परन्तु बादमे शिथिलता अबैत गेल जकर बिवरण यथा स्थान आगाँ देल जायत। सम्प्रति निम्नांकित उद्धरण एहि उक्तिक पुष्टिमे देखल जा सकैछ। एकर शीर्षक अछि—

"मैथिल श्रीमान् तथा तदुत्तराधिकारी" — एहिमे कहल गेल अछि —

"थोड़ेक दिनधरि देश-दशाक विचारैक हेतु मै० महासभा वर्षमा दिन पर होइत छल जाहिमे अपन वेषभाव धारण कैने स्वदेशीय सब लोकके देखि धैर्य होइत छल किन्तु तेहन गण्डमूलमे ठानल गेल जे सब मनोरथ लटकले रहल।' (मि० मोद, उद्-१६२, ज्येष्ठ, १९२१ ई० पृ० १७)

महासभाक अधिवेशन कहिया कहिया ओ कतय कतय भेल ताहि सभक प्रामाणिक समस्त विवरण उपलब्ध नहि भेल, जे भेवो कयल ताहूमे किछु भ्रामक भऽ सकैत अछि तथापि एहि आशासँ तकर उल्लेख कयल जा रहल अछि जे जखन पाठक वृन्दक समक्ष ई पुस्तक पहुँचतनि, तखन जनिका जे त्रुटि देखबामे औतनि अथवा अतिरिक्त विवरण ज्ञात होइनि से कृपापूर्वक महासभाक कार्यालयके वा लेखकके सूचित करताह जाहिसँ दोसर संस्करण (यदि भेल) मे तकर परिमार्जन ओ सन्निवेश कयल जा सकय।

महासभाक स्थापनावर्ष १९१० ई०मे एकर प्रथम अधिवेशन मधुबनीमे भेल छल, पुनः चारिम अधिवेशनक अतिरिक्त आरो अनेक अधिबेशन मधुबनीयेमे भेल अछि, एहिना पूर्णियामे सेहो दू गोट अधिबेशनक सूचना भेटैत अछि, एतावता ई प्रमाणित होइछ जे एको स्थानमे अनेक बेर अधिवेशन करब वर्जित नहि छल।

१	मधुवनी	प्रथम	१५	झंझारपुर	तैसम
२	सुपौल	द्वितीय	१६	घीघरडीहा	चौबीसम
३	×	×	१७	रोसड़ा	पचीसम
४	मधुवनी	चारिम	१८	मधुबनी	छब्बीसम
५	बेतिया	पंचम	१९	सरिसब	अठाइसम
६	मन्दार मधुसूदन	छठम	२०	सीतामढ़ी	उनतीसम
७	बेगूसराय	आठम	२१	मुज़फ्फरपुर	एकतीसम
८	मधुबनी	नवम	२२	दुर्गागंज	छत्तीसम
९.	×	×	२३.	राजनगर	सैतीसम
१०	मधेपुरा	दशम	२४	बेनीपट्टी	अठतीसम
११	काशी	एगारहम	२५	मधुबनी	उनचालिसम
१२	सँ १९म	अज्ञात	२६	पूर्णिया	चालिसम
१३	मुंगेर	बीसम	२७	मधेपुर	एकतालिसम
१४	दरमंगा	बाइसम	२८	अड़ाइडांगा (मालदह)	ब्यालिसम

२९ आगरा	तैंतालिसम	३२ देवघर	छियालिसम
३० डरहार	चौआलिसम	३३ अजमेर	सैंतालिसम
३१ विद्यापति नगर	पैंतालिसम	३४ सहरसा	अठतालिसम
		३५ सौराठ	अन्तिम १९६२

देवघरमे ४६म अधिवेशनक अवसर पर मन्त्री पं० शिवशङ्करझा, एडवोकेट जे ४५म वार्षिक विवरण प्रकाशित कऽ वितरित कयने रहथि तदनुसार निम्नलिखित स्थानमे निम्न निर्दिष्ट व्यक्तिक सभापतित्वमे महासभाक प्रान्तीय सभा सभक अधिवेशन भेल छल।

	स्थान	अध्यक्ष	मन्त्री
१.	फारविसगंज	श्रीदुखितलालमिश्र	
२.	पूर्णिया	श्रीव्रजमोहन ठाकुर	
३.	मुंगेर	श्रीदरवारीमिश्र	श्रीसुरेन्द्रनाथझा
४.	बाँका	श्रीमनराजझा	श्रीबाबूलालझा
५.	सीतामढ़ी	श्रीउपेन्द्र चौधरी	श्रीरामपदारथ चौधरी
६.	मालदह	श्रीअतुलचन्द्र कुमर	
७.	सुपौल	श्रीकमलनारायणझा	श्रीरामकृष्णझा 'किसुन'
८.	बासुकीनाथ	श्रीनेनालालझा	
९.	आगरा	श्रीवेनीप्रसादमिश्र	श्रीलोचन प्रसाद पाठक
१०.	अजमेर	श्रीबाबूलाल ठाकुर	श्रीरमाशंकर मिश्र
११.	कानपुर	सर श्रीहरगोविन्दमिश्र	
१२.	अलीगढ़	श्रीरामलालझा	
१३.	मथुरा	श्रीचिरंजीलाल श्रोत्रीय, ओकील	
१४.	मधेपुरा	श्रीअभिरमणझा	श्रीराजेन्द्रझा ओकील

आवश्यक ई छल जे प्रत्येक अधिवेशनक स्वागताध्यक्ष ओ स्वागत-मन्त्रीक नामक उल्लेख होइत। प्रत्येक अधिवेशनमे सभापति द्वारा देल गेल भाषण संकलित होइत– जाहिसँ तत्तत् समयक सामाजिक समस्यासँ लोक परिचित होइत। यदि विस्तारक भयसँ से सम्भव नहि तँ कमसँ-कम प्रत्येक वर्षक वार्षिक विवरणो उपलब्ध होइत तँ भाषणक संक्षिप्त सारभाग बुझबाक योग्य होइत। उदाहरणार्थ जेना एहि वार्षिक विवरणमे देल गेल अछि—"...... ..पश्चात् अध्यक्ष श्री ५मान् मिथिलेश

अपन भाषण पढ़लैन्ह । जाहिमे सामाजिक शिष्टाचारक अनन्तर वर्त्तमान युगमे जातीय संस्थाक कोन प्रकारक उपयोगिता अछि तकर विवेचना करैत संगठनपर पूर्ण प्रकाश देल गेल एवं राष्ट्रक संग योग-दान देब मैथिल मात्रकेँ अपन कर्त्तव्य बुझबाक चाही एकर सदुपदेश छल।" एहिना स्वागताध्यक्ष लोकनिक भाषणक संकलन आवश्यक छल। ओकर उपादेयता एहि दृष्टिसँ छैक जे जाहि क्षेत्रक लोक एतेक श्रम तथा एतेक व्यय कऽ महासभाक अधिवेशन बजबैत छलाह ताहू क्षेत्रक अपन किछु समस्या किछु आकांक्षा रहैत छलैक जे स्वागता-ध्यक्षक भाषणमे अभिव्यक्त होइत छलैक।

महासभाक मुख्य अधिवेशन द्विदिवसीय होइत छलैक। मुख्य अधि-वेशनक अतिरिक्त एकर चारिगोट उपांग छलैक १. विषय निर्धारिणी समिति २. विद्वत्परिषद् ३. कवि सम्मेलन ४. गायक सम्मेलन। विषय निर्धारिणी समितिमे खुला अधिवेशनमे उपस्थातव्य प्रस्ताव सब पर विचार कयल जाइत छलैक। एहि सभामे कार्यकारिणी समितिक सदस्यक अतिरिक्त जे क्यो भाग लेबऽ चाहैत छलाह तनिका ६) रु० अतिरिक्त शुल्क जमा कऽ प्रवेश-पत्र लेबऽ पड़ैत छलनि।

विद्वत्परिषदमे धर्मशास्त्र ओ ज्योतिष सम्बन्धी विषयमे जे मत-भिन्नता रहैत छलैक ताहि पर विचार-विमर्श कऽ मतैक्य स्थापित करबाक प्रयास कयल जाइत छलैक। वस्तुत: महासभा आन दृष्टिएँ भने शिथिल हो विद्वत्परिषद जे काज करैत छल से एखनहु करैत अछि, जकर उल्लेख पहिने भऽ चुकल अछि।

कवि सम्मेलन ओ गायक सम्मेलनक हेतु स्वागत कारिणी समिति महासभाक पदाधिकारी लोकनिक सहमतिसँ कवि ओ गायक लोकनिकेँ आमन्त्रित करैत छलनि तथा हुनका लोकनिक यातायात, आवास तथा समुचित सम्मानक व्यवस्था करैत छल। यदाकदा कोनो कोनो व्यक्तिकेँ विशेष उपाधि प्रदान कऽ सम्मानित सेहो कयल जाइत छलनि आ ई काज विद्वत्परिषद द्वारा होइत छल। उदाहरणार्थ सहरसा अधिवेशनमे प० काशीकान्तमिश्र 'मधुप'केँ 'कवि चूड़ामणि' तथा रघुनन्दनझा प्रसिद्ध रघूझाकेँ 'गायक चूड़ामणि' उपाधि एहने अवसर पर देल गेल छलनि।

ध्यातव्य जे ओना तँ महासभाक सम्पूर्ण कार्यकलापमे राजपण्डित बलदेवमिश्र विशेष सक्रिय रहिते छलाह, महासभाक नीति निर्धारणमे

मिथिलेशक प्रधान परामर्शदाता यैह छलथिन, तथापि विद्वत्परिषदमे हिनक वर्चस्विता अनिर्वचनीय छलनि। भाषणकलामे हिनकर पटुता तथा वाणीमे ओजस्विता अतुलनीय छलनि तेँ अधिवेशनक अन्तमे धन्यवाद देबाक भार सबठाम हिनके पर देखलिऐनि। साधारणतः धन्यवाद ज्ञापन आरम्भ होइते सभासद क्रमशः उठऽ लगैत छथि, हिनकर विशेषता छलनि जे दूरस्थो लोक आबि कऽ जमि जाइत छलाह। अन्यान्य वक्ता ध्वनि विस्तारक यन्त्रक शरण लैत छथि, ई कहिओ ध्वनि विस्तारक यन्त्रक आश्रय नहि लेलनि तथापि सहस्राधिक संख्यामे उपस्थित श्रोता हिनक भाषण रुचि ओ मनोयोगसँ सुनल करथि। तेँ अपना समयक प्रसिद्ध कर्मकाण्डक विद्वान पण्डित पद्मनाभमिश्र कहथिन– ई राजपण्डिते नहि पण्डितराज सेहो छथि। कवि सम्मेलनमे मुख्यतः कविशेखर बदरीनाथझा, कविवर सीतारामझा, सरसकवि ईशनाथझा, कविचूड़ामणि प० काशीकान्तमिश्र 'मधुप', प० जीवनाथझा 'विद्याभूषण', आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' प० काशीनाथ ठाकुर 'कलेश' पछाति एहि पंक्तिक लेखक अवश्य आमन्त्रित होइत छलाह।

महासभाक पदाधिकारी

जेँ हेतु सभापतिक आसन मिथिला राजवंशक हेतु आजीवन आरक्षित छल तेँ सभापतिक नामावलीमे कोनो विभ्रम नहि अछि। हँऽ केवल महाराज कुमार जीवेश्वरसिंह नियमानुसार महाराजाधिराज कामेश्वरसिंहक देहावसानक बाद सभापति निर्वाचित भेलाह, किन्तु एहिमे रुचि नहि रहलाक कारणेँ एहि पदसँ त्यागपत्र दऽ देलनि, अन्यथा जे सभापति भेलाह से आजीवन एहि भारकेँ वहन करैत रहलाह।

१. संस्थापक सभापति महाराजाधिराज रमेश्वरसिंह १९१०–१९२९ई.
२. महाराजाधिराज कामेश्वरसिंह १९२९–१९६२ई.
३. महाराज कुमार जीवेश्वरसिंह १९६२-१९६५ई.
४. राजकुमार श्रीशुभेश्वरसिंह १९६५–१९९८ई.
५- श्रीभक्तिनाथसिंह ठाकुर १९९९ वर्त्तमान

महासभाक महामन्त्री सर्वप्रथम प० कपिलेश्वरमिश्र वकील निर्वाचित भेलाह, परन्तु कहियाधरि एहि पद पर रहलाह से सूचना अनुपलब्धे रहल। प० कपिलेश्वरमिश्रक बाद प० गङ्गाधरमिश्र निर्वाचित भेलाह। हुनको कार्यकाल कहियासँ कहियाधरि रहलनि से ज्ञात

नहि भऽ सकल। केवल ई ज्ञात भेल जे मिश्रजीके आधुनिक शिक्षाक विकास हेतु मिथिलाक प्रमुख केन्द्र दरभंगामे एक कालेज होयब नितान्त आवश्यक प्रतीत भेलनि तेँ ओ प्राणपणसँ एहि दिशामे लागि गेलाह : महासभाक कार्य शैथिल्यसँ थोड़ेक निराश सेहो भऽ गेल छलाह। तेँ तखन मिथिलेशक अनुरोधेँ तथा राजपण्डित बलदेवमिश्रक आग्रहेँ राय बहादुर प० शिवशंकरझा महामन्त्रीक भार ग्रहण कयलनि। एतेक समय धरि एहि पद पर विधिवेत्ते लोकनि रहलाह, परन्तु महाराजाधिराज कामेश्वरसिंहक निधन तथा अपन बार्द्धक्यक कारणेँ रायबहादुर अपनाकेँ एहि पदसँ मुक्त कयलनि। तदुत्तर वर्त्तमान मन्त्री प्रो० श्रीपुरुषोत्तमझाक माथपर ई भार लादल गेलनि जे कार्यकर्त्ताक अभाव तथा अपन बार्धक्यक कारणेँ त्यागपत्र दऽ चुकल छथि जे स्वीकृतिक प्रतीक्षामे छनि। ध्यातब्य जे २५ जुलाइ ९९के महासभाक पुनर्गठन भेल अछि, जाहिमे श्रीचतुरानन मिश्र सर्वसम्मतिसँ महामन्त्री निर्वाचित भेलाह।

एही क्रममे किछु ओहि विशिष्ट लोकक नामोल्लेख कऽ देव कृतज्ञता ज्ञापन स्वरूप आवश्यक प्रतीत होइछ जे लोकनि महासभाक कार्यमे अपन विशेष रुचि रखैत सहयोग करबामे तत्पर रहैत छलाह। भऽ सकैछ एहिमे अल्पज्ञता प्रयुक्त किछु नाम छुटिओ जाय तदर्थ क्षमायाचना पूर्वक नामोल्लेख कयल जाइत अछि यथा —

वाबू तुलापतिसिंह, प० के० सो० मिश्र, कुमार गंगानन्दसिंह, प० जीवनाथ राय, हरिनन्दन दास, बदरीनाथ उपाध्याय, मुंशी रघुनन्दन दास, म० म० मुकुन्दझा बख्शी, राजेश्वर दास, (महन्त पचाढ़ी) त्रिलोचनझा (बेतिया), ब्रजमोहन ठाकुर (पूर्णिया), वेदमित्र मिश्र दोहद (गुजरात), प्रमथनाथ मिश्र, अतुलचन्द्र कुमर मालदह, रमाशंकर शास्त्री अजमेर, कालीप्रसादसिंह चौधरि हसुआ (गया), कविशेखर बदरीनाथझा, कविवर सीतारामझा काशी, दीनानन्दमिश्र, नागेश्वरमिश्र, चतुर्भुज नारायण चौधरी, हरिवंशझा, शुकदेवदास, जीबछझा, कमलानन्दमिश्र, प० त्रिलोकनाथमिश्र, जनार्दन चौधरि, भोलालालदास, नरेन्द्रनाथ दास, दिनेश्वरमिश्र, रमानाथझा, तन्त्रनाथझा, काशीकान्तमिश्र 'मधुप', तारानन्दझा, श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन', जीवानन्द ठाकुर इत्यादि।

एहिठाम जगदानन्द मिश्रक नामोल्लेख करब सेहो आवश्यक प्रतीत होइछ जे आजीवन महासभाक किरानी रहलाह तथा महासभाक पर्याय बनि गेल छलाह। महासभाक सम्पूर्ण कार्यालय हिनके संग रहैत छलनि।

हिनक आकस्मिक देहावसानक परिणाम ई भेल जे महासभाक सम्पूर्ण कागजात हिनका संगहि विलुप्त भऽ गेल। से एतेक दूरधरि जे महासभाक अपन भूमि ओ भवन तँ छैक, रसीद सेहो कटैत छैक, परन्तु मूल दस्तावेज एखनहु अनुपलब्धे छैक।

कार्य कलापक समीक्षा

नाम तँ एकर राखल गेलैक व्यापक—'मैथिल महासभा' परन्तु परिधि राखल गेलैक अतिसंकीर्ण। मैथिल शब्दक व्युत्पत्ति—'मिथिलायां भवः मैथिलः' केर अनुसार मिथिलामे बसनिहार प्रत्येक जाति, प्रत्येक वर्गक हेतु एकर द्वार उन्मुक्त रहबाक चाहैत छलैक, परन्तु एकर नियमावलीमे एकर अधिकार क्षेत्रक प्रसंग स्पष्टरूपसँ उल्लिखित छैक—

'एहि महासभाकेँ मैथिल ब्राह्मण तथा कर्ण कायस्थक समस्त विषय मध्य प्रतिनिधि रूपेँ कार्य करबाक अधिकार होएतैक।'

एहि प्रकारेँ ई सामाजिक संगठन नहि भऽ एक जातीय संगठन बनि गेल। एकर विरुद्ध अनेक दिशासँ अनेक ठाम, अनेक बेर आवाज उठाओल गेल, से प्रायः पहिले अधिवेशनक बाद। ई अनुमान करबाक आधार सुपौलमे आयोजित द्वितीय अधिवेशनक अवसर पर प्रकाशित विज्ञापने थिक। उक्त विज्ञापनक उल्लेख पूर्वमे भेल अछि। ओहिमे कहल—'एहि वर्ष मैथिल ब्राह्मण तथा कर्ण कायस्थ भिन्न अन्यान्य महाशयगण अर्थात् श्रीमान् राजा बरुआरी प्रभृति आमन्त्रित होयताह।' —वाक्य अनुमानकेँ पुष्ट करैत अछि। दोसर प्रमाण स्वरूप निम्नांकित वक्तव्य उपस्थित कयल जा ककैछ—

'मैथिल ककरा कही'

परम खेदक विषय जे मिथिलाक रहनिहार लोकनि मैथिल संज्ञासँ बंचित राखल गेल छथि। संसारक भौगोलिक विषय पर विचार कैला सन्ता ई बुझल जाइत छैक जे जाहि देश वा प्रान्तमे-जे लोकनि बसैत छथि हुनक नामकरण ताहि देशानुसार होइत छैन्हि किन्तु मिथिलामध्य यद्यपि ब्राह्मण, क्षत्रिय, भूमिहार, कायस्थ आदि नानावर्णक लोक अति प्राचीन कालसँ रहैत छथि ओ मिथिला भाषा बजैत तथा अपन दैनिक कार्य करैत छथि ताहू पर 'मैथिल' शब्द एहन परिमित कय देल गेल

छैक जे ओहि शब्दसँ तिरहुतिया ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थक अतिरिक्त अन्य समाजक लोकक बोध नहि होइत अछि।

मैथिल महासभा एहि प्रान्त मध्य स्थापित अछि, वर्षाभ्यन्तर प्रतिवर्ष वैसति अछि। नाना विषय पर विचारो होइत छैक। किन्तु अद्यावधि सभाक एकोगोट प्रस्ताव नहि भेलैक अछि जाहिसँ ई प्रकट होइत जे मिथिलामध्य जे अधिवासी छथि सबहिगोटा मैथिल छथि सभक मध्य मिथिलाभाषाक प्रचार हो। एहना स्थितिमे मैथिल समाजक अग्रगण्य लोकनि कोना मिथिला भाषाक उन्नति तथा मिथिलाक आचार-विचारक प्रचारक आशा रखैत छथि। सुतरां एकरा यदि कपोल कल्पना बुझना जाय त ताहिमे कोनो टा अत्युक्ति नहि।

ई सर्वसिद्ध छैक जे कोनो देशक अथवा प्रान्तक सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, कायिक तथा मानसिक उन्नति नहि भय सकैछ जा तक ओहि देश वा प्रान्तक प्रत्येक वर्णक मनुष्यमात्र एकसूत्रभे संगठित नहि कयल जाय। मैथिल सभा मध्य विशिष्ट दिग्गज विद्वान लोकनि छथि। हुनक सर्वतोभावेन मुख्य कर्त्तव्य होयबाक उचित जे आगामी सभा मध्य उपस्थित विषयक विचार करथि हम ई आशा करै छी जे मैथिल लोकनि एहि विषय पर अवश्य ध्यान देताह।

ठाकुर, धर्मलालसिंह
सम्पादक—किसान केसरी

(श्री मैथिली, वर्ष २ अंक ७, पृ० २३)

परन्तु सामन्तवादी युग रहलाक कारणेँ एहिपर ध्यान नहि देल गेल। एकर दुष्परिणाम मिथिलाक लोकजीवन पर दिनानुदिन अधिकसँ अधिकतरे होइत दृष्टिगोचर होइछ। मैथिल शब्द ब्राह्मण धरि सीमित भऽ गेल। मिथिलामे बसनिहार अन्य जातिक लोक अपनाकेँ मैथिलेतर मानय लागल। समय जहिना जहिना ससरैत गेल अछि, राजनीति समाजकेँ तोड़ैत गेल अछि, फलतः मैथिली मिथिलाक जन-जनक एकमात्र भाषा थिक, परन्तु राजनीतिक कारणेँ अन्यान्यवर्ग मैथिलीकेँ अपन मातृभाषा स्वीकार करबाक हेतु प्रस्तुत नहि अछि। यद्यपि ई सर्वमान्य तथ्य थिक जे अपन परिवार ओ समाजमे परस्पर मैथिलीएक व्यवहार करैत अछि, एतेक धरि जे अधिसंख्यक निरक्षर व्यक्ति

मैथिलीक अतिरिक्त आनभाषा बाजिओ ने सकैत अछि, तथापि अपनाकेँ मैथिलीभाषी मानबाक हेतु प्रस्तुत नहि अछि।

शिक्षाक प्रचार ओ प्रसारमे मातृभाषाक माध्यम सरलतम मानल गेल अछि, मातृभाषाक रूपमे मैथिलीकेँ मान्यता सरकारो द्वारा प्राप्त छैक, ततबे नहि, पाठ्य पुस्तक सब सेहो छापल गेलैक, किन्तु समाज एहिसँ लाभ उठयबासँ अद्यापि बंचिते अछि।

प्राचीन पत्र-पत्रिकाक अध्ययन अनुशीलनसँ आभासित होइत अछि जे महासभा अपन जन्मकालेसँ अनेक अन्तर्विरोधमे फँसि गेल– जकर संकेत प्रथम अधिवेशनक बादे म० म० डॉ० गंगानाथझा द्वारा प्रकाशित 'विचारणीय' शीर्षकमे भेटि जाइत अछि, जकर उल्लेख पहिने कयल जा चुकल अछि।

सुपौलमे आयोजित द्वितीय अधिवेशनक प्रसंग प्रकाशित विज्ञापनक अनुसार यथासमय अधिवेशन सम्पन्न तँ भेल, परन्तु कुमार विश्वेश्वर सिंहकेँ अकस्मात अस्वस्थ भऽ गेलाक कारणेँ आजीवन सभापति महाराजाधिराज रमेश्वरसिंह उपस्थित नहि भऽ सकलाह। ओ उपस्थित भेलाह दोसर दिन संध्याकाल। ताहिसँ पूर्व जे कोनो कार्यवाही भेल ताहिमे सभापतिक आसन रिक्ते रहल। एहि प्रसंग प० बदरीनाथ उपाध्याय द्वारा लिखल 'जिज्ञासा' द्रष्टव्य' थिक। शीर्षक थिकैक—

'श्रीयुत मन्त्री, मैथिल महासभासँ जिज्ञासा'

प्रिय मान्यवर,

आगामिनी कार्यकारिणी सभामध्य निम्नलिखित प्रस्ताव करैक स्पृहा अछि, जकर उत्तर कृपा कै देल जाय ओ प्रस्ताव नं० १क रिपोर्ट छपाय सभाक नियत समयसँ दुइओ दिन पूर्व मेम्बर लोकनिकाँ जेना पहुँचन्हि से अवश्य कैल जाय।

१. ३१ मार्च धरि कतेक आय (आमदनी) कोन-कोन व्यक्तिसँ भेल ओ ताहिसँ कतेक कोन विषयमें व्यय (खर्च) भेल एकर सविस्तर परिगणन (हिसाब) छपाय कार्यकारिणी सभाक मेम्बर लोकनिक ओतै पठाओल जाय जाहिसँ आगाँ सब स्पष्ट रहै।

२. गतवर्ष मध्य जे किछु टाका हस्तगत (वसूल) भेल से ककरा अधिकारमें राखल गेल तथा अवशिष्ट कतै अछि? गतवर्षमे जे कोषाध्यक्ष (खजांचा) नियुक्त भेलाह ओ कार्य कैलन्हि न वा? टाका

हुनका अधिकारमे राखल गेल वा नहिँ ? नहिँ राखल गेल तकर की कारण ? की कोशाधिकारी अपन अस्वीकार प्रकट कैलन्हि ?

३. गतवर्ष जे खर्च भेल तकर अधिकार मन्त्रीकैं छन्हि की नहिँ ? यदि नहिँ तँ कियैक भेल ? 'वजेट' कोनो तैयार भै कार्यकारिणी सभासँ स्वीकृत भेल की नहिँ ? नहिँ भेल तँ कियैक ?

४. मन्त्रीक कार्यालय (आफिस)मे गतवर्ष कै गोटे 'किरानी' प्यादा ओ उपदेशक नियुक्त भेलाह ? हुनका लोकनिकें नियत करबाक अधिकार मन्त्रीकें छन्हि वा नहिँ ? यदि अधिकार नहिँ छन्हि तँ कियैक कैलन्हि ? भला उक्त कार्यकर्त्ता (कारिन्दा)क नियोजन (बहाली)सँ पूर्व कोनो सूचनो (नोटिसो) देल गेल छल ? नहिँ तँ कियैक ? यदि सूचना देल गेल तँ कतेक व्यक्ति कोन कोन कार्यक हेतु आवेदनपत्र (दरख्वास्त) देलन्हि हुनका लोकनिक यथार्थ वैह आवेदनपत्र (असल दरख्वास्त) सभामे प्रस्तुत कैल जाय ओ जे लोकनि नियत भेलाह हुनका लोकनिक नाम, ग्राम, जाति इत्यादि पूर्ण परिचय स्पष्ट कराबल जाय ।

५. कार्यकारिणी सभा गतवर्षमे नियमानुसार भेल की नहिँ ? तादृश (नियमानुसार) नहिँ होयबाक कारण श्रीमान् सभापति प्रभृति सभ्य लोकनिकें विदित कराबल गेल की नहिँ ? नहिँ तँ कियैक ?

६. कतेक गोटै सभा द्वारा उपजीवन (नौकरी)क हेतु आवेदन देलन्हि ओ ताहिमे कतेक गोटाकैं उपजीवन कतै कतै भेलन्हि ई सब स्पष्ट देखावल जाय ।

७. के के महोदय गतवर्षक सभामे कतेक साहाय्य (चन्दा) देब स्वीकार कैलन्हि ओ ताहि मध्य कतै कतैसँ स्वीकृत साहाय्य प्राप्त भेल ओ जे नहिँ प्राप्त भेल से कियैक ? इत्यादि सविस्तर लिखि कार्यकारिणी सभामे उपस्थित कैल जाय ।

८, अत्यन्त हर्षक विषय थिक जे द्वितीय मै० महासभाक अधिवेशन मध्य श्रीमान् लोकनिक परस्पर गतायात भेल, किन्तु इहो सखेद कहैक पड़ैत अछि जे श्रीमान् द्वितीय महाराज कुमारक क्लेशक कारणें सभापति श्रीमान् मिथिलेश महाराज बहादुर प्रथम ओ द्वितीय दिनमे नहिँ छलाह तखन सभापतिक आसन रिक्ते कियैक रहल अतएव तदर्थ अनेक प्रयासहु निश्चय नहिँ भेल तें ओ आसन

रिक्ते छल, तावता हमर अभिप्राय एतबे जे गतायात भेलहु पर परस्पर ईर्ष्या जकाँ भासित भेल तँ विचारि स्थिर कैल जाय जे भविष्यमे जखन कोनो कार्यवशात् मिथिलेश उपस्थित नहिँ होथि तखन येह (रिक्त आसन) स्थिति रहै वा नहिँ ? जाहिसँ पुनः कहिऔ श्रीमान् लोकनिमे मतान्तरक शङ्का नहि हो।

अपनेक कृपाभिलाषी
श्रीबदरीनाथ उपाध्याय (मि० मोद उद् ५६)

एही क्रममे अनाम एक दोसर जिज्ञासा ओहीठाम प्रकाशित अछि जकर शीर्षक थिकैक—किछु हमरो जिज्ञासा—तकर स्वरूप निम्नांकित थिक—

कहू मन्त्रीजी ! उपाध्यायजीक प्रश्न केहन ? हमरा पुछने तँ अग्निश्च वायुश्च··· ··· मनसा वाचा हस्ताभ्याम् इत्यादि, परन्तु आब कहू !

उपर प्रश्नकर्त्ताक ओतै थोड़ेक हमरो जिज्ञासा— अपने जे प्रश्न कै गेल छी, एकर अधिकार- अपनेकँ अछि वा नहिँ ? यदि अछि तँ कियैक ? नहिँ तँ कियैक कैल गेल ? अथ यदि तादृश अधिकार अपनेकँ अछि तँ हमरा कियैक नहिँ ? यदि अछि तँ हमरा एकौटाक उत्तर मन्त्रीजी नहिँ देलन्हि तँ अपनेकँ कियैक देताह ?

अपनेक पत्रक उत्तर कठिन अछि, हमर बड़ सोझ। औ मन्त्रीजी ! गतवर्ष मध्य अपने एकटा नियमावली मुद्रित करावल, ओकर रचयिता के ? की महासभाक नियमावली ओहने निपल-पोतल होइत छैक ? परिष्कारक लोक अपनेक दृष्टिगत क्यो नहिँ भेटलाह ? आब हम कतेको महोदय लोकनिसँ पुछैत छी जे जतै मन्त्रीजीक कार्य अपरिष्कृत ततै इतर लोकक कार्य केहन होएतैक ई अनुमान भै सकैत अछि वा नहिँ ? हमहि दोषी ? 'स्कालरशिप' ककरा देल गेलैक अछि ई पूछने रही वा नहिँ ? उत्तर (मि० मोदकँ के पूछै) किछु नहिँ। संस्कृतक छात्रमे ककरा ककरा 'स्कालरशिप' देलैक अछि ? जकरा देलैक ओ पढ़ैत अछि ? ओ कतै पढ़ैत अछि ? बिनु पढ़ले हमर भनसीया वा टहलूकँ देल तँ कियैक ? उत्तर पूर्ववत्। औ मन्त्रीजी ! अपने कार्यकारिणीसभामे ऐबाक हेतु २ कार्ड पठावल, किन्तु रक्ष रहल जे स्वयं नहिँ जाय पत्रे देल, की से पहुँचल ? भला, श्रीमान् मिथिलेश आबथि, अपने नहिँ आबी !!! ई तँ हमरा ताही दिन बूझि पड़ल जाहि दिन सभा विसर्जित कै श्रीमान् लोकनि छलाहे अपने 'दे बोरी' कैने रविक राति अहि लम्बोदर। किन्तु बजते अग्रवादी कहबितहुँ। अस्तु !

महासभा द्वारा उपजीवनार्थं जे क्यो आवेदनपत्र दैयै, ओ द्रव्ययुत रहै तँ स्वीकृत हो, अन्यथा नहिँ, ई कोन धर्मशास्त्र वा नीतिशास्त्रक नियम थिक ? हम की, प्रायः सब जनैत अछि जे अपनेक सदृश साहसी, सप्रतिभ ओ सहनशील अपनहि छी, यदर्थ सम्प्रति अपने धन्य धन्य कहल जाइत छी तावता ई नहिँ कहि सकैत छी सर्वत्र झोंकनहि जैऔक, बीचमेँ क्यो टोकल तँ वेह अग्निश्च.... .... ।

ओ महानुभाव ! 'मेम्बर' लोकनिसँ द्रव्य लेल गेल की नहिँ ? उक्त महाशयसँ कोना द्रव्य प्राप्त होइत ? इत्यादि कतेक अछि, परन्तु अपने लोकनि हमरासँ बिगड़ले छी, हम की कहू, हमर दुर्भाग्य.... . ।

(मि० मोद उद्‌गार ५६)

महासभाक कार्यकारिणी सभाक गतिविधि कोन प्रकारक छल, निम्नांकित विवरणसँ ताहि पर पूर्णरूपेँ प्रकाश पड़ैत अछि । ई विवरण एक प्रत्यक्षदर्शी द्वारा लिखल गेल अछि—

मै० महासभाक कार्यकारिणी सभाक अधिवेशन 'दरभंगा' नरगौना राजभवन मध्य (१८-१-११) आषाढ़ वदि ६ रवि दिन मध्याह्नोत्तर भेल । सभापति श्रीमान् मिथिलेश नियत समय पर (१।। बजे) उपस्थित भेलाह परन्तु आन आन कतेको सभ्य लोकनिकाँ पहुँचबामेँ किछु बिलम्ब भेल । प्रायः २।। बजे धरि जे क्यो ऐनिहार छलाह आबि गेलाह । सम्पूर्ण भवन लोकसँ परिपूर्ण छल । यद्यपि कार्यकारिणी सभाक सभ्य संख्या ताहिसँ आधा छल हो वा नहिँ तकर संशये छल, तथापि संभवतः 'कोरम' ३० (सभ्य)क पूर्ण भेल ।

पहिने किछु कालधरि निरर्थके वार्तालाप होइत कालक्षेप भेल । तदुत्तर प० श्रीबदरीनाथ उपाध्याय श्रोत्रिय अपन प्रश्नावली प्रारम्भ कैलन्हि । अनेक शङ्का समाधानादिक पश्चात् प्रायः सभ प्रश्नक एके उत्तर (किछु परिवर्त्तन - परिवर्धन कै) भेल जे "एतेक दिनधरि सभा संगठने होइत छल तेँ नियमानुसार कार्य-परिचालन नहिँ भै सकल, भविष्यमेँ होएत' एहि एकहि शान्ति प्रयोगेँ मन्त्री महाशयकाँ सातोग्रह स्वरूप सातो प्रश्नक निस्तार भै गेलन्हि । तावता कार्य एतबै भेल जे बाबू श्रीहरिकान्त चौधरि, बी.ए. बी. एल्.क स्थानमेँ बेतियाक बाबू श्रीहरिमोहनझा, बी. ए. बी. एल्. महासभाक कोशाध्यक्ष (खजांची) निर्वाचित कैल गेलाह ओ स्वीकार कैलन्हि तथा उक्त प० बदरीनाथ

उपाध्याय ओ मि० रा० कु० भू० बाबू श्रीतुलापतिसिंहक आग्रहसँ महा-सभा कोष सभापतिक नामसँ संरक्षित करबाक निश्चय भेल परन्तु बहुतो लोकसँ अनुमोदित नहिँ ।

तदुत्तर आगामिनी मै० महासभाक स्वागत कारिणी सभाक संगठन होमै लागल । अनेक सभ्यक नामो लिखल गेल । महन्त श्रीवंशीदासजी सभापति ओ बाबू श्रीहरिकान्त चौधरि सेक्रेटरी नियुक्त भेलाह । तत्काल अनुमान १७००) सै सँ किछु उपर चन्दा स्वीकृत भेल । पहिलुका कोष ओ हिसाब याच करबाक भार बाबू श्रीगणनाथझा, पं० बदरीनाथ उपा-ध्याय ओ श्रीअभेदझाकाँ देल गेलन्हि ।

तत्पश्चात् बेतियाक पं० श्रीत्रिलोचनझा प्रार्थना कैलन्हि जे मै० महासभाक प्रथमाधिवेशनमे श्रीमान् सभापति दश हजार टाका देब स्वीकार कैलन्हि । हमरा लोकनि जतै 'चन्दा' संग्रहार्थ जाइत छी, सब लोक उक्त द्रव्यक अद्यापि अप्राप्तिक कारणें धन देबामध्य अग्रपश्चात् होइत छथि तेँ उक्त द्रव्य अतिशीघ्र मैथिल महासभाक कोषमे जमा होयबाक थिक जाहिसँ

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत् तदेवेतरोजनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥

एहि वचनानुसार औरो लोक टाका देथि, परन्तु एकर किछु उत्तर क्यो नहिँ देलक, अर्थतः सभा तूष्णीम्भाव धारण कै लेलक ।

अनन्तर बेतिया प्रान्तिक सभाक लेखा स्वीकृत भेल । जाहिमे ७९) टाका आय ओ १८) टाका व्यय छल, अवशिष्ट ६१)मे ५०) मै० महासभाक कोषमे जमा भेल तदर्थ पं० त्रिलोचनझाकाँ धन्यवाद देल गेलन्हि ओ ११) टाका बेतिया प्रान्तिक कोषमे अवशिष्ट रहल । बेतिया प्रान्तिक 'बानूछपरा' ग्राम सभाक नियमावली मै० महासभासँ स्वीकृत भेल ।

तखन बाबू श्रीबिन्ध्यनाथझा, बी. ए. प्रस्ताव कैलन्हि जे भागलपुर लक्ष्मीपुरक 'जमीन्दार' लोकनि संस्कृत पाठशाला स्थापित कैलन्हि अछि जाहिमे अनेक मैथिल अध्यापक छथि ओ अनेक मैथिल पढ़ैत छथि अतएव उक्त 'जमीन्दार' लोकनिकैं मै० महासभासँ धन्यबाद देल जाइन्हि ई प्रस्ताव स्वीकृत भेल ।

रीगाक ज्योतिषी पं० श्रीकौशिकीदत्तझा प्रार्थना कैलन्हि जे विवाह सम्बन्धमे औखन गोलमाल होइत अछि तकर प्रतीकार कैल जाय, ताहि

पर जतै जतै सभा होइत अछि ततै ततै १०-११ गोट सज्जनक एक-एक 'कमेटी' कार्यनिरीक्षण हेतु नियत होएवाक विचार भेल । मिथिलेशक आज्ञानुसार 'सोराठ' सभाक हेतु पं० श्रीउमापतिझा पंजीकार, श्रीलूटन झा पंजीकार प्रभृति सज्जन लोकनि कमेटीक सभ्य निर्वाचित भेलाह । एहिमे एकगोटै बेतियाक सभ्य पं० श्रीगेनालालझा भेलाह एबम् अनेक कमेटीए संगठित भेल । नहिँ कहि एहि कमेटीसबहिसँ कतेक कार्य निर्वाह होएत ।

... .

सब भेल परन्तु सभामे उत्साहक बड़े स्वल्पता देखना गेल, सेक्रेटरीओ उत्साहहीने बूझि पड़लाह । जँ ई दशा रहल तँ मैथिल महासभाक कार्य चलबाक बड़े थोड़ आशा । पुनः जेहन जगदीश्वरीक इच्छा होएतन्हि, किन्तु लक्षण नीक नहि देखना गेल ।

एक दर्शक

(मि० मोद, उद्गार ५७)

ऊपर उद्धृत विवरणक उल्लेख करबाक आशय जे महासभाक मात्र दू गोट अधिवेशन भेल छल, तखनेसँ अनेक प्रकारक वैमत्य, कार्यमे शैथिल्य, पारस्परिक अविश्वास, आर्थिक शुचिताक प्रति सन्देह ओ मतमतान्तर दृष्टिगोचर होमय लागल छल । यद्यपि एकर जे कार्य योजना छलैक तकर कार्यान्वयन यदि निष्ठापूर्वक ओ तत्परतासँ होइतैक तँ यदि नहि सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्रक निवासी तँ कम सँ कम ब्राह्मण तथा कर्णकायस्थ ई दुइओ गोट जाति एक संगठित शक्तिक रूपमे अवश्य उभरि सकैत छल ।

मैथिल महासभा आरम्भमे वाह्य सदाचारसँ क्रमशः विमुख भेल जाइत ब्राह्मण ओ कर्णकायस्थ समाजके सजग करबाक हेतु उपदेशक लोकनिके नियुक्त कयने छल । एकर पुष्टि निम्नांकित बिवरणसँ होइत अछि—

"पं० श्रीदेवीदत्तमिश्र उपदेशक बेतिया प्रान्तमे वार्षिक चन्दा ४०) टाका संग्रह कैलन्हि ओ श्रीसुखमदत्तझा विद्यार्थीके वर्षदिन छात्र-वृत्ति देल गेलन्हि जाहिमे १०) टाका बानू छपराक सभापति पं० श्रीहरिदत्तझा ओ ६) टाका प्रान्तिक सेक्रेटरी पं० श्रीत्रिलोचनझासँ प्राप्त भेल तँ उक्त दूनू महाशयके ओ दूइ एक टाका वार्षिक चन्दा

देनहार दाता लोकनिकैं धन्यवाद।" (मि० मोद, उद्. ७८, पृ० १८)

एक दिस कोन प्रकारें बिन्दु-बिन्दु घटपूर्त्तिक प्रयास होइत छल तकर निदर्शन ओही अंकमे छपल एक समाचारसँ होइत अछि। समाचार अछि :—

"मैथिल महासभाक प्रान्तिक सभा बेतियामध्य श्रीनगरक पं० श्रीहरिनन्दनझाक बालक ओ भातिजक उपनयनमें ४) टाका ओ रानी-पुरक श्रीसाधुमिश्रक कन्यादानमे १) टाका सहायता प्राप्त भेल जाहि हेतु दूनू महाशयकाँ अनेकानेक धन्यवाद देल जाइत छन्हि यदि एहिरूपें सब मैथिल सज्जन एहि सभापर कृपादृष्टि राखथि तँ दीना महासभाक विशेष उपकार ओ दाता लोकनिकें असीम पुण्य ओ यशोलाभ हो।' दोसर दिस हजारक हजार सभाक अधिवेशनमे उद्घोषणा कयनिहार श्रीमान लोकनि पछाति गबदी मारि बैसि रहैत छलाह।

प्रसंगात् एहि पंक्तिक लेखकके मन पड़ैत छथिन राज दरभंगासँ सम्बद्ध तथा महासभासँ बेस रुचि रखनिहार बसैठ चानपुरा निबासी जनार्दन चौधरि जनिक ई उक्ति 'जँ नहि देबऽ पड़ैक तँ जनार्दन चौधरिक नामपर एकलाख सहायता लिखि लेल जाय जँ देबऽ पड़ैक तँ ई एक टाका नगदे जमा कऽ लेल जाय' जन-सामान्यमे बहुत चर्चित छल।

कहल गेल अछि जे महासभा उपदेशक लोकनिक नियुक्ति कयने छल ओ सब वेतन पबैत छलाह, परन्तु अपन कर्त्तव्यक प्रति पूर्ण निष्ठा-वान् नहि छलाह जे निम्नांकित विवरणसँ सूचित होइत अछि। विवरण एना अछि—

'खेदक विषय थिक जे बेतिया प्रान्तक अनेक गाममें पूर्ण मैथिलक बास अछि, जे अद्यपर्यन्त उक्त सभाक क्यौ 'मेम्बर' वा 'सेक्रेटरी' उद्देश्योपदेशार्थ पदार्पण नहि कैनें छथि तखन सभाक उन्नति कोना भै सकैत अछि। कतेक महाशय कहैत छथि जे हमरा लोकनिक काज दरबजै दरबजै फिरबाक नहिँ थिक, जकरा श्लाधा हो ओ नियत सभामें उपस्थित होथु। हा! जखन अहाँ उपदेशकर्त्ता छी तखन एहि सुअवसरमें गौरव करबाक नहिँ थिक। विचार करैत जाउ जे एत्तगोट श्रीमान् महाराज मिथिलेश स्वयं विश्वविद्यालयमें अतिमुद्राव्यय पूर्वक असीम परिश्रम धारण कैने छथि, विशेष कहाँधरि कहू स्वयं विचारैक थिक।

उक्त सभाक समस्त मेम्बर ओ कार्यसम्पादक सबहिसँ प्रार्थना अछि जे समस्त मैथिल जन अनाभ्यास नानाचारातिव्ययादि जनित अवनति निराकृति पूर्वक अभ्यस्त सदाचार मितव्ययादि जनित परमोन्नतिक प्राप्ति करथि एतदर्थ उक्त महासभा स्थापित भेल अछि, एहि मुख्य कार्यकेँ विस्मरण कै केवल चन्दाक टाका यैह कथनमात्र आन्दोलन भै रहल अछि। ई गौण कार्य मुख्य भेलासँ बहुतो व्यक्तिकेँ उत्कण्ठा बुझि पड़ैत अछि। अतएव मुख्य कार्यक दिशि विशेष उत्साहोत्पन्न करैत जाउ "तोर जनु बिकाय मोर घलुआ दे"।

श्रीबलभद्रझा, सेक्रेटरी, ग्रामसभा धमौरा
(मि० मोद, उद्, ८७, पृ० २२)

मैथिल महासभे नहि, प्रत्युत तथाकथित मैथिल जातिक ई स्वभाव बनि गेल अछि जे सभा समितिमे प्रस्ताव पारित कऽ थपड़ीक गड़गड़ाहटि सुनि अपनाकेँ कृतकृत्य मानि लेल। पारित प्रस्तावकेँ कार्यान्वित करबाक वा करयबाक हेतु लोककेँ कोन प्रकारेँ तत्पर रहि समय, श्रम, द्रव्य सब किछु लगायब आवश्यक होइत छैक से प्रायः ई समाज ध्यानमे कहिओ रखबे ने कयलक।

मधुबनीक महासभा अधिवेशनमे दू गोट प्रस्ताव 'योग्य मैथिल पुरस्कार' तथा 'मिथिला भाषाक उन्नति' पारित भेल छल, तकर परिणतिक प्रसंग किछु टिप्पणी भेटैत अछि जाहिसँ उपर्युक्त कथनक पुष्टि होइत अछि। टिप्पणी :—

'योग्य व्यक्तिक आदर सर्वत्र होइतहि छैक तखन योग्य मैथिल पुरस्कार विषयक प्रस्ताव जे महासभामे राखल गेल से अवश्य यैह त्रुटि देखिकय जे मैथिल श्रीमान् लोकनि अपना आश्रयमे मैथिलकेँ यथोचित आश्रय नहि दै छथि तँ ई प्रस्ताव पारित भेलासँ ओ लोकनि स्वजातिकेँ विशेषरूपेँ अपना ओहिठाम कार्यमे नियुक्त करताह। ई प्रस्ताव प्रथम मधुबनी महासभामे पास भेल और महासभाक मुख्य उद्देश्यमे राखल गेल, परन्तु तदनुसार कार्य कतेक भेल से महासभाक गतवर्षक वार्षिक रिपोर्टमे उल्लिखित भेल अछि। नीचाँ ओ उद्धृत कयल जाइत अछि–

ई प्रस्ताव यथार्थमे करबाक नहि अछि। ई प्रस्ताव भेलासँ बहुतो मैथिलेतर व्यक्ति मैथिल समाजसँ विरुद्ध छथि तथा एहि प्रस्ताव सँ अर्थ विचित्र लगवै छथि। मैथिल समाजक बहुतो समृद्धिशाली व्यक्ति

एहि पर ध्यान नहि दैत छथि। मैथिलेतर व्यक्तिगणक चेष्टासँ योग्य मैथिल पुरस्कारक बदलामे मैथिलक ओहिठाम मैथिलक तिरस्कार देखना जाइछ। ई प्रस्ताव मैथिल समाजकाँ अत्यन्त हानिकारक अछि। अतएव प्रार्थना अछि जे ई प्रस्ताव बहिर्गत कयल जाय।

एहिमे कोनो सन्देह नहि जे एहि प्रस्तावसँ लाभक अपेक्षा हानिये अधिक भेल। के एहन होयत जकरा स्वजातिप्रिय नहि होयतैक। अथवा स्वजातिकेँ सर्वथा बहिष्कृत कय सुखमय जीवन व्यतीत करत। तखन नोकर राखक समय मालिक अवश्य एकर ध्यान रखै अछि जे एहन व्यक्ति राखी जाहिसँ कार्य उत्तमरूपेँ चलय। ताहि स्थितिमे गुणक आगाँ स्वजातिक पक्ष रखनिहार बहुत कम्मे सज्जन होयताह। एहना अवस्थामे यद्यपि उक्त प्रस्ताव सर्वथा उचित तथापि लाभ ओहिसँ यथेष्ट नहि भेल। हानि ई भेल जे अन्य जातिक लोक बुझि गेलाह जे हिनक महासभा हमरा लोकनिकेँ बहिष्कार करबाक दृष्टिसँ ई प्रस्ताव रखलन्हि अछि, एहि दशामे मैथिल पृष्ठपोषक यदि अपनो जाति नहि होयतन्हि तखन जीविकाक क्षेत्रमे प्रवेश ओ कोना करताह। हमरा जनैत अन्य जातिअहुकेँ देश और समाजक हितैषिता विचारि मैथिलक सहायता करक चाहियैन्हि अपना जातिक कथे कोन।

(मि० मिहिर, १८ फरवरी १९१६ ई०)

एहि विचारमे वदतोव्याघात दोष तँ दृष्टिगोचर होइते अछि, महासभाक प्रस्तावोमे अदूरदर्शिता परिलक्षित होइत अछि।

एहि दूनू प्रस्तावक किछु अन्य टिप्पणी भेटैत अछि। टिप्पणीक शीर्षक अछि— 'प्रस्ताव कयनहि की' टिप्पणीमे कहल गेल अछि--

'योग्य मैथिल पुरस्कार' तथा 'मिथिला भाषाक उन्नति' ई दू प्रस्ताव जे मै० महासभा पास कयलक से सर्वथा उपयोगी छल ओ अछि, ताहिमे सन्देह नहि, परन्तु एहिसँ किछु कार्य नहि चलल प्रत्युत समाजकेँ भारी हानि पहुँचलैक। महासभाक आरम्भशूर पक्षपाती लोकनिकेँ एहि हेतु किछु भार और व्यय उठयबाक अभिप्राय अन्तःकरणमे नहि छलैन्हि, तखन उक्त प्रस्ताव नहिये करितथि ताहीमे समाजक उपकार छलैक कियेक तँ दूनू प्रस्ताव मैथिलकेँ आन आन समाजसँ फुटाय देलक। पूर्व मैथिलक प्रति ककरो द्रोह नहि छलैक परन्तु जखन योग्य मैथिल पुरस्कारक प्रस्ताव पास भेल तखन आन आन समाज बुझलक जे मैथिल

धनाढ्य आब हमरा लोकनिकें अपना ओहिठाम जीविका नहि देताह, स्वजातिहिक पालन-पोषण करताह। बड़े कुभाव एहिसँ ओहि सभक हृदयमे उत्पन्न भए गेलैक। एम्हर प्रस्तावकें कार्यमे परिणत कयनिहार केयो नहि। फल ई भेलैक जे मैथिल दूहूठामसँ गेलाह।"

(मि० मिहिर, मण्डल ६, प्रकाश ३३, १ दिसं॰१६१७ई.)

मिथिला मिहिरक एक सम्पादकीय टिप्पणी सेहो एहि विषय पर कयल गेल भेटैत अछि। टिप्पणीक स्वरूप निम्नाँकित अछि :—

कोनो एहन नव काजकें हाथमे लेब जकरा प्रतिपक्षी हास्यजनक आ असाध्य कहय आ फेर ओहि कार्यकें हाथमे रखने रहब और ओकरा सम्पन्न करबाक हेतु कोनोटा चेष्टा नहि करब बड़े तुच्छता और हृदय दौर्बल्य थिक। आठ वर्षसँ पूर्व मिथिला भाषाक प्रति प्रेम देखौनिहार मैथिल मात्र छलाह। एहि प्रेमक विरोध कयनिहार क्यो नहि छलन्हि। परन्तु जखन मैथिल महासभा संगठित भेल और मैथिल जाति अपन मर्यादा तथा गौरव स्थापित करबाक हेतु कर्त्तब्यनिष्ठ भए अपना मातृ-भाषाकें युनिवर्सीटीमे आसन दियेबाक प्रस्ताव उत्तोलित कयलक तखन हिन्दीक पक्षपाती लोक चारूदिससँ गर्जय आ ठहाका देबय लागल जे मिथिला भाषाक की बल छैक जे हिन्दीक आगाँ ओ ठाढ़ि होयत! मिथिलाभाषा शिष्ट लोकक भाषा नहि प्रत्युत एक छुद्र प्रान्तक गबारू भाषा थिक। महासभाक मातृभाषा विषयक उक्त प्रस्ताव एवं प्रकार एक विरोधी दल उत्पन्न कए देलक और एहि विरोधी दलमे बहुतो मैथिल नवयुवक जनिका हृदयकें जननी जन्म भूमिक गौरव बुद्धि स्पर्श नहिँ कयने छन्हि ओहो सम्मिलित भए गेलाह। अस्तु! सन्तोषक बात ई भेल जे विरोधी दलक चक्षु देखि मैथिल समाज भयभीत नहि भेल और मातृभाषाक प्रताव गहनहि रहल, भूमिपर पटकि नहि देलक। परन्तु क्षोभक विषय थिक जे विरोधी दलकें पराजित करबाक हेतु कोनो पुरुषार्थ अद्यापि हमर नेता लोकनि नहि कयलन्हि। एहि अकर्मण्यताक जे उपहास उपालम्भ भए रहल अछि से अवर्णनीय थिक। एहिसँ तऽ लाखकक्षे उत्तम यैह छलन्हि जे मिथिलाभाषा जाहिठाम छलि ताहिठाम ओकरा छोड़ि दितथिन। एक उत्तम पूज्य वस्तुकें आग्रह पूर्वक उठाय लेल आ तकर निर्वाह नहि करब एक बड़े गर्हित विषय थिक।

प्रसंगवश एतेक लिखि गेलहुँ परन्तु आइ मुख्य वक्तव्य ई अछि जे गतवर्ष पुर्णिया महासभामे मैथिली ग्रन्थ प्रकाशन कम्पनी ठाढ़ करबाक

जे प्रस्ताव पास भेल रहय तकर की कार्य एखनधरि भेल। नौ मास बीति गेल ओ कंपनी कतय अछि, कतय आफिस छैक और की कार्य भए रहल छैक तकर की उत्तर? कंपनीक मैनेजिंग डाइरेक्टर श्रीयुत् बाबू सुकदेव दास मुक्तार निर्वाचित भेलाह। मुक्तार साहेब अत्यन्त उत्साही आ स्वदेशानुरागी छथि ताहिमे सन्देह नहि। परन्तु तथापि कार्य किछु मात्र नहि भेल। मुक्तार साहेबसँ बहुतो बेर एहि विषयमे प्रश्न कैलियन्हि, हुनक उत्तरसँ यैह ज्ञात भेल जे एखन उक्त कम्पनीक प्रोस-पेक्टस पर्यन्त नहि तैयार भेल अछि। प्रोस्पेक्टस दस्तखतक हेतु कतिपय श्रीमान् लोकनिक समीप पठाओल गेलन्हि परन्तु श्रीमान् लोकनिकें ओहि पर हस्ताक्षर करबाक अवकाश नहि। अतएव एकक गोटा मासक-मास ओकरा अपना ओतए राखि लेलखिन। तखन वारंवार स्मारक पठेला पर वापस कयलथिन। एकटा श्रीमान तऽ ई उत्तर देलखिन जे युद्धक कारण हमरा एहि विषयमे पढ़बाक अवकाश नहि। जाहिठाम ई स्थिति बीति रहल छैक ताहिठाम अकर्मण्यताक दोष ककरा दी आ ककरा नहि ई बुझि नहि पड़ैत अछि। केवल एक मुक्तारे साहेब की करता तथापि चूप भए नहि रहि सकैछी अपन तथा अपना जातिक विषय अछि। श्रीमान लोकनि आन आन विषयमे हमरासँ उच्च छथि और बनल रहथि। परन्तु मातृभाषा हमर हुनक दुहु गोटाक एके अछि तखन हमरा जातिक श्रीमान भेने अवश्य हुनका उपर सहायता और आश्रयक दावी हमरा लोकनि रखैत छी। ईश्वरक कृपासँ हमर श्रीमान लोकनि पूर्ण विद्वानो छथि तखन मैथिल जाति मिथिलाभाषा अधोगतिये प्राप्त करय ई दुर्भाग्यक विषय थिक।"

(मि० मिहिर, मण्डल ६, प्रकाश २६। २६ सितं. १९१७ई.)

पहिने उल्लेख कयल गेल अछि जे विद्या प्रचारक विषयमे महा-सभाक विशिष्ट योगदान रहलैक, किन्तु ताहू विषयमे व्यवस्थितरूपें कार्य नहि होइत छल जकर आभास मिथिला मिहिरक एक सम्पादकीय टिप्पणीसँ होइत अछि। ध्यान देबाक विषय जे महासभाक सर्वोच्च पदाधिकारी मिथिलेश स्वयं छलाह तथा मिथिला मिहिर हुनक अपन साप्ताहिक पत्र छलनि, जकर नीति निर्धारक ओ स्वयं रहथि तथापि एहन सम्पादकीय टिप्पणी लिखल गेल जे कोनो पूर्वाग्रहवश अथवा विरोधभावसँ लिखल गेल हो से सम्भव नहि प्रतीत होइछ। अतः एहिसँ महासभाक कार्यकलापक शिथिलता सेहो परिलक्षित होइत अछि।

टिप्पणीक स्वरूप निम्नांकित अछि :—

"मैथिल महासभा द्वारा आओर कोनो टा उपकारी कार्य एहेन एखन धरि अनुष्ठित नहि भेल अछि जाहि हेतु ओकर कीर्तिगान कयल जाय। केवल वर्ष वर्ष विद्यार्थी लोकनिकें जे ओ छात्रवृत्ति दैत आयल अछि सैह टा एहन कार्य होइ छलैक जाहि कारण किछु सहानुभूति लोकक ओकरा प्रति उत्पन्न छैक। परन्तु एहिवर्ष देखि पड़ै अछि ओहू कार्यक परित्याग ओ कयलक। कियेक तँ परीक्षा सभक फल प्रकाशित भय गेलैक परन्तु वृत्ति वितरणार्थ कार्यकारिणी कमिटीक अधिवेशन अद्य-पर्यन्त नहि भेल। वास्तवमे महासभाक सेक्रेटरी प्रभृति पदाधिकारी अपन कर्त्तव्य सर्वथा विसरि गेल छथि और किछु टा कार्य नहि करै छथि। जखन यैह स्थिति अछि तखन महासभा केवल वार्षिक 'जलसा'क हेतु रहि गेल और कोनो कार्यक आशा ओकरासँ वर्त्तमान स्थितिमे करब व्यर्थ थिक। आगामी अधिवेशनमे महन्तजी पचाढ़ी एक सहस्र रुपैया देब स्वीकार कयने छथिन्ह। यदि ई रुपैया वैतनिक मन्त्री राखक मदमे लगाओल जाय और एक योग्य व्यक्ति राखि कय एक-दुइ वर्ष एकर परीक्षा कयल जाय जे ओहिसँ यथेष्ट लाभ होइ अछि वा नहि तँ ई वहुत उत्तम विषय होएत। कियेक तँ कइएक वर्षसँ एकर प्रस्ताव भय रहल अछि तें एकबेर अवश्य एकरा अजमयबाक चाही। अवैतनिक कार्य कयनिहार केओ दृष्टिगत नहि होइत छथि तखन वैतनिको यदि नहि राखल जाथि तँ महासभा समाप्ते बुझक चाही। सम्प्रति जाहिरूपें कार्य भय रहल अछि ताहिसँ कोनो आशा नहि, तखन वैतनिक मन्त्री रखने लोकके आशा छैक। अतएव अवश्य ई कार्य कर्त्तव्य थिक।"

(मि० मिहिर मण्डल ६, प्रकाश ३१, १७ नवंबर १९१७ई.)

महासभाक शिथिलताक प्रसंग एहिसँ ६ मास पहिनहु 'महासभाक शिथिलता' शीर्षकसँ निम्नांकित टिप्पणी कयल गेल छल। टिप्पणीमे कहल गेल छल :—

"पूर्निया अधिवेशनक बाद महासभाक दिससँ कोनो कार्य होएबाक समाचार अद्यापि प्राप्त नहि भेल। बूझि पड़ैत अछि जे एखन महासभा प्रगाढ़ निद्रामे निमग्न अछि। ई स्मरण होएत जे पुर्नियाक अधिवेशनसँ किछुए दिन पूर्व श्रीमान् मिथिलेशक इन्द्रभवनमे एक सभा भेल रहए जाहिमे महासभाक कइएक जिलाक मेम्बर मुख्य-मुख्य नेता लोकनि उपस्थित रहथि। ताहिमे निश्चय भेल छल जे महासभाकें विशेष

उपयोगी बनयबाक हेतु एक एहन कमिटी (समिति) बनाओल जाय जाहिमे चुनल चुनल उत्साही व्यक्ति मेम्बर रहथि। और ओ मेम्बर अपन सामर्थ्यानुसार कार्यभार स्वीकार करथि और तदनुसार परिश्रम पूर्वक जात्युपकारी कार्य कयल करथि। वास्तवमे बड़े ही उत्तम प्रस्ताव स्वीकृत भेल। ततेक उत्साह ताहि समय देखना गेल जे मेम्बर लोकनि जे सभ चुनल गेलाह ओ अपन-अपन स्वीकृत कार्य तत्क्षण ओहीठाम लिखौलन्हि। परन्तु प्रायः ८ मास व्यतीत भय गेल ने ओहि कमीटीक कोनो समाचार भेटल आ ने कोनो मेम्बर प्रतिज्ञात कार्य किछु कयलन्हि। बड़े ही शोच्य विषय ई थिक कि सभ्रान्त व्यक्ति लोकोपकारी कार्यक भार अपना उपर लेथि परन्तु कछु टा कार्य ओकर नहि करथि। जखन ई चालि हमरा नेता लोकनिक अछि तखन साधारण जन समाजसँ देशोन्नति सम्बन्धी कोन कार्यक आशा हम राखि सकै छी।"

(मि० मिहिर, मण्डल ९, प्रकाश ९, २ जून १९१७ई.)

एक खण्डित वक्तव्य सेहो प्राप्त भेल जाहिमे कहल गेल अछि :—

"………महन्थजी पचाढ़ी एक हजार रुपैया वैतनिक मन्त्री राखक हेतु देलन्हि तथापि मन्त्री राखल नहि गेलाह। महासभाक कार्य कोना चलत से नहि जानि। रुपैया भेनहुँ कार्य स्थगित रहै अछि"

श्रीमुक्तिनाथमिश्र, कृष्णागंज

(मि० मिहिर, १६-२-१८ई.)

महासभाक आरम्भिक ७-८ वर्ष धरि जतबो किछु उत्साहजनक कार्य-कलाप देखल जाइत छल सेहो क्रमशः क्षीणसँ क्षीणतर होइत गेल। प्रायः १९१९ई.मे महासभाक अधिवेशन मधेपुरामे भेल छल, तकर बाद बहुतो दिन धरि बार्षिक अधिवेशन नहि भऽ सकल। एहि अनुमानक आधार थिक बेतिया निवासी प० त्रिलोचनझाक 'शोक प्रकाश' शीर्षकसँ प्रकाशित एक वक्तव्य ! सन् १३२८ सालमे मिथिलाक अनेक विशिष्ट लोकक निधन भऽ गेल छलनि, यथा—वनगाँव महिषीक प्रसिद्ध समाज-सेवी बबुआ खाँ, गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, काशीक प्राध्यापक नैयायिक प्रवर जीवनाथ मिश्र, मीमांसक शिरोमणि महामहोपाध्याय प. चित्रधर मिश्र, विद्वद्वर चेतनाथझा तथा बेतिया प्रान्तिक मैथिल सभाक सभापति प. रामदत्तमिश्र, ई लोकनि ओही वर्ष अपन-अपन पांचभौतिक शरीरक त्याग कयने छलाह। हिनका सभक प्रति शोक श्रद्धांजलि समर्पित करैत आगाँ प. त्रिलोचनझा लिखने छथि :—

"...... ई वर्ष (सन् १३२८ साल) मैथिल जातिक हेतु बड़ अशुभ भेल, कारण समस्त मैथिल जातिक महासभा मृतप्राय भै गेल अछि। मधेपुराक अधिवेशन भेना डेढ़ वर्षसँ उपर भै गेल, मुजफ्फरपुरक अधिवेशनक चर्चो नहिँ श्रुत होइछ, की मधेपुरहिमे महासभा महा-निर्वाण प्राप्त कै चुकल ?

(मि० मोद, उद्‌गार १६२, ज्येष्ठ १३२८ साल, १९२१ई. पृ. ६)

उपरि चर्चित मुजफ्फरपुरक अधिवेशन भेल वा नहि तकर सूचना उपलब्ध नहि भऽ सकल। प्रायः नहि भेल। एहि अनुमानक आधार कविलपुर निवासी प. जीवछ झा वकीलक एक वक्तव्य थिक जे उदित-नारायण दास द्वारा सम्पादित श्रीमैथिली मासिक पत्रिकामे प्रकाशित भेल अछि, वक्तव्यक शीर्षक छैक "मैथिल महासभा", वक्तव्यक स्वरूप निम्नांकित थिक :—

"मैथिल लोकनिक यत्किंचित उत्थानक अनेकानेक कारणमे सौं मैथिल महासभा एक प्रधान कारण अछि। एहि महासभाक स्थपना सौं प्रारम्भमे मैथिल ब्राह्मण तथा कर्ण कायस्थ लोकनिकाँ कतेक लाभ भेलैन्हि से कहबामे हम सर्वथा असमर्थ छी। किछु काल पूर्व जे एकर कार्य दिश उत्साह छल से आब नहि देखना जाइछ। कतेक स्कूल तथा कालेजक विद्यार्थी महासभासौं छात्रवृत्ति पाबि अपन-अपन अध्ययन समाप्तकै तथा विश्वविद्यालयक डिग्री प्राप्त कय जीवन-संग्राममे संलग्न छथि। महासभाक छात्रवृत्ति पाबि अनेक सज्जन उच्च स्थान प्राप्त कैने छथि तथा अनेक यथेष्ट द्रव्योपार्जन कय रहला अछि। एहिमे बहुतोक एहन छात्र छथि जे छात्रवृत्ति नहि पौला उत्तर उच्च विद्या-सूर्यक प्रकाशसौं बञ्चिते रहि जैतथि। महासभाक कार्यक्रम केवल विद्या प्रचारहिक दिश नहि छल, परन्तु सामाजिक सुधारो दिश। महासभाक वार्षिक अधिवेशन तथा साधारण सभा द्वारा मैथिल जनताक ध्यान सामाजिक कुरीतिक दिश आकर्षित होइत छल। फलस्वरूप मैथिल जातिक बहु-विवाह तथा बाल्य-विवाहसौं जे ह्रास होइत छल से बहुत किछु रुकि गेल। एकर श्रेय प्रधानतः महासभाक मन्त्री पं० कपिलेश्वर मिश्र तथा उप-मन्त्री बाबू श्रीहरिनन्दन दास लोकनिकाँ छैन्ह। एकर जन्मदाता विशेषतः यैह दूनू व्यक्ति छथि। एकरा बाल्यकालमे तथा युवाकालमे ई लोकनि अनवरत परिश्रम तथा कष्ट उठा ग्राम-ग्राम जाय सभाक उद्देश्य जनताके विदित कैने छथि।

परन्तु खेदक विषय थीक जे किछु वर्षसौं मैथिलजातिक उदासीनतासौं एहि प्रकारक सर्वोत्तम एक जातीय संस्था शिथिल पड़ि गेल अछि। तीन-चारि वर्षक अभ्यन्तर एकोटा वार्षिक अधिवेशन नहि भेल अछि। ई सत्य जे असहयोगक प्रचण्ड अन्धरमे एहन एहन कतेक संस्थाक जड़ि उखड़ि गेल। तथापि बहुतो जातीय संस्था अपन-अपन अस्तित्व रखनहि अछि। मैथिले महासभा केवल एक संस्था जकर अस्तित्व लुप्तप्राय भय गेल बुझना जाइछ। परन्तु वेलगाँव कांग्रेस मध्य असहयोग एक वर्ष पर्यन्त स्थगित रहय एहन प्रस्ताव पास भेला सन्ताँ मैथिल महासभाकें पूर्ण जाग्रत करी एहिमें कोनो तरहक भांगठ वा एकरा जाग्रत करबामें कोनो व्यक्तिकें आपत्ति हैतैन्ह से नहि बुझना जाइछ। वर्त्तमान समय महासभाकें जीवित करबाक हेतु अत्यन्त उपयुक्त। किएक तँ वहुत सम्भव जे आगामी जुलाई माससँ दरभंगाक मेडिकल स्कूल पढ़ाई प्रारम्भ कऽ दिअय। मैथिलमें कतेक एहन योग्य निर्धन विद्यार्थी हैताह जे द्रव्याभावें स्कूलक मुँह देखबासँ वंचित रहि जैताह। मैथिल विद्यार्थी पढ़बा-लिखबामे कोनो जातिक विद्यार्थीसँ कम नहि। पढ़बाक सभ साधन भेटला सन्ताँ विश्वविद्यालयक परीक्षामें ओ उच्च स्थान ग्रहण कै सकैं छथि—जकर बहुतोक प्रमाण भेटैछ। ई बात बाबू ब्रजकिशोर सदृश गण्यमान्य व्यक्ति मुक्तकण्ठसँ स्वीकार कैने छथि। ....अतएव महासभाक मन्त्री तथा उपमन्त्रीसँ हमर अनुरोध जे ओ लोकनि महासभाकैं पुनर्जीवित करबाक यत्न करथि। युवक मैथिल समुदायमेसँ अनेक हुनका लोकनिक समक्ष अपन अमूल्य समय समर्पित करथिन्ह।"

श्रीजीबछझा. बी. ए., बी. एल्.

(श्रीमैथिली, वर्ष १, अंक १, पृ. १८-१९, फरबरी १९२५ ई.)

एक दिस प. त्रिलोचनझाक उक्ति १९३१ ई.मे प्रकाशित जे मधेपुराक अधिवेशन भेना डेढ़ वर्षसँ ऊपर भऽ गेल, दोसर दिस १९२५ ई.मे प० जीबछझाक कथन जे तीन-चारि वर्षक अभ्यन्तर एकोटा वार्षिक अधिवेशन नहि भेल अछि, एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे महात्मा गान्धी द्वारा आहूत १९२१ ई.क असहयोग आन्दोलनक प्रभाव महासभाहुक गतिविधि पर पड़ल छलैक जाहि कारणें महासभाक कार्य कलापमे पूर्ण शिथिलता आबि गेल छलैक।

एहि प्रसंग 'श्रीमैथिली'येमे 'मिथिलाक आर्थिक अवस्था' शीर्षकक अन्तर्गत 'जातीय संगठन' उपशीर्षकमे प० हरिवंशझा मुख्तार अपन हृदयक आक्रोश व्यक्त करैत लिखने छथि :—

"दुर्भाग्यक विषय जे एकमात्र जातीय संस्था 'मैथिल महासभा' छल जाहिसँ किछु कार्य भेबो कैल और दिनानुदिन होएबाक आशा छल, सेहो पण्डितजीक कृपासं कुम्भकरणी निद्रामे लिप्त भै गेल।

(श्रीमैथिली, वर्ष १ अंक ६, पृ० १३०)

परन्तु आगाँ चलि उपर्युक्त पत्रिकाक आठम अंकक सम्पादकीय टिप्पणीसँ सूचना प्राप्त होइत अछि जे निम्नांकित अछि :—

हर्षक विषय थीक जे मैथिल महासभाक अधिवेशन मुजफ्फरपुर मध्य भै रहल अछि। एक प्राचीन संस्थाक रक्षा करब मनुष्यक धर्म थिक। कोनरूपेँ एहि सभाक पुनः संगठन किम्वा पुनरुज्जीवन भेल छैक तकरासौं हम अभिज्ञात छो परञ्च तथापि कर्त्तव्य ई जे एहि सभाक स्थायी समितिक मेम्वर भिन्न-भिन्न मतक लोक होएबक चाही, बहुमत जाहि बातक पोषण करै से मन्तव्य ओ कर्त्तव्य हो।'

(श्रीमैथिली, पृ० २०३)

महासभाक अधिवेशन भऽ रहल अछि से सूचना तँ भेटल, परन्तु अधिवेशन भेल वा नहि तकर विवरण उपलब्ध नहि भऽ सकल। एकर बाद महासभाक बहुर्चचित २०म अधिवेशन जे मुंगेरमे भेल छल ताहि अधिवेशनक प्रसंग 'मिथिला'मे सविस्तर विवरण सहित सम्पादकीय मन्तव्य सेहो प्रकाशित अछि। ई त्रिदिवसीय अधिवेशन २२, २३, २४ अप्रैल १९२९ ई.मे भेल छल। सम्पादकीयक किछु अंश उद्धृत कयल जाइछ जाहिसँ ताहि समय धरि महासभाक की स्थिति छल ताहि पर प्रकाश पड़ैत अछि। सम्पादक लिखैत छथि :—

"जेना तेना एहि बेर मैथिल महासभाक बीसम अधिवेशन मुंगेरमे समाप्त भेल। जे किछु समाचार अधिवेशनक विषयमे प्राप्त भेल अछि ताहिसँ मैथिल जातिक जातीय जीवनक बहुत ह्रास देखना जाइछ। यथार्थ पूछी तँ किछु वर्ष पूर्वहिसँ ई संस्था गण्यमान्य मैथिलक सहानुभूतिसँ वंचिता भै मृतप्राय भऽ गेल अछि, मुंगेरमे मानू तकर पराकाष्ठा भेल। यद्यपि सर्चलाइट आओर विशेषतः 'देश' नामक पत्रमेँ एकर तीव्र आलोचना किछु विशेषध्येयसँ कैल गेल अछि तथा 'देश'मे यद्यपि नितान्त मिथ्यारूपेँ लिखल गेल अछि जे मिथिला भाषाक प्रस्ताव बहुमतसँ अस्वीकृत भेल एवं हिन्दीक जयनादसँ महासभा समाप्त भेल, तथापि

अधिकांश बात सत्ये बुझना जाइछ। महासभाक मन्त्री श्रीयुत् प० कपिलेश्वर मिश्रजीक' मौनं स्वीकार लक्षणम्' स्पष्ट अछि। अद्यापि कोनो प्रतिवाद नहि प्रकाशित भेल अछि।"

मिथिलाक सम्पादक बाबू भोलालाल दास महासभाक शिथिलताक कारण-विवेचन करैत विशेष दोष मैथिल युवकवृन्द पर मढ़ने छथि। ओ लिखैत छथि :—

'एहिमे सन्देह नहि जे मैथिल युवकवृन्दमे जतेक अकर्मण्यता देखल जाइछ ततेक कोनो आन समाजमे नहि।…… …—एखनहु महासभाक छिद्रान्वेषण कैनिहारक संख्या कार्यकर्त्तासँ बहुत अधिक अछि। जखन युवके लोकनिक ई दुर्दशा तँ बूढ़ मन्त्री आओर सभापतिक कोन दोष ?'

सम्पादक आगाँ अपन मन्तव्य स्पष्ट करैत छथि :—'मैथिल महासभा एक सुसंगठित संस्था थिक। बहुत दिनधरि जनताक सहानुभूतिसँ उत्तमोत्तम कार्य कयने अछि। अद्यापि एकरे अनुयायी अधिक अछि, यद्यपि असन्तोषक मात्रा दिनानुदिन बढ़ले जाइछ। एकर एकमात्र कारण थिक समयानुकूल कार्यकर्त्ताक अभाव।……जावत महासभा किछु कार्य नहि करत, नियमानुकूल साधारण सत्ताकैं स्वीकृत नहि करत तावत जनताक उदासीनता कदापि नहि हटतैक।……सभापति श्रीमान् महाराजाधिराज कुमार साहेबक भाषण अत्यन्त समीचीन अछि जे भाषणक आब समय नहि, क्रिया केवलमुत्तरम्।"

(मिथिला, वर्ष १, अंक २, पृ. ४२-४३)

आइसँ करीब सात दशक पूर्व ई मन्तव्य व्यक्त कयल गेल छल। ताहि समय जन्म लेनिहार आइ वृद्धावस्थाकें सम्प्राप्त कयने छथि। एखनहु यदि चारू दिस आँखि पसारैत छी तँ परिस्थितिमे कोनो अन्तर दृष्टिगोचर नहि होइछ। युग कतऽ सँ कतऽ आबि गेल, देशक सम्पूर्ण व्यवस्था आ समाजक स्वरूप सब प्रकारें परिवर्त्तित भऽ गेल, परन्तु मिथिला ओ मैथिलीक क्षेत्रमे युवक वृन्दक अकर्मण्यता तथा कार्यकर्त्ताक अभाव यथावत् बनल अछि। तें आइओ दोषारोपण ककरा पर कयल जाय ? जे समाज स्वाभिमान-शून्य भेल आत्म-लोचनसँ आँखि फेरने, अपन स्वरूपकें विस्मृत कयने, समयक प्रवाहमे कड़रिक थम्ह जकाँ दिशाहीन भासल दहाइत चल जाइत हो, ताहि समाजक भविष्य शोचनीय छोड़ि और की भऽ सकैत छैक !

महाराजाधिराज कुमार कामेश्वरसिंह उक्त अधिवेशनमे महासभाक आजीवन सभापति, अपन पिता महाराजाधिराज रमेश्वरसिंहक अस्व-

स्थताक कारणे" हुनक प्रतिनिधित्व करबाक हेतु तथा हुनक मुद्रित भाषण पढ़बाक हेतु गेल छलाह, परन्तु ताहिसँ पूर्व ओ अपन अति संक्षिप्त भाषण देलनि, प्रसंगवश तकरा उद्धृत करब उपयुक्त प्रतीत होइछ जाहिसँ महासभाक प्रति समाजक उदासीनताक स्पष्ट आभास भेटैत अछि।

भाषणक स्वरूप निम्नांकित अछि :—

"श्रीकामरूप निलयां वर विन्ध्यवासां जालन्धरेज्वलनरूपधरां भवानीम्।
कालीतिनाम विभवां गिरिराजपीठे तां कालिकां कलिहरां सततं नमामि ॥

परम आनन्दक विषय थिक जे हमर मैथिल बन्धुगण अपन जातीय समुन्नतिक विचार करबाक हेतु विराट् आयोजन कय मैथिल महासभाक वार्षिक अधिवेशन बिहार प्रान्तक एक प्राचीन नगर मुङ्गेर मध्य कयलैन्हि अछि। एहन कठिन समय मध्य एतादृश महाआयोजन अत्यन्त प्रशंसनीय थिक। यदि ई उत्साह सार्वदिक् कतोक महानुभावक हृदय मध्य रहैन्हि तँ देशक उन्नति अवश्य होयत।

बन्धुगण !

यादृश उत्साह ओ प्रेम पुरस्सर हमर स्वागत सत्कार अपने लोकनि कयल अछि तदर्थ हम हार्दिक धन्यवाद दैत छी।

सभ्यगण !

हम विशेष किछु नहि कहय चाहैत छी कारण जे समय आब नहि छैक। 'क्रिया केवलमुत्तरम्' एकर समय उपस्थित भेल अछि। यावत् समस्त मैथिल समाज मिथिलाक समुन्नतिमें पूर्ण मनोयोग नहि देब तावत् एकाकी ककरहुसँ कोनो प्रकारक उन्नतिक आशा–दुराशा, कारण जे 'संघेशक्तिः कलौयुगे'। हमर मैथिल समाज सभ गुण रहलो उत्तर परस्पर सहानुभूतिक अभावसँ यत्किंचित् आलस्यक विकाससँ अन्य देशापेक्षया सम्प्रति अवनतप्राय कहल जाइछ। जखनहि एहि उपाधिसँ मुक्त होएत तखनहि मैथिल समाजक उन्नति-पथ कथूसँ अवरूद्ध नहि भय सकत एहिमें कोनो सन्देह नहि।

बन्धुगण !

हम एतावन्मात्र कहि अपन भाषण समाप्त कय महाराजाधिराज श्री ५ मान् मिथिलेश (पूज्यपाद श्रीदादाजी)क भाषण अपने लोकनिक समक्ष उपस्थित करैत छी। आशा अछि अपने लोकनि सावधान भय सुनबै। ॐ शान्तिः।" (मिथिला, वर्ष १, अंक २, पृ. ६०)

महाराजाधिराज कुमारक दू गोट वाक्य विशेषरूपेँ मननीय प्रतीत होइत अछि। प्रथम– 'क्रिया केवलमुत्तरम्', जकर उल्लेख मिथिलाक सम्पादक सेहो अपन सम्पादकीयमे कयने छथि। एहिसँ स्पष्ट ध्वनि बहराइत अछि जे सभामे प्रस्ताव सब तँ रंग-विरंगक उपस्थित कयल जाइत छल, ताहि पर वक्ता लोकनिक ओजपूर्ण भाषण सेहो होइत छलनि तथा थपड़ीक गड़गड़ाहटिक संग पारित सेहो भऽ जाइत छल, किन्तु कार्यान्वयन कोना होयत, ताहि पर अधिवेशन समाप्तिक बाद पुनः ध्यान देनिहार क्यो नहि रहैत छलाह।

एहि उक्तिक पुष्टिमे एही अधिवेशनमे पारित एक प्रस्ताव उदाहरणार्थ उपस्थित कयल जाइछ : उक्त अधिवेशनमे कुल एगारह गोट प्रस्ताव पारित भेल छल, जाहिमे आठम प्रस्ताव निम्नांकित छल :—

"ई महासभा प्रस्ताव करैछ जे दरभंगामे कालेज स्थापनार्थ जे प्रस्ताव गतवर्ष पास भेल छल तकरा कार्यमे परिणत करबाक हेतु पूर्णतया चेष्टा कयल जाय।' (मिथिला, वर्ष १, अंक २, पृ. ६२)

एक दिस महासभा विद्या-प्रचारकेँ अपन उद्देश्यमे सम्मिलित कयने छल, दोसर दिस दरभंगा सन नगर, जे मिथिलाक राजधानी होयबाक गौरव रखैत छल, ततय एक आधुनिक कालेज नहि। सम्पूर्ण देशमे आधुनिक शिक्षाक प्रसार तीव्र गतिसँ भऽ रहल छलैक, तेहना स्थितिमे एहन महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव विगते अधिवेशनमे पारित भऽ चुकल छल, तकर प्रगतिक सूचना एहि अधिवेशनमे उपस्थित करबाक बदला एकरा दोहराओल जाइत अछि। एकरा निष्क्रियता नहि तँ और की कहल जयबाक चाही ?

एकर दस वर्षक बाद दरभंगामे आधुनिक शिक्षा प्रणालीक कालेजक स्थापना भेल अवश्य, किन्तु एकर श्रेय मैथिल महासभाकेँ नहि भेटलैक, प्रत्युत ताहि समय महासभाक महामन्त्री प० गंगाधरमिश्र रहथि जे कालेजक स्थापना हेतु व्यस्त रहलाक कारणेँ, सुनल अछि, मन्त्रीक पदसँ त्यागपत्र दऽ देने रहथि।

विगत ५० वर्षसँ एहू पंक्तिक लेखककेँ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक काजमे लागल विभिन्न संस्था सबसँ यत्किंचित सम्पर्क रहैत अयलनि अछि, जाहि अनुभवक आधार पर निःसंकोच ई कहबाक हेतु बाध्य

होमय पड़ैत छनि जे हमरा सभक ई जातीय चरित्र भऽ गेल अछि जे अपने किछु करब नहि, जे क्यो किछु करय चाहत तकर टाङ खीचैत रहब तथा अनका माथ पर दोष मढ़ैत रहब। ओ जे एकटा कहबी छैक-'ओझा हौ ! गेलह कोन रोगें' हमरा लोकनि एही रोगसँ ग्रस्त छी। निष्क्रियता हमरा लोकनिक प्रगतिमे मुख्य बाधक तथा दुर्गतिमे प्रमुख साधक रहल अछि।

महाराजाधिराज कुमारक दोसर वाक्य— 'यावत् समस्त मैथिल समाज मिथिलाक समुन्नतिमे पूर्ण मनोयोग नहि देब तावत एकाकी ककरहुसँ कोनो प्रकारक उन्नतिक आशा-दुराशा' वस्तुस्थिति दिस पूर्ण संकेतक सूचक थिक।

एहि पंक्तिक लेखकके पहिले पहिल १९४६ ई०मे राजनगरमे आयोजित महासभाक अधिवेशनमे कवि सम्मेलनक मंच पर उपस्थित होयबाक सुयोग भेटल छलनि। तहियासँ प्रायश: अधिकतर अधिवेशनमे सहभागिताक अवसर भेटिते रहलनि। ई बात स्पष्ट जे ताहि समय वयसक अल्पता, अनुभवक अल्पज्ञता तथा बुद्धिक अपरिपक्वताक कारणें एहि वस्तुस्थितिक प्रति कोनो प्रकारक अरुचि अथवा असहमति छलनि, से नहि कहल जा सकैछ, प्रत्युत राज दरभंगाक खर्च पर-दूर दूर यात्रा करबाक उल्लास, भोज-भात खयबाक आनन्द, पैघ-पैघ मंचसँ कविता सुनयबाक उत्साह, विशिष्ट व्यक्ति सभक संग उठबा-बैसबाक सुख तथा मिथिलेशक सान्निध्य प्राप्त करबाक गौरव संगहि स्वागतकारिणी समिति द्वारा बिदाइमे किछु आर्थिक लाभ प्रसन्नते बढ़बैत छलनि। परन्तु आइ अनुभव होइत छनि जे महासभा आइ जे एना मृतप्राय संस्था भऽ गेल अछि तकर मुख्य कारण वैह वस्तुस्थिति छल।

वास्तविक स्थिति ई छल, जे वर्षमे एक बेर महासभाक अधिवेशन होइत छलैक जकरा एक जलसा मानल जाइत छल, जे राज दरभंगा द्वारा मनाओल जाइत छल। सामन्तवादी युग रहलाक कारणें महाराजक दर्शन सर्वजन सुलभ नहि छलैक आ महासभाक मंच पर महाराज स्वयं उपस्थित होइत छलाह। हुनक दर्शन मुख्य आकर्षण रहैत छलैक, तें जतय महासभाक अधिवेशन, यथा दरभंगा, मधुबनी, सरिसव, मधेपुर, बेनीपट्टी, सीतामढ़ी, राजनगर, सहरसा, मधेपुरा, दुर्गागंज, पूर्णिया, विद्यापतिनगर आदि स्थानमे होइत छलैक, महाराजके देखबाक लोभें क्षेत्रक हजारक हजार संख्यामे जनता स्वयं उपस्थित

भऽ जाइत छलैक जाहिसँ मेलाक दृश्य उपस्थित भऽ जाइत छल। सभास्थल लग दू-तीन दिन हाट-बाजार लागि जाइत छलैक, नेना-भुटका लाइ-मुरही कीनि कृतार्थ होइत छल आ प्रजावर्ग अपन प्रभुक दर्शन पाबि कृतकृत्य।

सभ्यगणक हेतु स्वागत कारिणी समिति प्राणपणसँ स्वागत-सत्कारमे जुटल रहैत छल। माछ, मधुर, छल्हिगर दही, तुक पर जलपान, भोजन, सुवासित तबकदार पान-सुपारी उपस्थित करबाक हेतु शतावधि स्वयं-सेवक सतत सन्नद्ध रहैत छलाह। सभासदमे मुख्यरूपेँ महाराजक पार्षद लोकनिक अतिरिक्त समाजक मुख्य वकील, मुख्तार, अध्यापक, पण्डित ओ कवि-साहित्यकार लोकनि रहैत छलाह। भोजभात खायब, जोर-जोरसँ थपड़ी बजायब मुख्य काज रहैत छल। समाज-सुधार अथवा अन्यान्य विषयक प्रसंग जे किछु विचार-विमर्श होइत छल अथवा प्रस्ताव पारित होइत छल तकर कार्यान्वियनक भार तँ महासभाक वैतनिक कर्मचारी प० जगदानन्द मिश्रक माथ पर छलनिहेँ, ओ मन्त्री-जीक निर्देशानुसार करैत रहताह, अनका ताहिसँ कोन मतलब ? सामान्यत: यैह मानसिकता सभक छल।

मिथिलांचलसँ बाहर यथा– वैद्यनाथधाम, अड़ाइडांगा, मालदह, आगरा, अजमेर आदि स्थानमे निवास कयनिहार प्रवासी मैथिल ब्राह्मण लोकनि जे महासभाक अधिवेशन अपना-अपना क्षेत्रमे तन-मन, जन-धन अर्पित कऽ आयोजित करैत छलाह तनिका सभक भावना ई रहैत छलनि जे एहिठामक लोक ई देखि सकय जे मैथिल ब्राह्मणहुमे एहन ऐश्वर्यशाली प्रभावान् लोक छथि जे महाराजाधिराज सदृश उच्च पदवी रखैत एक विशाल भूखण्डक अधिपति कहबैत छथि।

प्रवासी मैथिल लोकनि द्वारा आयोजित महासभाक आगरा ओ अजमेरक अधिवेशनमे एहि पंक्तिक लेखककेँ भाग लेबाक अवसर हाथ लागल छनि। प्रवासी मैथिल ब्राह्मणक हृदयमे अपन मैथिलत्वक कतेक स्वाभिमान छनि से निकटसँ देखबाक ओ अनुभव करबाक सुयोग भेटल। तेँ एहि दूनू ठामक संक्षिप्त विवरण देबाक लोभ भेल।

२७-२८ दिसंबर १९५४केँ महासभाक ४३म अधिवेशन आगरामे भेल रहैक जकर स्वागताध्यक्ष छलाह सर हरगोविन्द मिश्र। ई कानपुरक प्रथम श्रेणीक उद्योगपति रहथि तथा स्वागतमन्त्री छलाह कान्ति प्रसाद

मिश्र। ई केन्द्रीय सचिवालयमे गृह विभागक उपसचिव रहथि। सभा-स्थल कम्पनीबागक मैटकॉफ हालक स्वच्छ शान्त परिसरमे १२० फीट नमगर तथा ६० फीट चाकर पण्डाल बनाओल गेल छल। सभास्थलक नाम म० म० महाराज महेश ठाकुरक स्मृतिमे महेशनगर तथा मुख्य द्वारक नाम मैथिलीक प्रथम अलंकार ग्रन्थ चन्द्राभरणक प्रणेता जैत मथुरा निवासी प० रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र'क स्मृतिमे चन्द्रद्वार राखल गेल छल। गोटेक सय प्रतिनिधि दरभंगासँ, अतुलचन्द्र कुमर मालदह (बंगाल)सँ तथा अलीगढ़, मथुरा, अजमेर, झांसी, हाथरस, कानपुर, दिल्ली, फीरोजाबाद, जयपुर, जोधपुर आदि स्थानसँ शताधिक प्रतिनिधि सम्मिलित भेल छलाह। स्वागत-सत्कारक विशेषताक अनुमान एहीसँ लगाओल जा सकैछ जे दिसम्बर मास आगरामे शोणित जमा देबऽ बाला जाड़ आ शतावधि तम्बू ताहि सब तम्बूक मुँहथरि पर ४ बजे सँध्यासँ ९-१० बजे प्रातःकाल धरि तेहन अगियासी कऽ देल जाइक जे जाड़कें तम्बूक भीतर प्रवेश करैत भय होइक। शौचसँ स्नान धरिक लेल टैंक सबमे गरम पानि बाहरसँ आनि-आनि आपूर्त्ति कयल जाइक।

ओना अड़ाइडांगामे सेहो किछु महिला लोकनि सभामे भाग लेबऽ आइलि रहथि परन्तु आगरामे तँ २८ दिसम्बरक दिन फराक कऽ महिला सम्मेलन आयोजित भेल जकर स्वागतमन्त्रिणी श्रीमती भगवानदेवीझा विशारद, साहित्यशास्त्री, बी. ए. अपन स्वागत-भाषण करैत मंगला-चरणमे निम्नांकित स्वरचित श्लोकसँ सीताक वन्दना कयने छलीह—

'नारी ललामा शुभ लक्षणा च सीता समस्तां मिथिलां विधात्री
जाता विदेहस्य कुले हि भाग्यात् तस्यै जनन्यै नतमस्तकाऽस्मि।'

एहि अवसर पर मैथिली साहित्य परिषदक विशेषाधिवेशन सेहो सर हरगोविन्द मिश्रक अध्यक्षतामे भेल छलैक।

ध्यातव्य जे एहि अधिवेशनसँ पहिने महासभा भाषाधार प्रान्त पुनर्गठन आयोगक समक्ष स्मृतिपत्र देबाक हेतु एक उपसमिति गठित कयने छल। ओहि उपसमितिक सदस्य के सब छलाह से ज्ञात नहि भऽ सकल, परन्तु उक्त अधिवेशनमे उक्त उपसमितिक सदस्य लोकनिकें एक प्रस्ताव द्वारा धन्यवाद देल गेल छलनि। एहि अधिवेशनमे मिथिला राज्य सम्बन्धी तीन गोट प्रस्ताव पास भेल छल जकर हिन्दी रूपान्तर अधिवेशन समाप्तिक बाद ओहिठामक स्वागत समिति २४ पृष्ठात्मक

सचित्र स्मारिका सविस्तर विवरणक संग प्रकाशित कयने छल ताहिमे उपलब्ध अछि।

१९५९ ई.मे महासभाक ४९म अधिवेशन अजमेरमे भेल छलैक। महासभाक कार्यकारिणी द्वारा आमन्त्रण स्वीकार भेला पर अजमेरक शास्त्रीनगरक निवासी, इन्टर कालेजक व्याख्याता तथा आगरा अधिवेशनमे सक्रिय सहयोगदाता प. शिवदत्तशास्त्री मिथिलाक प्रतिनिधि लोकनिकेँ चमत्कृत करबाक उद्देश्यसँ पचीस-तीस गोट तरुणकेँ मैथिली-भाषामे वार्त्तालाप करबाक प्रशिक्षण देबा लेल बाबू लक्ष्मीपतिसिंहसँ सम्पर्क कऽ चारि मास पूर्वहि भोजन, आवास तथा १५०)रु० वेतन दऽ एक मैथिली शिक्षककेँ नियुक्त कयने रहथि।

ई उल्लेख करबाक तात्पर्य एतबे जे प्रवासी लोकनिमे एहि संस्थाक प्रति कतेक आदर ओ मिथिलाक प्रति केहन आकर्षण छलनि से एहिसँ स्पष्ट होइत अछि।

प्रसंगात् ईहो उल्लेख करब अप्रासंगिक नहि होयत जे मिथिला मिहिरक पुनः प्रकाशन जे पटनासँ आरम्भ भेल से अजमेर अधिवेशनक उपलब्धि मानल जयबाक चाही।

घटना एना घटित भेल। १९५४मे दरभंगासँ मिथिला मिहिरक प्रकाशन अकस्मात् बन्द कऽ देल गेल छल। अलीगढ़ निवासी वीरदत्त मिश्र महासभाक विषय निर्धारिणी समितिमे 'मिथिला मिहिर'क पुनः प्रकाशनार्थ एक प्रस्ताव उपस्थित कयलनि। राजपण्डित बलदेबमिश्र ई कहि एहि प्रस्तावक विरोध कयलथिन जे मिथिला मिहिर महाराजक वैयक्तिक वस्तु छलनि, महासभाकेँ मिथिला मिहिरसँ कोन सम्बन्ध? राजपण्डितजीकेँ आशंका छलनि जे महाराजकेँ ई प्रस्ताव अप्रिय लागि सकैत छनि। तकर कारण छलैक जे कोनो कारणविशेषवश महाराज आकृष्ट भऽ प्रकाशन बन्द करबा देने छलथिन। महामन्त्री प. शिवशंकर झा राजपण्डितजीक विरोधक अनुमोदन कऽ देलथिन। वीरदत्तमिश्र बेचारे अप्रतिम भऽ बैसि रहलाह। ओहिठामसँ बहरयलाक बाद बड़े दुखीभावसँ कहलनि जे 'मिहिर'क माध्यमसँ हमरालोकनिकेँ मिथिलासँ सम्पर्क रहैत छल, से टूटि गेल।

खुला अधिवेशनमे महामन्त्रीक आग्रह पर एहि पंक्तिक लेखक कार्यवाही अंकित करबाक हेतु सभापतिक आसनक समीप छलाह। प्रवासी

मैथिलक दीर्घासँ वीरदत्तमिश्र उठि किछु बजबाक हेतु ठाढ़ भेलाह। महामन्त्रीजी डाँटि कऽ हुनका बैसि जाय कहलथिन। महाराज समुत्सुक पूछि बैसलथिन— हिनका की कहबाक छनि ? एहि पंक्तिक लेखककेँ अवसर भेटि गेलनि, कहलथिन– प्रवासी लोकनि किछु सनेस चाहैत छथि। मिथिलेश पुछलनि– कथी ? ताहि पर कहलिऐनि– श्रीमान्, प्रवासी मैथिल लोकनिक कहब छनि जे मिथिला मिहिर बहराइत छल तँ हमरालोकनिकेँ मिथिलासँ सम्पर्क बनल रहैत छल ओकरा बन्द भऽ गेलासँ...महाराज बीचेमे कहि उठलथिन– ओकर ग्राहक कहाँ अछि, दुइओ सय ग्राहक भऽ जाय तँ हम फेर प्रकाशित करा सकैत छी।

ताहि समय मिथिला मिहिरक शुल्क २) रु. वार्षिक छलैक। वीरदत्त मिश्र ५०२) रु० बाहर करैत कहलथिन जे दू सय एकावन ग्राहकक शुल्क एखने जमा करैत छी, ग्राहकक नाम पता पछाति पठा देल जायत। महाराज महामन्त्रीक अभिमुख होइत कहलथिन– रायबहादुर ! एकरा नोट कऽ लेल जाय।

निश्चितरूपेँ कहल जा सकैछ जे महासभाक मंच यदि उपलब्ध नहि रहैत तँ १९६० सँ जे मिथिला मिहिरक पुनः प्रकाशन आरम्भ भेल, जकरा माध्यमसँ एतेक नव-नव साहित्यिक प्रतिभा विकसित भऽ आधुनिक मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध कऽ सकल से नहि भेल रहैत।

परन्तु एहि संस्थाक संग सबसँ पैघ दुर्योग ई रहलैक जे ई एक जातीय संगठन थिक, एहि संस्था द्वारा समाजमे व्याप्त भेल जाइत अपकर्षकेँ दूर कऽ समाजकेँ उत्कर्षक मार्गपर लऽ जयबाक प्रयासकेँ सफल बनयबाक दायित्व सदस्य मात्रक थिक, ई भावना आंगुरे पर गनल व्यक्तिकेँ कदाचित् रहल होइनि, अन्यथा सब एकरा महाराजो संस्था मानैत छलाह। तकर एक मुख्य कारण ईहो छल जे मिथिलेशक अनुपस्थितिमे खड़ौरे वंशक उपस्थित सामान्यो योग्यताक व्यक्तिएकेँ सभापतिक आसन पर बैसाओल जाइत छलनि। एक घटना स्मरण होइत अछि :

घटना १९५८मे महासभाक छेयालिसम अधिवेशन देवघर (बाबाधाम)मे आयोजित छल। महेश्वर प्रसाद झा स्वागताध्यक्ष छलाह। बाबाधामक पण्डा समुदायमे अपूर्व उत्साह छलनि। उत्साहक मुख्य कारण ई छल जे मैथिल ब्राह्मण होइतो शिवांश ग्रहण करबाक कारणेँ

मैथिल समाजसँ कटल-कटल जकाँ छलाह। एमहर देवघरक अधिवेशनकेँ महासभाक प्रगतिशील डेग मानल गेल छल। प्रतिनिधि लोकनिमे 'सुकठीक बनीज पशुपतिक दर्शन'क भावनासँ उत्साह छलनि, परन्तु कोनो कारणविशेषवश अन्तिम समयमे सूचना भेटलैक जे महाराजाधिराज नहि उपस्थित भऽ सकताह। समस्त उत्साह पर पानि पड़ि गेलैक। तखन विधिपुरौअलि तँ होयब अनिवार्य छलैक। एक खड़ौरेकेँ (नाम नहि लिखब) प्रस्ताव द्वारा सभापतिक आसन पर आसीन कराओल गेलनि। मिथिलेशक गर्दनिमे जे माला पड़ितनि से माला गर्दनिमे पहिराओल गेलनि तँ मन गदगद भऽ गेलनि। महाराजक छपल भाषण पहिने आबि गेल छलनि जे हिनका पढ़ि कऽ सुना देबाक छलनि। भाषण पढ़बाक हेतु ठाढ़ भेलाक गोटेके मिनटक बाद दूनू पैर कापऽ लगलनि आ देहसँ तड़तड़ घाम छूटऽ लगलनि, संगहि हाथक कागत सम्हारब कठिन भऽ गेलनि। १४ प्वायंटमे छपल चारि पृष्ठक भाषण सम्पूर्ण नहि पढ़ि सकलाह।

सामान्यतः डॉ० कांचीनाथझा 'किरण' महासभाक कटु आलोचक रहथि, परन्तु बाबाधामक पण्डासमुदायकेँ मैथिल ब्राह्मणक परिधिमे समेटबाक महासभाक प्रयत्नकेँ प्रगतिशील डेग मानैत, एहि अधिवेशनमे भाग लेबाक हेतु पहुँचल छलाह। कविवर सीतारामझा, कविचूड़ामणि काशीकान्तमिश्र 'मधुप', पं० जीवनाथझा विद्याभूषण, प्रो० जयदेवमिश्र, आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन', उक्त बाबू साहेब सहित हमरा लोकनिक आवास संयोगवश एके धर्मशालामे छल। सभा सामाप्तिक बाद सबगोटे आवास दिस बिदा भेलहुँ तँ बाटमे किरणजी उक्त बाबू साहेबकेँ घूसऽ लगलथिन—अहाँ जे चट दऽ सभापतिक आसन पर जा बैसि गेलहुँ आ छपल भाषण पढ़ैतकाल भगता जकाँ कूदऽ लगलहुँ, घामसँ एखन धरि कुर्त्ता भीजल अछि, से अहाँ ई विचार नहि करऽ लगलिऐक जे एहिठाम कविशेखर बदरीनाथझा, कविवर सीतारामझा, रायबहादुर शिवशंकरझा, राजपण्डित बलदेव मिश्र, प० त्रिलोकनाथ मिश्र प्रभृति विशिष्ट वरिष्ठ लोक सब बैसल छथि, हम कोना ओहि आसन पर जा कऽ बैसू ?

उक्त बाबू साहेबक उत्तर छलनि— ओहि आसन पर मिथिला राजवंशक अतिरिक्त दोसरकेँ बैसबाक अधिकार नहि ने छैक, से तँ

केवल हमही ँ छी । महासभाक पदाधिकारी लोकनिकेँ जँ ई बात बूझल छनि तेँ ने हमरे नामक प्रस्ताव कयलनि ।

यद्यपि महासभाक कार्यकारिणी सभाक अधिकार निरूपणक्रममे कार्यकारिणीकेँ १७ गोट अधिकार देल गेल छलैक । ताहिमे तेरहम अधिकारमे कहल गेल छलैक :—

"अधिवेशनक अवसरमे सभापतिक अनुपस्थिति भेला सन्ताँ सभाक कार्य निर्वाहार्थ तत्काल उपस्थित सभ्यगणमेसँ एक व्यक्तिकेँ यथारीति प्रस्ताव- अनुमोदन-समर्थनपूर्वक सर्वसम्मतिसँ अथवा बहुमतसँ सभापति बनाकय कार्य कय लेब ।"

तथापि सदस्यो लोकनिक मानसिकता उक्त बाबू साहेबक अनुरूपे रहैत छलनि । महासभाक कार्यकारिणी सभाक सदस्य संख्या पदाधिकारीक अतिरिक्त २५० सीमित छलैक जाहिमे सम्मिलित होयबाक हेतु आजीवन सदस्य पर्यन्तकेँ अतिरिक्त २) दू टाका शुल्क देव अनिवार्य रहैत छलनि । महासभाक नियमावलीक कण्डिका संख्या १८मे कहल गेल छलैक :

"कार्यकारिणी सभाक सदस्यमात्रकेँ साधारण किंवा आजीवन सभ्य॰ पदक शुल्कक अतिरिक्त वार्षिक शुल्क दुइ टाका बिनु अगाउ देने आओर तकर प्रमाणपत्र बिनु देखौने एहि सभाक कार्यमे भाग लेबाक अधिकार वा अन्य कोनो अधिकार प्राप्त नहि होएतन्हि। एकर सदस्यक नामावली तदर्थ रक्षित पुस्तिकामे प्रदर्शित कयल जायत ।"

अपन बहुमत अक्षुण्ण रखबाक हेतु राज दरभंगाक दिससँ कार्यकारिणीक ओतेक सदस्यक शुल्क जमा करा देल जाइत छलैक, जाहिसँ कतहु मत विभाजन भेला पर हारि ने भऽ जाय । सुनल अछि, ओना आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' एखन साक्षी छथि जे सीतामढ़ी अधिवेशनमे बाबू भुवनेश्वरसिंह 'भुवन' महाराजकेँ कारीझण्डा देखयबाक प्रयास कयने छलथिन, जाहि कारणेँ मिथिला मिहिर तथा 'भारती' मासिकमे एवं प्रतिवादमे 'विभूति'मे खूब उतरा- चौरी भेल रहैक, कार्टून सब छपैत रहैक । अन्तमे बाबू भुवनेश्वरसिंह 'भुवन' महाराजक भागिन कन्हैयाजी, मिथिला मिहिरक सम्पादक श्रीसुमनजी तथा 'भारती'क सम्पादक बाबू भोलालालदासकेँ मुद्दालह बना मोकदमा ठोकि देने छलथिन । एहिसँ पूर्वहु मुंगेर अधिवेशनमे मैथिली हिन्दीकेँ लऽ मत-विभाजनक स्थिति उत्पन्न भऽ गेल रहैक । तेँ राज दरभंगा सतर्क रहैत

छल। राज दरभंगा द्वारा शुल्क जमा कयला पर जे कार्यकारिणी सभाक सदस्य भेल रहैत छलाह से लोकनि परम्पराक विरुद्ध मुँह फोलिओ ने सकैत छलाह। फलतः महासभा जनतान्त्रिक स्वरूप कहिओ धारण नहि कऽ सकल।

१९६२ ई० मे महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक निधन भऽ गेलाक बाद राजकुमार जीवेश्वर सिंह सभापति बनाओल गेलाह। परन्तु ओ किछु दोसर मिजाजक लोक छलाह, हुनका ई पद नहि सोहयलनि तेँ त्यागपत्र दऽ देलनि तखन हुनक अनुज राजकुमार श्री शुभेश्वर सिंह ओहि आसन पर सम्प्रति विद्यमान छथि।

यद्यपि प्रो० श्री पुरुषोत्तमझाजीक मन्त्रित्वकालमे जे नियमावलीक संशोधन भेलैक ताहिमे तीन वर्ष पर अधिवेशनमे सभापतिक निर्वाचनक प्रावधान कयल गेल छैक। ई नियमावली ९-४-१९६६ सँ लागू अछि, परन्तु महासभाक अधिवेशन होइते ने अछि। पूर्वक स्थिति रहलैक नहि। 'आब ने ओ देवी ने ओ कराह' तखन अधिवेशन बजाबओ के ?

ध्यातव्य जे ई इतिहास प्रकाशन हेतु प्रेसमे छल, तावत २५ जुलाइ १९९९क दिन आयोजित ३४ वर्षक बादक अधिवेशनमे सर्वसम्मतिसँ प्रो. श्रीभक्तिनाथसिंह ठाकुर सभापति तथा श्रीचतुराननमिश्र (मिश्रा कं० लहेरियासराय) प्रधान सचिव निर्वाचित भेल छथि। कार्यकारिणी समितिक सदस्य लोकनिक नामावली आगाँ अंकित अछि।

अन्तमे

मैथिल महासभा मिथिलाक प्राचीनतम संस्था थिक जे एहि ठामक संस्कृति, भाषा, लिपि आदिक संरक्षण ओ समाज-सुधारक क्षेत्रमे काज करबाक उद्देश्यसँ स्थापित भेल छल। जहिया एकर स्थापना भेल छलैक, सब जनैत छी जे तहिया सामन्तवादी युग छलैक, परन्तु १९४७ मे स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद युग परिवर्त्तनक दिशामे अग्रसर भेल। तखन महासभाक जे अधिवेशन भेल छल ताहिमेसँ सभापतिक पदसँ देल गेल मिथिलेशक दुइ गोट भाषणक अंश उद्धृत अछि जाहिसँ हुनक आन्तरिक इच्छा ओ महासभाक हेतु दिशा-निर्देशक संकेत भेटैत अछि। पहिल भाषण १९५१ मे भेल पूर्णियाक ४०म अधिवेशनक थिक जाहिमे कहने छथि :—

"....... ई महासभा ओहि जनसमूहक थीक जे एक सामाजिक परम्पराक अनुसरण करैत आयल अछि, जकर अतीत गौरवमय छैक जकरा संस्कारमे साम्य छैक और जे अपन स्वतन्त्र अस्तित्वक रक्षा करैत अन्य समाजक संग देशक उत्कर्षकेँ बढ़वय चाहैत अछि। हमरा-लोकनि साधारणतया वर्षमे एक बेर एकत्रित होइत छी, सामाजिक समस्या सब पर अपन-अपन मत प्रगट करैत छी और सामूहिक रूपेँ जे काज करब संभव होइत अछि से करैत छी। उपरसँ त ई अत्यन्त साधारण प्रतीत हयत, परन्तु नीक जकाँ परीक्षा कयलापर बूझि पड़त एहिमे सामाजिक जीवनक प्रतिविम्ब, समाजक, जनसमूहक धारणा, हुनक भावना, हुनक आकांक्षा। जे सामूहिक रूपेँ हमरा लोकनि पर्याप्त कार्य नहि करैत छी तँ ओ परिचायक थीक हमरा लोकनिक संगठनक अभावक, ओहिमे मैथिल महासभाक दोष नहि छैक। दोष छैक समाजक ओहि अंशक जे एकरा शक्ति प्रदान करबामे कुंठित होइत अछि।

... . आइ विभिन्न जाति सभ कहितहुँ-सुनितहुँ अपन-अपन सभा रखने अछि। परन्तु सभक ध्येय यैह होमक चाही जे दोसरासँ मिलि-जुलिकेँ राष्ट्रक हित-साधन करी। ....जातीयताक परित्याग कैने हमरा जनैत धर्मक नाश तऽ हयबे करत संग-संग जीवनमे कतौक प्रकारक विप्लव उपस्थित हैत। हमरा जनैत 'जातीयता नष्ट करू' अर्थहीन नारा थीक।" (मैथिल बन्धु, वर्ष १२, अंक ३, पृ० १४-१५)

दोसर भाषणक अंश १९५४मे आगरामे भेल ४३म अधिवेशनक थिक जाहिमे कहने छथि :—

".... ....यद्यपि धर्मनिरपेक्ष, सम्प्रदाय निरपेक्ष आधुनिक भारतमे जातीय संगठनक प्रति उपेक्षा देखबामे अबैछ ओ बहुतो व्यक्ति मैथिल महासभाक दिस अंगुलि निर्देश करैत होयताह। परंच हम स्पष्ट कय देबय चाहैत छी जे मैथिल महासभाक उद्देश्य राष्ट्रिय भावनाक रोधक नहि, प्रत्युत पूरक अछि। एकर लक्ष्य विशुद्ध सांस्कृतिक छैक। महा-सभाकेँ ई विश्वास छैक जे जहिना व्यक्तिक विकासमे समाजक विकास छैक, प्रान्तक उन्नतिमे राष्ट्रक उन्नति छैक, तहिना जातीय संघटनेँ महाजाति संघटित होइछ। भारतीय महाजातिक विकासमे मैथिल जातिक संस्कार बाधक नहि, साधके सिद्ध होयत।

महासभाक उद्देश्य– पत्रिकासँ ई सहजहि बुझबामे आओत जे एकर कार्यक्षेत्र वर्गीय नहि, सामाजिक थीक, एकर दिशा राजनीतिक नहि, सांस्कृतिक छैक। मिथिलाक गौरव-गरिमा जाहि विद्या, कला, विचार-धारा, भाषा, साहित्य ओ लिपिक कारणें छैक ओकरा पुनः उज्जीवित करब हमरा लोकनिक लक्ष्य अछि। अतएव महासभाक झंडाक नीचाँ हमरा लोकनि मिथिला-मैथिल-मैथिलीक अर्चना करैत छी तँ ओ एकरूपें भारतैक अर्चना थिक –

"सर्वदेव नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति"

......ई युग संघटनक थीक। विघटनक प्रवृत्तिसँ हमरा लोकनि बड़ हानि उठा चुकलहुँ। अतएव संघटनक मार्गकें विस्तृत करब जातीय मङ्गलक कारण बनत। मूल मिथिलाक भौगोलिक सीमासँ आगहुँ जे मैथिल विस्तृत संख्यामे भारतक विभिन्न प्रान्तमे विकीर्ण छथि तनिका महासभाक झंडाक नीचाँ एकत्र करब हमरा लोकनिक कर्त्तव्य होमक चाही।"

(अखिल भारतवर्षीय मैथिल महासभा के ५४वें अधिवेशन का कार्य-विवरण पृ० १२)

एहि युग-परिवर्त्तनक क्रममे सामाजिक परिस्थितिक संग लोकक मानसिकता सेहो बदलैत गेलैक। आचार-विचारमे यदि कहल जाय जे उनटन भऽ गेलैक तँ सेहो अत्युक्ति नहि होयत। एहि बदलल परि-स्थितिमे एहि प्राचीन संस्थाक उद्देश्यकें युगानुकूल बनाय एहिसँ सामाजिक लाभ उठयबाक चेष्टा होयबाक चाही। पुनः स्मरण करा दी जे—

एखनधरि एहिसँ लाभ तथा हानि समाजकें जे भऽ गेलैक से भऽ गेलैक। प्रत्यक्ष हानि तँ ई भेलैक जे नाम एकर राखल गेलैक व्यापक; परिधि राखल गेलैक अति संकीर्ण। मैथिल शब्दक व्युत्पत्ति— 'मिथिलायां भवः मैथिलः' केर अनुसार एहि क्षेत्रमे बसनिहार सब जाति, सब वर्गक हेतु एकर द्वार उन्मुक्त रहबाक चाहैत छलैक, किन्तु एहि सभाक नियमावलीमे एकर अधिकारक जे उल्लेख छैक से निम्नांकित रूपमे—"एहि महासभाकें मैथिल ब्राह्मण तथा कर्णकायस्थक समस्त विषयमध्य प्रतिनिधिरूपें कार्य करबाक अधिकार होएतैक।"

यद्यपि एकर अधिकार क्षेत्रकें विस्तृत करबाक हेतु अन्यान्य वर्ग द्वारा, विशेषरूपें गोप जाति द्वारा आवाज उठाओलो गेल, प्रायः रामे-

श्वर' उपन्यासक रचयिता प० जीबछमिश्र सेहो तकर समर्थन कयने छलथिन (सम्भवतः हुनक छिट-फुट लेख सभक संकलनमे ओहो लेख संकलित छनि) परन्तु सामन्तवादी युग रहलाक कारणें ताहि पर कान-बात नहि कयल गेल। फलतः तकर दुष्परिणाम मिथिलाक लोक-जीवन पर दिनानुदिन अधिकसँ अधिकतरे होइत गेल अछि। 'मैथिल' शब्द केवल ब्राह्मणक हेतु रूढ़ भऽ गेल। मिथिलाक जन-जनक भाषा मैथिली रहितो अन्यान्य वर्ग मैथिलीकेँ मातृभाषा मानबाक हेतु प्रस्तुत नहि अछि। यद्यपि सर्वविदित तथ्य थिक जे अपन परिवार ओ समाजमे मैथिलीएक व्यवहार करैत अछि, एतेक धरि जे अधिसंख्यक निरक्षर व्यक्ति मैथिली छोड़ि आन भाषा बाजिओ ने सकैत अछि, तथापि अपनाकेँ मैथिलीभाषी नहि मानैत अछि। शिक्षाक प्रचार-प्रसारमे मातृभाषाक माध्यम सरलतम मानल गेल अछि। मातृभाषाक रूपमे मैथिलीकेँ मान्यते नहि प्राप्त छैक अपितु पाठ्य-पुस्तको छपि कऽ राखल छैक मुदा समाज एहिसँ लाभान्वित होयबासँ वंचित अछि। एमहर राजनीतिक कारणें मैथिलीक क्षेत्रकेँ खण्डित करबाक उद्देश्यसँ मैथिलीक आंचलिक स्वरूपकेँ नवीन नाम दऽ दऽ भाषान्दोलन ठाढ़ कयल जा रहल अछि।

लोक नव संस्था बनबैत अछि। ई एकगोट प्राचीन संस्था थिक जकरा अपन भूमि छैक, भवन छैक, बैंकमे खाता छैक, यदि किछु नहि छैक तँ से थिकैक उत्साही समर्पित कार्यकर्त्ता। सब मानैत आयल छी जे 'संघे शक्तिः कलौ युगे', एहि प्रजातान्त्रिक युगमे यदि ऊर्जावान् सच्चरित्र ओ समाज-कल्याणक भावनासँ नेतृत्व देनिहार युवकवृन्द आगाँ आबथि आ मृतप्राय एहि संस्थामे पुनः शक्ति संचार करथि तँ एखनहु एहि संस्थाक माध्यमसँ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हेतु बहुत किछु कयल जा सकैत अछि। इत्यलम्।



मुद्रक—ल० ना० मि० वि० प्रेस, दरभंगा ओ०जे०–१२–६६-२०००–१०००